सर्वोत्तम अभ्यास संस्थान

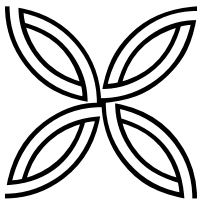

नियम निर्देभा—पुस्तिका

विषय सूची

3 प्रशिक्षकों एवं प्रतिभागियों का परिचय
5 बी. पी. आई. का परिचय – लक्ष्य
9 अन्त–दर्शन
14 सी पी एम योजना के 5 भाग / सी पी एम योजना तालिका
17 कलीसिया संरचना 1
20 कलीसिया संरचना 2
23 कलीसिया संरचना 3
26 गृह कलीसिया प्रारूप
30 पहले दिन की सूचना प्राप्त करना
31 दूसरे दिन का आरम्भ /अवलोकन
32 सर्वोत्तम तरीकों को समझना–एक युक्ति / योजना के बढ़ने के चार तरीके
37 प्रेरितों के काम के गृह कार्य का पुनः अवलोकन – प्रेरितों के काम पर विवरण देना
40 उच्च उपयोगी क्रियाकलाप
44 5 भाग – प्रवेश योजना
46 एस सी भूमिका का अवलोकन
50 कड़वे तथ्यों का सामना
55 दूसरे दिन की सूचना प्राप्त करना
56 तीसरे दिन का अवलोकन
57 हथौड़ा (प्रेरितों के काम में बपतिस्में d¢ rjhd¢)
61 सी पी एम के लिए संसाधन (पश्चिम के लोग)
65 सी पी एम के लिए संसाधन (स्थनीय लोग)
67 सी पी एम योजना के 5 भागः सुसमाचार प्रस्तुतिकरण
70 योजना संयोजको की मूल ;¨X;rka,
75 मौखिक सम्पर्क की दुनिया
78 व्यक्तिगत तैयारी – वह व्यक्ति ftls परमेश्वर उपयोग करता है
82 परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने वाले व्यक्ति की सात विभो ातांए
84 सी पी एम योजना कार्यशाला 1
86 तीसरे दिन की सूचना प्राप्त करना
87 चौथे दिन का अवलोकन
88 एस सी प्रभावपूर्णता के उदाहरणों अध्ययन
90 टी4टी अवलोकन
98 कैमल अवलोकन
102 टी4टी दिन1
109 चौथे दिन की सूचना प्राप्त करना
110 पॉचवें दिन का अवलोकन
111 प्रेरितों के काम में कलीसिया स्थापना के तरीके
114 5 भाग– लधु अवधि शिष्यता
116 स्थानीय लोगों के लिए खोलकर बताने का सत्र
118 एक सी पी एम योजना के 5 भाग– दीर्ध अवधि शिष्यता
121 प्रभावी कलीसिया संरचना का अध्ययन
123 एम ए डब्ल्यु एल
125 सी पी एम योजना कार्यशाला 2
127 पॉचवे दिन की सूचना प्राप्त करना
128 सातवें दिन का अवलोकन

129 सी पी एम के 10 व्यापक प्रकरण अध्ययन
133 छह तरह के लोग
136 पी ओ पी को ढूढ़ने के लिए 0 से 1 योजना
141 टी4टी दिन 2
144 सातवें दिन की सूचना प्राप्त करना
145 आठवें दिन का अवलोकन
146 5 भाग–अगुवाई गुणन
148 विश्वासियों का याजकीय पद एवं बाईबल संबन्धी अधिकार
153 जवाबदेही एवं विवरण देना
157 कठिन प्रश्नः वर्तमान व्यवधानों के कारण लड़खड़ाने से कैसे बचें
158 पौलुस का नमूना (0 से 1 और आगे)
161 एक सी पी एम को रोकना/ऐसे काम जिन्हें करना को रोकना है
163 सी पी एम योजना कार्यशाला 3
165 आठवें दिन की सूचना प्राप्त करना
166 गृह आराधना की सूचना प्राप्त करना
168 लोहे पर लोहा
170 बी पी आई और मूल्यांकन सूचना प्राप्त करना

प्रशिक्षकों एवं प्रतिभागियों का परिचय
बी पी आई 1–1

(45 मिनट)

स्वागत (5 मिनट):
कहें: सर्वोत्तम अभ्यास संस्थान के अगले नौ दिनों के प्रशिक्षण के दौरान (एस सी प्रशिक्षण), हम आपको कलीसिया स्थापना के तरीकों का प्रशिक्षण देंगें जो सारे संसार में सफल साबित हुआ है। हमारी यह आशा है कि इसके द्वारा हम मसीह के लिए बहुत लोगों के पास पहुँच पाएगें और सम्पूर्ण दक्षिणी एशिया में परमेश्वर की महिमा फैला पाएगें।

परिचय (30 मिनट):
प्रशिक्षकों को निश्चय अपना परिचय देना चाहिए। अपना नाम, अपने परिवार के विषय में, कहां आप कार्य करते हैं और अपने अन्य देशों के अनुभव को संक्षिप्त रूप में बताएं।

(एक खेल का उपयोग करें जिससे समूह के सारे सदस्य एक दूसरे परिचित हो जाएं)

उदाहरण: कॉपी और पेन सभी को बांट दें। सभी लोगों को यह लिखने को कहें कि वे पॉच वर्ष पहले कहां थे (परमेश्वर के साथ उनकी संगति में और सेवकाई में, इत्यादि), आज वे कहां हैं, और आज से पॉच वर्ष बाद वे कहां पहुंचना चाहते हैं। तब आप इस समूह के किसी ऐसे व्यक्ति को ढुढें जिसे आप नहीं जानते हैं और उनके साथ नीचे की बातों को बांटें:

–नाम
– आप कहॉ सेवा करते हैं/लक्ष्य समूह
– जो तीन बातें आपने अपने कागज पर लिखा है

पॉच मिनटों के पश्चात, प्रशिक्षक को चाहिए कि वह समूह को वापस बुला ले। **प्रतिभागियों को कैसे एक दूसरे को परिचय देना है उसके लिए प्रशिक्षक को चाहिए कि वह स्वयं इसे कर के दिखाए– एक बार से ज्यादा– ताकि परिचय में कम समय खर्च हो।** *प्रतिभागियों को यहां यह जरूर बता दें कि जब हम आपको कुछ करने को कहेंगें तो हम पहले उसे कर के दिखाएगें कि उसे कैसे करना है। यह भी बता दें कि प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि इससे पहले कि प्रतिभागियों को करने के लिए कहा जाए उन्हें इसे सही तरीके से कर के दिखना होगा।*

★ सत्र के दौरान, प्रतिभागियों के लिए एक कागज का टुकड़ा बढ़ा दें जिसमें वे अपना नाम, जन समूह, और उस जन समूह की अनुमानित जनसंख्या लिख दें।

प्रशिक्षण /सुप्राचलन विज्ञान का संक्षिप्त व्याख्या (10 मिनट):
प्रशिक्षक को चाहिए कि वह श्वेत पट पर एक कागज चिपका दे, जिसमें "प्रतिभागियों से साधारण नियम / अपेक्षाएं" लिखा हो। एक लिखने वाले को सामने बुलाएं।

कहें: "प्रशिक्षण आरम्भ करने से पहले, आईए हम एक समूह के रूप में कुछ बातों का निर्णय करें जो आप प्रत्येक इस प्रशिक्षण के दौरान पालन करेगें।"

प्रतिभागियों से सुझाव मांगे। यदि उन्होने कुछ प्रमुख बातों को नही गिनाया तो उन्हें उस दिशा में सोचने के लिए मार्गदर्शन करें। कुछ प्रमुख नियम इस प्रकार हैं:

- जब हम सम्पूर्ण संसार के प्रकरण अध्ययनों एवं सर्वोत्तम अभ्यासों का अवलोकन करते हैं तो अपने हृदय एवं मन को खुला रखें।

- प्रार्थना के साथ एक 5 भाग वाला सी पी एम योजना विकसित एवं प्रस्तुत करना जो आपके जन समूह एवं क्षेत्र के लिए हो।

- यदि संयोजक से अवकाश नहीं मिला हो तो सभी प्रतिभागियों को अपना गृह कार्य पूरा करना होगा, सभी सत्र में उपस्थित रहना होगा, और गृह कलीसिया में भाग लेना होगा।

- जब प्रतिभागी अपने विचारों को प्रकट करें तो उन्हें अपने प्रशिक्षक एवं अन्य प्रतिभागियों का ख्याल रखना होगा।

- 2 तिमुथियुस 2:2– प्रतिभागी ने जो पढ़ा है उसे जाकर विश्वासयोग्य लोगों को सिखाएगें ताकि वे जाकर अन्य लोगों को सिखाएं।

जब सूचि समाप्त हो जाए, तब इस कागज को दिवाल पर चिपका दें। संयोजक या जो सुप्रचालन विज्ञान के संचालक हैं उन्हें आकर सप्ताह भर के रहने का प्रबन्ध, भोजन, और समय सारिणी को समझाने दें।

★ *यदि इस समय सभी प्रशिक्षकों का परिचय नहीं हो पाया तो जब वे पहली बार पढ़ाने आएं तो वे अपना परिचय दे दें।*

बी पी आई का परिचय – लक्ष्य
बी पी आई 1–2

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागियों को अपने सेवकाई का मूल्यांकन करने के लिए चुनौती दिया जाएगा, ताकि वे यह जान पाएं कि क्या उनकी सेवा पवित्र आत्मा की अगुवाई और वचन के अनुसार चलने के कारण परमेश्वर को महीमा दे पा रही है या नहीं। प्रतिभागियों को उत्साहित किया जाएगा कि वे परमेश्वर को उनकी अगुवाई करने को कहें, जब वे अपने लक्ष्य समूह के बीच कई **सी पी एम** चलाने की योजना बनाते हैं। अब वे परमेश्वर की महिमा को एक अंगुली द्वारा एवं अधिकार के दो पटरी (पवित्र आत्मा और बाईबल) को दो अंगुलियों से द्वारा पहचानें।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- पोस्टर पेपर और स्थाई मार्कर्स
- टेप

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
मरकुस 4:21–33 और यशायाह 28:23–29 को भली भांति पढ़ कर जान लें ताकि बड़े समूह में चर्चा के दौरान आप सहायता कर सकें। **सी पी एम** की परिभाषा का पुनः अवलोकन करें ताकि आप उसे पढ़ाते समय सहज हों।

पोस्टर पेपर पर "सिद्धान्त जो परमेश्वर की महीमा करते हैं" लिखें और उसके नीचे दो खाने बनाएं जिसमें "यशायाह 28:23–29" और "मरकुस 4:21–33" लिखें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):
पूछेंः "क्या आपमें से कोई दक्षिण एशिया के लिए हमारे दर्शन में सहभागी हैं?"
जितने भी भाषा के लोग वहां हों उन्हें अपनी अपनी भाषा में प्रत्येक को हबक्कुक 2:14 पढ़ने को कहें।

कहेंः "हमारा दर्शन है कि जैसे जल समुद्र को ढंका है वैसे ही परमेश्वर की महिमा का ज्ञान दक्षिण एशिया को ढंक लेगा।"
नीचे लिखे बातों को कहने के दौरान अपनी तर्जनी को उठाकर दर्शाएं (हम हाथ के इशारे द्वारा किसी बात को दर्शाने का कार्य शुरू करना चाहते हैं, प्रत्येक बार जब आप परमेश्वर की महिमा कहें तो इस तरह से इशारा करें): "परमेश्वर की महिमा। हमारा दर्शन है परमेश्वर की महिमा– इसी के लिए हम हैं।"

मुख्य सत्र (30 मिनट):
चार या पॉच छोटे समूह (समान भाषा समूह) में विभाजित कर दें। कुछ समूह को मरकुस 4:21–33 और कुछ को यशायाह 28:23–29 पढ़ने को कहें (इन पदों की संख्या को श्वेत पट पर लिख दें ताकि वे उसे जरूरत अनुसार देख सकें)। समूह को 10 मिनट का समय दें ताकि वे इसे पढ़ें और इस बात पर चर्चा करें कि इस भाग का परमेश्वर की महिमा के साथ क्या सम्बंध है। इन अनुच्छेदों में वे कौन से

सिद्धान्त हैं जो परमेश्वर की महिमा करते हैं? (परमेश्वर की महिमा लिखा हुआ नही है परन्तु उन्हें इसे पहचानना होगा)।

10 मिनट के पश्चात, सारे समूहों को वापस साथ मिला दें। पोस्टर कागज को पट पर चिपका दें और एक लिखने वाले को बुलाएं। बड़े समूह से पूछें कि उन्होंने क्या पढ़ा। तब उन्हें यह समझाने को कहें कि कैसे यह परमेश्वर की महिमा से संबंधित है। समूह को इस अनुच्छद से उन सिद्धान्तों को बताने दें जो परमेश्वर की महिमा करती है (हरेक सिद्धान्तों के बगल में पद संख्या जरूर लिखें)।

नीचे दिए कुछ प्रमुख बिन्दु हैं जिन्हें आप तब बताएं जब इन्हें छोड़ दिया गया हो (सम्भव है कि समूह कई सारे बिन्दुओं को बताए)।:

<u>मरकुस 4:21–33</u>

- जब छिपी बातें सामने आती है तो इससे परमेश्वर की महिमा होती है, ज्योति को छुपाना नहीं चाहिए(पद 21)

- जब हम बीज बिखराते और वह उसे उगाता और फसल उपजाता है तो परमेश्वर की महिमा होती है (पद 26–28)

- जब हम देखते हैं कि फसल कटने के लिए बिल्कुल तैयार है इससे परमेश्वर की महिमा होती है (पद 27)

- जब परमेश्वर एक छोटे से कार्य से बड़ा कार्य करता है तो इससे परमेश्वर की महिमा होती है (पद 30–32)

<u>यशायाह 28:23–29</u>

- हम अपने कार्य को किस प्रकार करें, जब हम परमेश्वर को हमें यह सिखाने का मौका देते हैं तो परमेश्वर की महिमा होती है (26,29)

- जब हम अपने कार्य के विभिन्न चरणों (हमेशा केवल जोतना, बोना, काटना ही नहीं परन्तु उसके निर्दशानुसार सही वक्त पर सही कार्य) को पहचानते हैं तो इससे परमेश्वर की महिमा होती है (पद 24,25,28)

- जब हम प्रत्येक कार्य (इसमें भी वह हमारा मार्ग दर्शन करता है) के लिए सही उपकरणों का उपयोग करते हैं तो इससे परमेश्वर की महिमा होती है (27–29)

इस चर्चा के पश्चात, किसी से कहें कि इस कागज को कमरे में टेप के द्वारा कहीं चिपका दें। एक बार फिर अपनी तर्जनी को उठाएं और पूछें "हमारा उददेश्य क्या है (हम क्यों यहां हैं?) परमेश्वर की महिमा।"

चर्चा के दौरान जो लिखा गया है उनका उपयोग करके कटनी के उन सिद्धान्तों को दर्शाएं जिससे परमेश्वर को महिमा मिलती है। परमेश्वर एक अच्छा शिक्षक है और वह हमें बिना मार्गदर्शन के नहीं छोड़ता। परमेश्वर कैसे हमें सिखाता है? अब आप अपने तर्जनी और बड़ी अंगुली को उठाएं और कहें : "दो प्राथमिक तरीके हैं जिनके द्वारा परमेश्वर हमें सिखाता है या हमारे जीवन के लिए दो अधिकार हैं – बाईबल और पवित्र आत्मा। ये हमारे जीवन के लिए अधिकार के दो पटरी हैं।" (हम इस हाथ के इशारे को कलीसिया संराचना के दो अधिकार को दर्शाने के लिए करेंगें, अतः प्रतिभागियों की सहायता करें कि वे इसे पहचानना शुरू कर दें।)

जितनी भाषा के लोग वहां हैं सभी भाषा में किसी को 2 थिस्सलुनीकियों 3:1 पढ़ने को कहें। पौलुस की इच्छा थी की वचन तेजी से फैले और महिमा पाए, जिसका अर्थ है कि यह सम्भव है।

पूछें : "आप में से कितने लोगों ने **सी पी एम** के बारे में सुना है? क्या आप इसकी परिभाषा बता सकते हैं?

अब आदर्श परिभाषा बताएं और उसे विभाजित करें।

सी पी एम पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित प्रक्रिया है जिसमें देशी कलीसियाएं एक जन समूह या जन संख्या भाग में तेजी से बढ़ती है ताकि उस जन समूह का प्रत्येक जन सुसमाचार को सुन ले और प्रतिक्रिया दिखा सके।

जोर दें :

कौन नियंत्रण करता है? क्या हम इसे कर सकते हैं?
देशी का अर्थ क्या होता है?
तेजी से बढ़ने का अर्थ क्या होता है? (जोड़ बनाम गुणा बताएं)

कहें: "साधारण परिभाषा है कलीसिया द्वारा कलीसिया स्थापना (हाथ द्वारा एक त्रिकोण बनाएं और इसे दर्शाने के लिए इसे ऊपर नीचे करें)।"

प्रशिक्षक **सी पी एम** के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभवों को बांटें या फिर उन्हें यह बताएं कि वे क्यों विश्वास करते हैं कि यह लोगों को सुसमाचार सुनाने के लिए सबसे तेज तरीका है।

कहें : "अपने वर्तमान सेवकाई के विषय में सोचें।" अपने तर्जनी अंगुली को ऊपर उठाकर पूछें, "क्या आपका कार्य (1) पवित्र शास्त्र और (2) पवित्र आत्मा के अनुसार है?"

पूछें : "जो परिणाम आप देख रहें हैं, क्या आप उससे संतुष्ट हैं? क्या आप अपने लक्ष्य समूह के द्वारा इतने कलीसियाओं को स्थापित होते हुए देख पा रहें हैं कि परमेश्वर की महिमा फैले?"

कहें: "यदि ऐसा नहीं है तो क्या परिवर्तन आवश्यक है।"

सारांश (5 मिनट):

पूछें: "हमारा उददेश्य क्या है (तर्जनी अंगुली को ऊपर उठाएं)?"

पूछें: "हमारे अधिकार के दो पटरी क्या हैं (तर्जनी और बड़ी अंगुली को ऊपर उठाएं)?"

कहें: "यदि हम चाहते हैं कि पवित्र शास्त्र और पवित्र आत्मा के अनुसार परमेश्वर की महिमा हमारे जन समूह द्वारा फैले तो, सबसे तेज तरीका क्या है?"

कहें: "हम **सी पी एम** की बात कर रहें हैं क्योंकि जैसे लोग तेजी से मसीह के पास आएं, तो परमेश्वर की महिमा एक जन समूह पर वैसे ही भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भरपूर है। हम इसलिए भी **सी पी एम** की बात करते हैं यह नए नियम एवं यीशु की शिक्षा पर आधारित है।"

कहें: "अगले कुछ दिनों में, हम बाईबल एवं **सी पी एम** प्रकरणों के तरीकों का अध्ययन करेंगें जिन्हें "सर्वोत्तम तरीकों" के रूप में जाना जाता है। इस प्रशिक्षण के दौरान, हमारी यह आशा और प्रार्थना है कि इन सत्रों के द्वारा परमेश्वर आपको अपने लक्ष्य समूह के लिए एक **सी पी एम** विकसित करने में सहायता करें।"

अन्त–दर्शन
बी पी आई 1–3

(1धण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में जब प्रतिभागी अपने जन समूह तक पहुॅचने के लिए योजना विकसित करेंगें तो अन्त दर्शन की बात और अन्त को मन में रखने की महत्ता पर भी बात करेंगें। वे 2पतरस 3:9 को चुटकी से समझना भी शुरू करेगें।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेतपट और मार्कर्स
- गेंद बनाने के लिए समाचार पत्र
- तीन साफ बाल्टी या कूड़ादान
- **एस सी** से चार उदाहरण अन्त दर्शन (प्रत्येक के दो प्रतियां रखें, कुल आठ)

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करें):
खेल के लिए आपके पास थैले में 20 गेंदें और तीन कुड़ादान या बाल्टी होनी चाहिए, जिन प्रत्येक के नीचे 0,15,और 30 अंक चिपका हुआ हो।

उदाहरण अन्त दर्शन की प्रतिलिपियॉ बना लें (कुल आठ, एक को कई समूहों के साथ इस्तेमाल कर सकते हैं)।

प्रवेश स्तरों को जॉचे (10 मिनट):
पूछें: "हमारा उददेश्य क्या है? (एक अंगुली ऊपर उठाएं) कहें: "परमेश्वर की महिमा।"

पूछें: "किसी जन समूह या जन संख्या में परमेश्वर की महिमा फैलने का सबसे तेज तरीका क्या है? (त्रिकोण वाले हाथ के इशारे का उपयोग करें और इसे ऊपर नीचे करें) **सी पी एम**। परन्तु हम **सी पी एम** तक कैसे पहुॅचेगें?

उदाहरण के लिए खेलः

इसके लिए दो प्रशिक्षक चाहिए– एक प्रशिक्षक मार्गदर्शन के लिए और दूसरा उसे कर के दिखाने और सहायता करने के लिए।

कहें: हम एक खेल खेलने जा रहें हैं और इसके लिए हमें तीन स्वयं सेवक चाहिए। लक्ष्य है कि इस कूड़ेदान में 15 सेकेण्ड के अन्दर जितनी हो सके गेंद डालें।

किसी अन्य प्रशिक्षक को एक विषेश स्थान पर खड़े होकर मध्य में रखे "0" संख्या वाले कूड़ेदान में गेंद फेंकते हुए दिखाने दें।

तीनों स्वयंसेवकों को आगे आने को कहें। सभी गेंदों को थैले में जमा कर लें। कहें "शुरू" और जब वह फेंकता जाए तो उसका समय देखें। जब स्वयंसेवक ऐसा कर चुके, तब प्रशिक्षक कूड़ेदान से सभी गेंदों को जमा कर ले। नीचे लिखे अंको को दिखाकर उसका स्कोर बताएं– इसे बढ़ाकर बताना चाहिए ताकि अगले दोनों प्रतिभागी नीचे चिपकाए अंक को देखकर उददेश्य के साथ निशाना लगाएं।

तब अगले स्वयंसेवक को यह करने को कहें। उसके स्कोर को भी जोड़े।

इससे पहले कि अन्तिम स्वयंसेवक गेंद फेंके, उसे यह स्मरण दिलाएं कि जो एकमात्र निर्देश दिया गया था वह यह है कि जितनी गेंदें हो सके डब्बे में डालें। ज्यादातर इस बात को महसूस करेंगें कि वे समूचे थैले की गेंदे को 30 नम्बर लिखे कूड़ेदान में डाल सकते हैं। यदि वे इसे नहीं समते तो समय पूरा होने से पहले इसे बता दें।

सभी को धन्यवाद दें और उन्हें बैठने को कहें।

प्रतिभागियों से पूछें : "कैसे यह खेल अन्त–दर्शन से सम्बंधित है?"

सभी लोगों के उत्तर सुनने के बाद, निम्नलिखित बातों को बताएं– इसे अपने पूर्व के कार्य से जोड़ने की कोशिश करें साथ ही साथ उच्च / निम्न मूल्य के क्रियाओं के साथ भीः

"जब मैं पहली बार कलीसिया स्थापित करने की कोशिश कर रहा था तो मुझे यह नहीं पता था कि कैसे शुरूआत की जाए, अतः मैनें वही करना आरम्भ किया जो अन्य लोग कर रहे थे। उसी प्रकार खेल में भी, हमारा पहला खिलाड़ी भी उसी उदाहरण को दोहरा रहा था जो उसने देखा, परन्तु यह सर्वोत्तम उदाहरण नहीं था। यह बुरा नहीं था, केवल उच्च मूल्य का नहीं था।

जब एक बार मैं उच्च मूल्य की बात जान गया, मैंने उन कार्यों को करना शुरू कर दिया। हमारे दूसरे खिलाड़ी के समान। बहुत बार मैंने सर्वोत्तम कार्य करने के बजाए उन कामों को किया जो अन्य कर रहे थे। जैसे ही मैने सीखा, मेरी यह जिम्मेवारी हो गयी कि मैं उन कार्यों को करूँ जिससे परमेश्वर आनन्दित हो और जिसका मूल्य महान हो।

मुख्य सत्र (30 मिनट) :

कहें : "जब हम अन्त–दर्शन और अपने जन समूह के मध्य क्या होगा के विषय में सोचते हैं तो हमें सर्वप्रथम परमेश्वर के अन्त–दर्शन को देखना होगा। समूह को चार या पॉच लोगों के समूहों में बॉट दें (समान भाषा समूह)। नीचे दिए अनुच्छेदों को पढ़ें और चर्चा करें : उत्पत्ति 3:15, 12:1–3, निर्गमन 19:5–6, यशायाह 54:2–3, 60:18–20, मत्ती 28:18–20, मरकुस 16:15, लूका 24:46–49, प्रेरितों के काम 1:8, प्रकाशितवाक्य 5:9, 7:9।"

कहें: "देश" शब्द को "मातृभाषा" के समान समझें। इसे पढ़ने में 8 से 10 मिनट का समय लें और इस बात की चर्चा करें कि कैसे इसका सम्बंध आपके कार्य से है?"

सभी को साथ मिलाकर एक बड़े समूह के रूप में इस पर संक्षिप्त चर्चा करें।

कहें: "परमेश्वर समूचे इतिहास को अपने अन्त–दर्शन पाने के लिए चला रहा है, और हम इसके प्रति आश्वस्त रहें कि एक दिन सभी जाति, देश, और भाषा उसके सिंहासन के समक्ष उपस्थित होंगे। इसी ओर सब कुछ बढ़ रहा है।"

सभी उपस्थित भाषा के लोगों को 2 पतरस 3:9 पढ़ने को कहें। पूछें: "यह अनुच्छेद परमेश्वर की इच्छा के विषय में क्या कहती है?"

अपनी अंगुलियों से 2.5 सेकेण्ड में एक बार की गति से चुटकी बजाना शुरू करें। जब यह गति आ जाए तब दूसरों को अपने साथ ऐसा करने को कहें (आप इस आवाज को 2पतरस 3:9 के साथ जोड़ने की कोशिश कर रहें हैं)। जब एक बार सभी लोग चुटकी बजाने लगे, तब यह समझाएं कि दक्षिण एशिया में प्रति 2.5 सेकेण्ड में एक व्यक्ति मरता है।

कहें: "यदि परमेश्वर किसी को भी नाश होते नहीं देखना चाहता तो हमें भरपूर प्रयास करना चाहिए की जितनी जल्दी हो सके सभी लोग सुसमाचार सुन ले क्योंकि प्रत्येक बार जब आप चुटकी की आवाज सुनते हैं तो यह जाने कि कोई जन अनन्तकाल में प्रवेश कर जाता है।"

पूछें: "आपका लक्ष्य क्या है? आपके लक्ष्य में कितने लोग हैं? हमें सभी लोगों तक यीशु मसीह का सुसमाचार पहुँचाने के लिए कितनी कलीसियाओं की आवश्यकता है? (मैंने यह नहीं पूछा कि आप कितनी कलीसिया स्थापित कर पाएगें– आप अपनी शक्ति से बहुत ज्यादा स्थापित नहीं कर पाएगें)"

1प्रतिशत अभ्यास विकल्प (यदि आप के पास समय कम हो तो इसे काट दें):

1. समय से पहले आप कमरे के लोगों में से एक व्यक्ति को चुन लें जिसके **यु पी जी**/शहर में 5 लाख से 20 लाख की आबादी है। उन्हें उस **यु पी जी**/शहर की कुल आबादी बताने दें जिसे पाने के लिए वे प्रयास कर रहें हैं। उसे पट पर लिख लें।

2. उस जनसंख्या का 1 प्रतिशत क्या है? उसे पट पर लिख लें।

3. उस राज्य में कलीसियाओं में औसत उपस्थिति क्या है (अन्य **पी जी** का)? उसे भी लिख लें।

4. 1 प्रतिशत के अंक को औसत कलीसिया के आकार से विभाजित कर दिजिए। यह आपको कलीसियाओं का योग बताएगा जो आपको 1 प्रतिशत जनसंख्या के लिए चाहिए। (यदि **यु पी जी** 3 लाख से ज्यादा है तो यह निश्चित आपको चकित कर देगा)। पट पर इसे लिख लें।

5. पूछें: "क्या आपका यह लक्ष्य है कि आपके लक्ष्य समूह के केवल 1 प्रतिशत कलीसिया में शामिल हों ?" (निश्चित्त तौर पर वे "नहीं" कहेंगें)। पूछें, "आपका लक्ष्य क्या होगा ?" (आपको उन्हें शायद बताना पड़े: 10 प्रतिशत या 20 प्रतिशत?) एक बार जब उन्होंने प्रतिशत बता दी, तब जनसंख्या के उस प्रतिशत को औसत कलीसिया के आकार से विभाजित कर दें। यह उन्हें बता देगा कि उनके लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कितनी कलीसियाओं की आवश्यकता होगी।

यदि यह अभी भी साफ तौर पर नहीं समझा जा सका (और यदि समय हो तो) तो आप पूछ सकते हैं, "ये कलीसियाएं गृह कलीसिया होंगी या ऐसी कलीसिया जहां

विशेष चर्च भवन पाया जाता है? यदि उन्हें एक चर्च भवन की आवश्यकता है तो एक सबसे साधारण और कम कीमत के भवन बनाने में कितना खर्च आएगा? इस योग को लेकर जितनी कलीसिया की आवश्यक्ता है उससे गुणा कर दें– यह बहुत महंगा होगा!"

कहें: "**मेरे** लोगों के मध्य खोए हुओं की प्रतिशत बदलने के लिए हमारे पास एक गृह कलीसिया **सी पी एम** होने की **आवश्यक्ता** है।"

उदाहरण:
उत्तर भारत के **"क ख ग"** लोग
कुल जनसंख्या: 550,000
जनसंख्या का 1 प्रतिशत: 5,500

राज्य के लिए औसत कलीसिया का आकार (अभी): 35

5,500 को 35 से विभाजित – 157 कलीसियाएं (**गृह** कलीसियाएं)

एस सी का लक्ष्य है कि **"क ख ग"** के 25 प्रतिशत निरंतर कलीसियाओं में मिलें। इसका अर्थ है 35 के औसत आकार वाले 3928 कलीसियाओं में 137,500 लोग!

यदि कोई प्रत्येक चर्च भवन के लिए 1 लाख रूपया (2500 डालर) दान उठाता है तो इतनी सारी कलीसियाओं के लिए लगभग 40 करोड़ रूपया (9800000 डालर) की अवश्यक्ता होगी।

सारांश (15 मिनट):

श्वेत पट पर लिखें: लक्ष्य, जनसंख्या, और जितनी कलीसियाओं की आवश्यक्ता है उसकी संख्या। अपने लोगों एवं अन्त–दर्शन के बारे बताएं।

चार–चार के समूह में लोगों को बॉट दें(यदि **एस सी** देशी सहयोगियों को लाया है तो उन्हें समान समूहों में रखें।) सभी समूहों को अन्त–दर्शन का उदाहरण दे दें। प्रत्येक समूहों को अपने अन्त–दर्शन के लिए लक्ष्य, जनसंख्या और आवश्यक कलीसिया की संख्या के लिए दो मिनट का समय दें। एक या दो समूह को उसे बताने को कहें।

प्रतिभागियों / समूहों को अपने अन्त– दर्शन पर कार्य करने के लिए पॉच मिनट का समय दें। तब उन्हें छोटे समूह में उसे बताने दें और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने दें।

एक बार फिर से उन्हें यह समझाएं कि यदि हमें यह सुनिश्चित करना है कि हमारे समूह के सभी लोग सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया करें तो यह हमारे कुछ करने पर निर्भर नहीं परन्तु यह कि इसके लिए क्या आवश्यक है।

समूह कार्य के लिए अन्त–दर्शन के उदाहरणः

1. कलीसिया स्थापना आन्दोलन करना ताकि सभी 300000 एन लोग एक जन्माने वाली गृह कलीसिया के निकट हों, जो सुसमाचार को एन एशिया और संसार में पहुँचा रही है। आवश्यक होगा कि प्रत्येक गॉव में कम से कम एक कलीसिया हो (16,000)।

2. एस शहर के बीस लाख मुस्लिमों के बीच कई कलीसिया स्थापना आन्दोलन के द्वारा परमेश्वर की महिमा करना ताकि हरेक मुस्लिम इलाकों में एक जन्माने वाली गृह कलीसिया हो ताकि प्रत्येक मुसलमान सुसमाचार समझ पाए और एक गृह कलीसिया में भाग ले। शहर के सभी मुस्लिम पंथ एवं समूहों के बीच अनुपातिक रूप से 20,000 गृह कलीसिया की आवश्यकता होगी।

3. एक्स एफ जनपद के लिए हमारा दर्शन है कि एक ऐसी **सी पी एम** बनाना जिसका नेतृत्व विश्वासी, अवैतनिक और स्थानीय मसीही के द्वारा हो। ऐसा करने से हम उस जनपद के तमाम लोगों को सुसमाचार सुनने का अवसर और यीशु को स्वीकार करने का अवसर देगें। आरम्भ से ही इस आन्दोलन का **डी एन ए** सुसमाचार प्रचार होना चाहिए जिससे नई कलीसियांए बनाई जाए। हमारा अन्त–दर्शन है कि सन् 2015 तक 200,000 नए विश्वासी मिलकर आराधना करें और 13,000 नई गृह कलीसियाओं में प्रशिक्षण चले।

4. एक **वाई** राज्य के सभी उपभाषा, सभी गॉव (45,000 गॉव) के सभी वाई यीशु को जान जाए या उसका नाम सुन ले। **वाई** राज्य (देश का सबसे भ्रष्ट एवं गरीब राज्य) का एक अन्धकार की जगह में से एक ज्योति की जगह बनने का अभूतपूर्व परिवर्तन। इस परिवर्तन में वाई का योगदान महत्वपूर्ण है। **वाई** लोग जन समूह सीमाओं को लांधकर अन्त में संपूर्ण **वाई** राज्य में, तब समूचे उत्तर भारत में, और तब पूर्व में थाइलैंड, चीन, जापान तक और पश्चिम में पाकिस्तान और मध्य पूर्व तक सुसमाचार फैला देगें।

सी पी एम योजना के 5 भाग / सी पी एम योजना तालिका
बी पी आई 1–4

(1घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी **सी पी एम** योजना के पॉच भागों को सीखेंगें। वे सुसमाचारों और प्रेरितों के काम में पाए जाने वाले पॉच भागों को पहचानेगें और अपनी स्वयं की पॉच–भागों की योजना के विषय में सोचना शुरू करेगें। अपनी 5 भाग **सी पी एम** योजना लिखने के लिए वे कुछ ढांचो को भी देखेगें।

आवश्यक वस्तुएंः
- एक भाग के साथ पोस्टर पेपर और पवित्र शास्त्र के पद
- **सी पी एम** योजना उदाहरण के साथ पोस्टर पेपर
- स्थाई रूप से लिखने वाले मार्कर्स
- टेप

प्रशिक्षक की तैयारी (इसे सत्र से पहले कर लें):
पॉच पोस्टर पेपर तैयार करें जिसकी एक तरफ पद संख्या लिखी हुई हो :

जन्म देने वाली प्रवेश नीति : लूका 10, प्रेरितों के काम 13:14–15, प्रेरितों के काम 14:1–3, प्रेरितों के काम 17:1–3

जन्म देने वाली सुसमाचार की प्रस्तुतिः प्रेरितों के काम 13:16–41, प्रेरितों के काम 17:22–31, प्रेरितों के काम 22:1–21

जन्म देने वाली शिष्यता (लघु अवधि/ दीर्घ अवधि): 2 तीमु 2:2, मत्ती 28:18–20, प्रेरितों के काम 11:25–26, प्रेरितों के काम 14:21–22, प्रेरितों के काम 15:36, प्रेरितों के काम 16:13–14

जन्म देने वाली कलीसिया की रचनाः प्रेरितों के काम 1:1–2, 13–14, प्रेरितों के काम 2:42–47, प्रेरितों के काम 5:42, प्रेरितों के काम 11:19–26, प्रेरितों के काम 14:23

जन्म देने वाले नेतृत्व का विकासः प्रेरितों के काम 12:25, प्रेरितों के काम 16:3–5, 2 तीमु 2:2

पोस्टर पेपर (चार्ट, सूची, मानचित्र) पर दो या तीन **सी पी एम** योजना आरूप तैयार करें।

प्रवेश स्तरों की जॉच करें (10 मिनट):

पूछें: "क्या आप लोगों में से कोई भी **सी पी एम** योजना के 5 भागों को जानता है?" कहें: "आप में से कई लोगों ने इसे तैयारी के संसाधनों में पढ़ा होगा।"

कहें: "यदि हॉ, तो मुझे बताएं कि आप को क्या स्मरण है– क्या आप पॉचों भाग के विषय में बता सकते हैं?" (बोर्ड पर इसे लिख लें–
"जन्म देने वाला" लिखना न भूलें।)

कहें: "जब लोग उन नीतियों का अध्ययन कर रहे थे जिनके फलस्वरूप **सी पी एम** का उदय हुआ तो उन्होंने पाया कि इन नीतियों में पॉच बातें पाई जाती है जहां तक सुसमाचार प्रचार, शिष्यता, और कलीसिया स्थापना का सवाल है।

प्रत्येक योजना में सम्मिलित था:

1. जन्म देने वाली प्रवेश नीति : (आप किस प्रकार लोगों से आत्मिक बातों के विषय में बात करना शुरू करेंगें या नए क्षेत्रों में सुसमाचार कैसे ले जाएगें)

2.जन्म देने वाली सुसमाचार की प्रस्तुति: (सुसमाचार कैसे प्रस्तुत किया जाएगा– उदाहरण, कहानी, रोमी मार्ग इत्यादि द्वारा)

3.जन्म देने वाली शिष्यता (दो भाग):
   ए) जन्म देने वाली शुरूआत/ लघु अवधि की शिष्यता (6–8 पाठ या 4–8 पाठों की 2–3 श्रंखला)
   ब) जन्म देने वाली दीर्घ अवधि की शिष्यता (1 से 3 वर्ष लग सकता है)

4. जन्म देने वाली कलीसिया की रचना: (समूहों को कलीसिया बनने के लिए शिक्षा देना और सहायता करना)

5.जन्म देने वाले नेतृत्व की प्रशिक्षण शैली : (न. 4 के कुछ भाग हो सकते हैं परन्तु निश्चित तौर पर कुछ अन्य बातों के साथ ताकि जिन्हें प्रशिक्षण प्राप्त हो वे जानें कि न.1 से 5 में दूसरों को प्रशिक्षित करने का तंत्र किस प्रकार कार्य करता है।)
सभी घटकों को जन्म देने वाला होना ही है!
पूछें: "क्या कोई 222 सिद्धांत जानता है? यह किस प्रकार 5 भाग की योजना से संबंधित है?"

किसी को 2तीमु 2:2 पढ़ने को कहें। पूछें: "कितनी पीढ़ियां यहां पाई जाती है?" प्रतिभागियों को आगे आने को कहें और अलग अलग लोगों को तीमुथियुस, पौलुस, विश्वासी लोगों और अन्य लोग का चरित्र देकर उन्हें इस बात को दर्शाने को कहें। कहें: "**सी पी एम** में 222 का सिद्धान्त प्रमुख है।"

मुख्य सत्र (45 मिनट):

सुसमाचारों एवं प्ररितो के काम में 5 भागों को खोजें (कुल15 मिनट):

अब जब वे इन पॉचों भागों से परिचित हो गए हैं तो उन्हें पॉच समूहों में विभाजित कर दें। प्रत्येक समूह को एक पोस्टर दें जिस पर पवित्र शास्त्र लिखा हुआ हो। प्रत्येक

समूह को पवित्र शास्त्र पढ़कर यह पता लगाने दें कि कौन से तरीके का उपयोग हुआ है।

10 मिनट के पश्चात, प्रशिक्षक श्वेत पट के पास जाएगा और प्रत्येक भाग के लिए बाईबल से उदाहरण पूछेगा। (किसी भी समूह को यह इजाजत न दें कि केवल एक ही व्यक्ति उत्तर दे–लोगों को उत्तर जोर से कहने का अवसर दें)। तब सभी समूहों के पोस्टरों को टांग दें।

सी पी एम *योजना तालिका में प्रवेश (30 मिनट)*

सी पी एम तालिका को श्वेतपट पर चिपका दें। प्रत्येक भाग के विषय में बताएं और यह भी बताएं कि किस प्रकार वे अगुवाई में वृद्धि कर सकते हैं।

मानचित्र को दिखाकर यह समझाएं कि कैसे यह आपके 5 भागों के योजना के लघु अवधि लक्ष्यों में आपकी सहायता कर सकता है।

अन्त में एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करें जिसने पॉचों भाग एवं उसके नीचे लक्ष्यों को लिखा है।

सारांश (5 मिनट):

कहें: "यह 5 भागों वाला **सी पी एम** योजना आपके मुख्य योजना का नींव है जिसे आप इस सप्ताह बनाएगें। जैसे जैसे हम बढ़गें, आप अपनी योजना के लिए लिखे गए एक या दो बातों को चुनेंगें। इसे साधारण रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि लक्ष्य जन्म देने का है।

कलीसिया निर्माण 1
बी पी आई 1–5

(45 मिनट)

विषय एवं लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी "स्वस्थ कलीसिया के लिए मार्गदर्शक" पुस्तिका के भागों को सीखना शुरू करेंगें। वे **बी पी आई** प्रशिक्षण के लिए गृह कलीसिया समूहों में विभाजित होंगी। पदों से संबंधित परिच्छेदों के अध्ययन के बाद वे इन गृह कलीसियाओं के लिए अगुवे को चुनेगें।

आवश्यक वस्तुएंः
- अध्ययन परिच्छेद लिखा पोस्टर पेपर
- श्वेतपट और मार्कर्स
- टेप

प्रशिक्षक की तैयारी (इसे सत्र से पहले कर लें):
गृह कलीसिया समूह बना लें। आप चाहें तो समान लक्ष्य वाले लोगों को एक साथ रखें क्योंकि हो सकता है कि प्रशिक्षण के दौरान एक कलीसिया के रूप में संगठित हो जाएं। यह अच्छा होगा कि समान भाषा के लोगों को साथ रखें।

निम्नलिखित को एक पोस्टर पेपर पर लिख लेंः

एक पवित्र दर्शनः परमेश्वर की महिमा करना या आपके अन्दर मसीह की महिमा की आशा।
2कुरिन्थियों 4:1–6, 1कुरिन्थियों 10:31
हबक्कूक 2:14

दो अधिकारः
1. परमेश्वर का वचन– कुलुस्सियों 3:16–17, यूहन्ना 8:31–32
2. पवित्र आत्मा द्वारा मसीह की प्रभुता – इफिसियों 5:18–20, यूहन्ना 15:26–27, 16:7–15

3 पद / अगुवेः
1. प्राचीन, पास्टर, देखरेख करने वाला, बिशप– 1 तिमुथियुस 3:1–7
2. डीकन– प्रेरितों के काम 6, अपने मध्य से चुनें, 1 तिमुथियुस 3:8–13
3. खजांची– यीशु के शिष्यों का उदाहरण, यूहन्ना 13:29

प्रवेश स्तरों को जाँचे (5 मिनट):
प्रस्तावना के समान ही तर्जनी अंगुली को ऊपर उठाएं। पूछें: "कलीसिया का दर्शन क्या है?" (परमेश्वर की महिमा फैलाना) तर्जनी एवं मध्य अंगुली को ऊपर उठाएं। पूछें: "कलीसिया के दो अधिकार क्या हैं?" (परमेश्वर का वचन और पवित्र आत्मा)

पूछें: "कलीसिया की सबसे बड़ी कमजोरी क्या है?"

कहें: "मेरे विचार से, कलीसिया की सबसे बड़ी कमजोरी है, परमेश्वर के सामर्थ को नहीं दर्शाना। दुर्भाग्यवश, संसार जो अधिकतर कलीसिया में देखता है उसके कारण यीशु मसीह से दूर चला जाता है। वर्तमान में नामधारी मसीहियत सुसमाचार के लिए सबसे बड़ी रूकावट है। ऐसी बहुत सी कलीसियाएं हैं जो परमेश्वर की महिमा नहीं ढूंढ रही है।"

पूछें: "हम क्यों अपने दो अधिकारों (बाईबल,पवित्र आत्मा) पर जोर देते हैं?"

कहें: "बहुत सी कलीसियाएं बाईबल एवं पवित्र आत्मा के बजाए अपनी प्रथाओं पर अधिक जोर देतीं हैं।"

कहें: "**सी पी एम** को समझने के लिए, हमें यह जानना आवश्यक है कि हमने क्या शुरू **नहीं** कर रहें हैं और हमें क्या शुरू करना चाहिए।"

कहें: "इसे हम अगले आठ दिनों तक अभ्यास करते रहेगें। प्रत्येक सुबह आप "गृह कलीसिया" में मिलेगें। यह प्रायोगिक अभ्यास आपको यह बताएगा कि जब आप वापस जाएं तो आपको क्या करना होगा। "स्वस्थ कलीसिया की मार्गदर्शिका" आपको ऐसी कलीसिया स्थापित करने में मदद करेगी जिससे परमेश्वर की महिमा हो।"

मुख्य सत्र (30 मिनट):

समूह को गृह कलीसिया में विभाजित कर दें (छह से आठ लोगों का समूह)। यह सुनिश्चित करें कि वे जानें कि सम्पूर्ण प्रशिक्षण के दौरान यही उनका गृह कलीसिया समूह होगा।

पोस्टर पेपर को इस तरह चिपका दें कि सभी उसे देख सके। प्रत्येक भाग के समूहों को 10 मिनट तक परिच्छेदों को देखने को कहें। पदों के लिए, उन्हें गुणों को लिखने कहें।

जबकि वे समूह में हैं, निम्नलिखित को श्वेत पट पर लिखें:

चरित्र	निपुणता या योग्यता	आत्मिक दान	औपचारिक शिक्षा
1.			
2.			
3.			
4.			

समूहों को वापस बुलाएं और दर्शन एवं दोनों अधिकारों का पुनः अवलोकन करें।

चार्ट को फिर से देखें और प्रतिभागियों को अगुवों के लिए परिच्छेद को देखने को कहें। किसी से कहें कि वह आकर उन बातों को लिखे जो बाईबल के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र में एक अगुवे के अन्दर होनी चाहिए।

सारांश (10 मिनट):

कहें: "अब जबकि हम कलीसिया में पाए जाने वाले तीन पदों का अध्ययन कर चुके हैं, तो आईए हम पुनः गृह कलीसिया समूहों में हो जाएं और पॉच मिनट में एक प्राचीन, डीकन और खजांची चुनें (जब भी पैसा गिना जाए तो वहां दो जन होने चाहिए)।"

फिर से साथ मिल जाएं और तब प्रत्येक समूह को यह बताने का अवसर दें कि उन्होंने किसे चुना और क्यों। (पास्टर या प्राचीन का नाम लिख लें। इन्हीं लोगों को आपको उत्तरदायी बनाना होगा ताकि इस सप्ताह समूह मिले और एक कलीसिया के उददेश्यों को पूरा करे।)

कलीसिया निर्माण 2
बी पी आई 1–6

(45 मिनट)

विषय एवं लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी एक स्वस्थ कलीसिया की परिपक्वता के लिए चार चिन्हों को सीखेगें, साथ ही साथ जिस कलीसिया के साथ वे अभी हैं उसकी परिपक्वता का मूल्यांकन भी करेगें।

आवश्यक वस्तुएं:
- अध्ययन परिच्छेद लिखा पोस्टर पेपर
- श्वेतपट और मार्कर्स
- टेप

प्रशिक्षक की तैयारी (इसे सत्र से पहले कर लें):
पोस्टर पेपर के चार पन्ने लेकर उनमें "4–स्वयं" में से एक को पवित्र शास्त्र के पद के साथ लिख लें, जिसे समूह को पढ़ना है। तब लिखें "परिभाषा", "यह कैसा दिखता है" और "यदि यह अनुपस्थित है": उदाहरण के लिए:

स्वयं पोषित

प्रेरितों के काम 11:27–30, 2कुरि. 1:1–5

परिभाषाः

यह कैसा दिखता हैः

यदि यह अनुपस्थित हैः

अपने अनुवादक के साथ पहले ही तैयारी करें कि किस प्रकार "4 स्वयं" को साधारण एवं सटीकता से कहें।

प्रवेश स्तरों को जॉचे(5 मिनट):
सी पी एम की परिभाषा का पुर्न अवलोकन करें साथ ही **सी पी एम** योजना के 5 भागों का भी।

कहें: "पिछले सत्र में हमने कलीसिया निर्माण के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों को देखा था। देखिए क्या आप इन्हें याद रखें हैं या नहीं: यह क्या है? एक अंगुली को ऊपर उठाएं (एक दर्शन–परमेश्वर की महिमा) दो अंगुलियों को ऊपर उठाएं (अधिकार की दो पटरियां–बाईबल एवं पवित्र आत्मा) तीन अंगुलियों को ऊपर उठाएं (तीन पद–प्राचीन, डीकन, खजांची)।

पूछें: "हम क्यों पहले ही दिन **सी पी एम** योजना (कलीसिया निर्माण) के चौथे भाग से शुरूआत कर रहें हैं?"

कहें: "ऐसा हम इसलिए कर रहें हैं क्योंकि लक्ष्य यही है! हम आरम्भ में ही कलीसिया निर्माण की बात करना चाहते हैं क्योंकि यहीं हमें पहुंचना है–यह हमारा अन्त दर्शन है। हम गृह कलीसिया का अभ्यास करते हैं क्योंकि *हम घर जाकर जन्माने वाली कलीसिया बनाना चाहते हैं।*'

बोर्ड पर "पाउच –POUCH" ऊपर से नीचे के क्रम में लिखें। पूछें: "क्या किसी को पता है कि यह आदिवर्णिक शब्द क्या दर्शाता है? यह हमें **सी पी एम** में पाए जाने वाली प्रारूपिक कलीसिया के प्रकार को स्मरण दिलाने में सहायक है। क्या आपको पता है कि प्रत्येक अक्षर क्या दर्शाता है?"

- भाग लेने वाला बाईबल अध्ययन और आराधना
- सफलता के चिन्ह स्वरूप आज्ञाकारिता
- अवैतनिक बहुसंख्यक अगुवे
- 20 या उससे कम सदस्यों की कोशिकाएं
- मिलने के स्थान के लिए घर

कहें: "**सी पी एम** में कलीसियाएं प्रारूपिक तौर से "पाउच –POUCH" आदर्श के समान है। **सी पी एम** का पालन करने वाले कलीसिया बनाने के लिए कई तरीकों में से इस "पाउच –POUCH" तरीके का इस्तेमाल करते हैं। परन्तु हम कैसे जान पाएंगें कि जो कलीसियाएं बनाई गई हैं वे परिपक्व है?"

मुख्य सत्र (25 मिनट):

(चार अंगुलियां ऊपर उठाएं)। कहें: "इस सत्र में, हम कलीसिया की परिपक्वता के चार चिन्हों के बारे में बात करेंगें। इन चिन्हों के रहने या नहीं रहने के द्वारा हम जान पाएगें कि कलीसिया कितनी परिपक्व है। परिपक्वता के चार चिन्ह हमें वह मानक प्रदान करते हैं जिसके द्वारा हम परिपक्वता माप सकते हैं।"

चार समूह में विभाजित हो जाएं। प्रत्येक समूह को एक पोस्टर पेपर दें जिस पर परिपक्वता के चार में से एक चिन्ह लिखे हों। सभी समूह को पवित्र शास्त्र पढ़कर "स्वयं" की एक परिभाषा लिखने को कहें। उन्हें उनके परिपक्वता के चिन्ह के विषय में जानकारियों को भरने को कहें– परिभाषा बताएं, अगर यह चिन्ह मौजूद हो तो कलीसिया कैसा दिखेगा, और यदि यह चिन्ह नहीं पाया जाए तो कलीसिया किस प्रकार की होगी। इसके लिए 10 मिनट का समय दें।

परिपक्वता के चार चिन्हः (अपने अनुवादक के साथ पहले ही तैयारी करें कि किस प्रकार "4स्वयं" को साधारण एवं सटीकता से कहें।)

1. स्वयं–पोषित – प्रेरितों के काम 11:27–30, 2 कुरिन्थियों 1:1–5

2. स्वयं–संचालित – प्रेरितों के काम 6:1–7, 15:22,25, इफिसियों 4:11–16

3. स्वयं–प्रचरण – प्रेरितों के काम 11:19–26, 13:1–4

4. स्वयं–सुधार – 2 तिमुथियुस 3:16,17, प्रेरितों के काम 15:1–34

सभी समूहों को रिपोर्ट देने के लिए दो मिनट का समय दें।

सारांश (10 मिनट):

परिपक्वता के चारों चिन्हों का पुर्न अवलोकन करें।

प्रतिभागियों को दो दो में विभाजित कर के चारों स्वयं में उन कलीसियाओं के परिपक्वता का मूल्यांकन करने को कहें जिन कलीसियाओं में वे वर्तमान में पाए जाते हैं। तब प्रत्येक व्यक्ति को यह बताने का अवसर दें कि जिन क्षेत्रों में वे कमजोर हैं उन्हें हटाने और परिपक्वता की ओर बढ़ने के लिए वे किन कदमों को उठाएगें।

एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें।

कलीसिया निर्माण 3
बी पी आई 1–7

(45 मिनट)

विषय एवं लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी महान आदेश एवं महान आज्ञा के द्वारा कलीसिया के पॉच उददेश्यों को पहचानेगें और सीखेंगें। कल से पहले, अपनी गृह कलीसिया समूह में वे एक कलीसिया के रूप में इन पॉचों उददेश्यों को पूरा करने की एक योजना विकसित करेगें।

आवश्यक वस्तुएं:
- अध्ययन परिच्छेद लिखा पोस्टर पेपर
- श्वेतपट और मार्कर्स
- टेप

प्रशिक्षक की तैयारी (इसे सत्र से पहले कर लें):
नीचे लिखे शब्दों को पोस्टर पेपर के एक पन्ने पर लिख लें:

महान आज्ञा – मत्ती 22:36–39 महान आदेश – मत्ती 28:18–20

पोस्टर पेपर के पॉच पन्नो को लेकर पॉच हाथ बना लें ताकि आप उन्हें एक साथ पकड़ कर घुमा सकें। प्रत्येक हाथ में भिन्न भिन्न अंको वाले अंगुली सही शीर्षक के साथ हो: एक दर्शन, अधिकार की दो पटरियां, तीन पद, परिपक्वता के चार चिन्ह, और पॉच धर्मशास्त्रीय उददेश्य।

प्रवेश स्तरों को जॉचे(5 मिनट):
"हैन्डी गाईड" के पोस्टरों को दिखाएं। अपनी अंगुली या पोस्टर के माध्यम से हमने जो कुछ "हैन्डी गाईड" में सीखा है उसका पुर्न अवलोकन करें। (समूह के समय के दौरान उन पोस्टरों को लटका दें)

परिपक्वता के चार चिन्ह

तीन पद

अधिकार की दो पटरियां

एक दर्शन

मुख्य सत्र (25 मिनट):

प्रतिभागियों को समूह में विभाजित कर दें। समूहों से कहें: "मत्ती 22:36–39 और मत्ती 28:18–20 को पढ़ने के लिए पॉच मिनट का समय लें और इन परिच्छेदों के आधार पर कलीसिया के उददेश्यों की विवेचना करें।"

"महान आज्ञा– मत्ती 22:36–39" और "महान आदेश– मत्ती 28:18–20" लिखा हुआ पोस्टर श्वेत पट पर लटका दें। प्रतिभागियों से पूछें कि इन परिच्छेदों में कौन से उददेश्य स्पष्ट दिखाई देते हैं (समूह दर समूह न पूछें, किसी भी एक व्यक्ति से पूछें)। जब विचार विमर्श समाप्त हो जाए, तो यह समझाएं कि हम इन परिच्छेदों के आधार पर एक स्वस्थ कलीसिया के पॉच उददेश्यों को देखेगें।

किसी को मत्ती 22:36–39 पढ़ने को कहें। नीचे लिखे शब्दों को श्वेत पट पर लिख दें और यदि उन्होंने इसे समूह में नहीं पहचाना तो अभी पहचानने में सहायता करें:

1. आराधना
2. सेवकाई
3. सहभागिता

किसी को मत्ती 28:18–20 पढ़ने को कहें। नीचे लिखे शब्दों को श्वेत पट पर लिख दें और यदि उन्होंने इसे समूह में नहीं पहचाना तो अभी पहचानने में सहायता करें:

4. सुसमाचार प्रचार / मिशन्स
5. शिष्यता

उन्हें फिर से समूह में भेज दें। आधे समूहों को प्रेरितों के काम 2:38–47 और बाकि आधो को प्रेरितों के काम 11:19–30, 13:1–3
समूहों से कहें: "पॉच मिनट का समय लेकर इस बात की विवेचना करें कि किस प्रकार इन दो परिच्छेदों में कलीसिया एक स्वस्थ कलीसिया के पॉच उददेश्यों को प्रदर्शित कर रही है।"

बड़े समूह को वापस लाएं और उन्हें पहले प्रेरितों के काम 2 अध्याय और तब अन्ताकिया की कलीसिया के बारे में बताने को कहें।

सारांश (10 मिनट):

कहें: "अब जबकि हम एक स्वस्थ कलीसिया के पॉच उददेश्यों का अध्ययन कर चुके हैं, तो हम चाहते हैं कि आप अपने गृह कलीसिया समूहों में जाकर प्रत्येक क्षेत्रों में अगुवाई के लिए एक व्यक्ति को चुन लें। ये आपके डीकन्स हो सकते हैं – यदि आपकी कलीसिया छोटी है तो एक व्यक्ति एक से अधिक क्षेत्रों का अगुवा हो सकता है।" इसे करने के लिए उन्हें तीन से पॉच मिनट का समय दें।

एक बार फिर उनका ध्यान खीचें। उन्हें पॉच मिनट का समय दें कि वे उन तीन बातों के बारे में विचार कर सकें जो कल से पहले उनकी कलीसिया सभी पॉच उददेश्यों के अभ्यास के लिए कर सकती है। सभी गृह कलीसियाओं के प्राचीनों को यह सुनिश्चित करना है कि यह किया जाए। कहें: "एक कलीसिया के रूप में अभी पॉच मिनट का समय लेकर आप अपने प्राचीनों को उन तीन बातों को लिखने को कहें जो इन पॉच उददेश्यों को पूरा करने के लिए आपकी कलीसिया करेगी।"

कहें: "एक उदाहरण है कि आप एक कर्मचारी को मेज साफ करने में, पानी ले जाने में, आग के लिए लकड़ी ढोने में, पड़ोसी की राह को साफ करने में सहायता कर सकते हैं और इसके द्वारा आप अपनी गवाही बता सकते हैं कि कैसे यीशु ने आपके जीवन को बदल दिया (यह सेवा और सुसमाचार प्रचार दोनों है)। यदि आप एक विश्वासी की सेवा कर रहें हैं तो आपने आज जो सीखा है उसे बताएं और शिष्यता का अभ्यास करें।"

गृह कलीसिया प्रारूप
बी पी आई 1–8

(1घण्टा)

विषय एवं लक्ष्य:

इस सत्र में प्रतिभागी भाग लेने वाले एक आसान बाईबल अध्ययन तरीके को सीखेगें और एक गृह कलीसिया के प्रारूप को देखेगें जिसमें समूह सुधार एवं जवाबदेही के **टी 4 टी** सिद्धान्त शामिल है। यह उन्हें बाकि बचे प्रशिक्षण के दौरान प्रति सुबह मिलकर गृह कलीसिया का अभ्यास करने के लिए तैयार करेगा।

आवश्यक वस्तुएं:

- श्वेतपट और मार्कर्स
- पोस्टर पेपर और स्थाई मार्कर्स
- टेप
- यदि आप चाहते हैं तो, गृह कलीसिया के प्रदर्शन की प्रत्येक भूमिका के लिए निर्देश

प्रशिक्षक की तैयारी (इसे सत्र से पहले कर लें):

गृह कलीसिया के प्रारूप की सहायता के लिए सात से दस स्वयंसेवकों से बात करें। पहले से भूमिका बॉट दें और प्रतिभागियों को अपनी भूमिका समझने दें। (आपको **एच सी** प्रारूप को चलाना नहीं परन्तु केवल देखना है)।

- *नियमः* (आप चाहें तो प्रत्येक प्रतिभागियों को उनकी भूमिका लिखे कागज दे सकते हैं।)

  ○ जवाबदेही समय के दौरान, तीन स्वयंसेवक अपने सभी पॉच लोगों के साथ बॉट चुके होंगे। इनमें से एक कोशिश कर चुका होगा परन्तु किसी ने भी उसे अपनी कहानी पूरा करने नहीं दी होगी। एक बहुत डरा हुआ होगा, और एक ऐसा पहले कर चुका होगा, परन्तु इस सप्ताह के दौरान वह बहुत व्यस्त होगा।

  ○ एक व्यक्ति के पास मसीह में आए तीन लोग होंगें।

  ○ बाईबल अध्ययन के दौरान, कोई एक पवित्र शास्त्र की गलत व्याख्या के साथ आएगा।

  ○ आप चाहेंगें कि पहले ही से प्राचीन, डीकन और खजांची को चुन लिया जाए ताकि वे गृह कलीसिया को एक कलीसिया के रूप में कार्य करते हुए देखें।

  ○ एक व्यक्ति को सहायता करने वाला भी होना चाहिए (यदि आप इस भूमिका को नहीं ले रहे हैं)।

- *जवाबदेही समयः* यह अवसर है कि जो आज्ञा नहीं मानते उनके लिए एक आदर्श उपयुक्त प्रत्युत्तर दें– यह जानना महत्वपूर्ण है कि क्यों कोई आज्ञा नहीं मानना चाहता।

  ○ तीन लोग, पॉच लोगों के साथ सुसमाचार नहीं बॉट सके होंगे। प्रशिक्षण चलाने वाला पूछेगा कि उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया। यह प्रशिक्षण चलाने वाले को अवसर देगा कि वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रत्युत्तर को दर्शाए। वह उस व्यक्ति की सराहना करेगा जिसने कोशिश तो की पर कामयाब नहीं हुआ, और उसी समय अवसरों के लिए प्रार्थना करेगा। वह समूह के किसी और व्यक्ति से उस व्यक्ति के साथ जाने को कहेगा जो डरा हुआ है ताकि वह उसे गवाही देने में सहायता कर सके। वह उस व्यक्ति को उत्साहित करेगा जिसने गवाही दी ही नहीं ताकि आने वाले सप्ताह वह आज्ञाकारी बने।

  ○ एक व्यक्ति पॉच लोगों के साथ गवाही बॉट चुका होगा और उसमें से तीन लोग यीशु के पास आ चुके होंगे। तब प्रशिक्षण चलाने वाला पूछेगा, "अब आगे आप क्या करेगें?" "हम साथ मिलना शुरू करके जो हमने सीखा है उसे सिखाएगें" यदि उन्होंने यह नहीं कहा तो उन्हें 2 तिमुथियुस 2:2 स्मरण दिलाकर इसे करने के लिए उत्साहित करें।

- *बाईबल अध्ययन समयः* एक व्यक्ति पवित्र शास्त्र का गलत अर्थ निकाल लेगा। सहायक को चाहिए कि उस व्यक्ति को झिड़कने के बजाए वह समूह से पूछे कि क्या वे उस व्यक्ति द्वारा बताए अर्थ से सहमत हैं। तब समूह कोमलता से उसे सुधारेगा। यह उस बात को दर्शाएगा कि पवित्र आत्मा विश्वासियों के द्वारा गलत सिद्धान्तों को सुधारता है।

यदि आपके पास बहुत बड़ा समूह है यह बहुत सारे लोग अंग्रेजी नहीं बोलते हैं तो दो प्रदर्शन एक साथ होने चाहिए ताकि जो अंग्रजी नहीं जानते उन्हें पता चले कि क्या हो रहा है। यदि आप ऐसा करेगें तो ध्यान रखें कि दोनों भाषाओं के लिए आपके पास स्वयंसेवक हों।

प्रवेश स्तरों को जॉचे(15 मिनट):

प्रतिभागियों को छोटे समूहों में बॉट दें। प्रत्येक समूह को एक मार्कर और कागज का एक टुकड़ा दे दें। उन्हें एक चर्च बनाने के लिए पॉच मिनट का समय दें (**बिना** शब्द इस्तेमाल किए)। सभी समूह को बारी बारी खड़े होकर अपना चित्र दिखाने को कहें।

मुख्य सत्र (40 मिनट):

प्रतिभागियों को छोटे समूह में रखें। उन्हें 2 तिमुथियुस. 3:17 पढ़कर यह विचार करने को कहें कि किन चार वस्तुओं के लिये पवित्र शास्त्र का प्रयोग हुआ है। (तीन मिनट)

जब वे ऐसा कर रहें हों तो आप नीचे लिखे शब्दों को श्वेतपट पर लिख दें

क्या सही है? क्या सही नहीं है? कैसे सही किया जाए? कैसे सही रहा जाए?

प्रतिभागियों से पूछें: "2तिमुथियुस 3:17 के अनुसार पवित्र शास्त्र का उपयोग किस लिए हुआ है?" तब श्वेत पट की ओर इशारा करें और यह समझाएं कि कैसे इन चारों प्रश्नों का सम्बन्ध इस पद के साथ है (उपदेश देने,समझाने,सुधारने और धर्म की शिक्षा देने)।

इन लिखे शब्दों को मिटा दें और उन्हें इन प्रश्नों को कई बार दोहराने दें।

प्रदर्शन:

स्वयंसेवकों को कमरे के मध्य में बिठा लें। तब बाकि लोगों को उनकी कुर्सियों को घेरकर गोलाकार में खड़े होने का कहें।

- प्रशिक्षक को चाहिए कि वह प्रार्थना और जवाबदेही के साथ गृह कलीसिया प्रदर्शन की शुरूआत करे। जवाबदेही समय के दौरान, इस बात को दिखाएं कि कैसे उन लोगों को समझाया जाए जो गवाही नहीं देते और साथ ही साथ उन लोगों से जो कई लोगो को विश्वास में ले आता है (देखें कि प्रशिक्षक ने व्याख्या के लिए नोट्स तैयार रखे हों)। उन लोगों कि सराहना करें जो पिछले सप्ताह बपतिस्मा में आज्ञाकारी रहे और जिन्होंने आने वाले सप्ताह में बपतिस्मा लेने की इच्छा जताई है।

- कुछ गीतों को गाएं। (जो आराधना का डीकन है वही इसका संचालन करें)

- बाईबल अध्ययन के लिए शिष्यता की डीकन अगुवाई करे। मत्ती 13:18–23 पढ़ें। प्रत्येक जन एक पद लगातार पढ़ें जब तक यह समाप्त न हो। समझ के लिए किसी को प्रार्थना करने को कहें। तब चार प्रश्न पूछें। एक व्यक्ति पवित्र शास्त्र का गलत अर्थ निकालेगा– संचालक के बजाए समूह ही उसे सुधारे।

- अगले सप्ताह की जवाबदेही को बताएं।

- इस बात को दर्शाएं कि कलीसिया सुव्यवस्थित होती है जब सभी डीकन्स प्रार्थना के समय अपने अपने कार्य को अंजाम दें (आराधना, सुसमाचार प्रचार / मिशन्स, सेवकाई, सहभागिता, शिष्यता) और खजांची पास्टर का रि तेदार न हो। दान उठाएं और उसके द्वारा जो कार्य करना है उसके लिए प्रार्थना करें (सुसमाचार एवं मिशन्स के कार्य)।

- प्रार्थना या अन्य गीत के साथ समाप्त करें।

पूछने के द्वारा सूचना प्राप्त करना:

★ "इस प्रदर्शन में आपने क्या देखा?
★ "क्या इसमें ऐसा कुछ है जो आपको समझ में नहीं आया?
★ "क्या आप उन्हें कलीसिया के रूप में कार्य करते देख पा रहें हैं? जिन बातों के बारे में हमने बात की उनमें से कौन सी बातें यहां आपने देखी?
★ पूछें: "क्या आप इसे कर सकते हैं?"

सारांश (5 मिनट):

कहें: "कलीसिया स्थापना के लिए, आपको यह जानना आवश्यक है कि आप किस प्रकार की कलीसिया आरम्भ करना चाहते हैं। गृह कलीसिया की अगुवाई मिल कर की जाती है, परन्तु सभी कार्यों के प्रतिनिधी होते हैं। आज हम एक स्वस्थ कलीसिया निर्माण की मूल बातों का अध्ययन कर रहे थे। इस सप्ताह आपकी गृह कलीसिया समूह के पास अवसर होगा कि वे इसका अभ्यास करें। आपके संचालक की यह जिम्मेदारी होगी कि वह सुनिश्चित करे कि इस सप्ताह आपका समूह एक स्वस्थ कलीसिया के कार्यों का अभ्यास करे।"

पहले दिन की सूचना प्राप्त करना

(15 मिनट)

प्रतिभागियों से पूछें: "क्या आपने आज कोई नई या ऐसी बात सीखी जो आपको अच्छी लगी?" (जब प्रतिभागी बताएं तो आप इन्हें चार्ट पेपर पर लिख लें)

सत्र से पुर्न अवलोकन वस्तुओं को उठाएं (जैसे, "स्वस्थ कलीसिया के लिए मार्गदर्शन", अंगुली बजाते हुए पुछें, "परमेश्वर कितने लोगों को नाश होते देखना चाहता है?" इत्यादि)

गृह कार्य:

आज रात प्रेरितों के काम पुस्तक पर नजर डालें और कलीसिया निर्माण सिद्धान्त पर विशेष ध्यान दें।

अपने आपको नौ बिन्दुओं और "अच्छे से महान" व्याख्या से अवगत कराएं (बी पी आई प्राथमिक पाठयक्रम से जिम कोलिन्स की गुड टु ग्रेट का सारांश)।

एच सी बाईबल परिच्छद दूसरे दिन के लिए:

मत्ती 13:3–23

दिन 2 – एक दृष्टि में (शुरूआत)

(10 मिनट)

पूछें:"आज सुबह गृह कलीसिया कैसी चली? कोई चुनौतियां?

कुछ संचालकों को यह रिर्पोट देने को कहें कि पिछली रात कैसे पॉच उददेश्यों को पूरा किया गया।

चुटकी बजाएं और उन्हें स्मरण दिलाएं कि इतनी तेजी से लोग यीशु के बिना मर रहे हैं।

हैन्डी गाइड को फिर से देखें ताकि आप जान पाएं कि उन्हें क्या स्मरण है। अंगुलियों से शुरूआत करके फिर पाउच POUCH की प्रक्रिया करें।

दिन के लिए जो धोषणाएं हैं उन्हे बताएं। प्रार्थना के साथ सत्रों की शुरूआत करें।

सर्वोत्तम अभ्यासों को समझना – एक योजना के बढ़ने के चार तरीके
बी पी आई 2–1

(1घण्टा)

विषय एवं लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी उन तरीकों को देखेगें जो उनकी योजना को आगे बढ़ा सकती है। प्रतिभागी प्रत्येक तरीकों का मूल्यांकन करेगें और अपनी योजना के कार्यान्वयन की सहायता के लिए जो सबसे उपयुक्त तरीका है उसे पहचानेगें।

आवश्यक वस्तुएं:
- शीर्षक एवं सूचना लिखे पोस्टर पेपर
- स्थाई मार्कर्स
- आधे टाईपिंग पेपर पर छपे निर्देश

प्रशिक्षक की तैयारी (इसे सत्र से पहले कर लें):
प्रतिभागियों के लिखने के लिए चार चार्ट तैयार करें। सभी समूह के लिए एक कार्ड तैयार करें जिस पर अगुवे के लिए नोट्स लिखा हो। (देशी लोगों को इन विचारों को उनके सन्दर्भ में समझने में सहायता करें, जैसे– सर्वोत्तम अभ्यास के विचार को सोनार से समझ पाएगें क्योंकि वे एक सर्वोत्तम दुकानदार से इसे सीखेगें न कि उस व्यक्ति से जिसका व्यवसाय चल नहीं रहा है)।

चार्ट 1– शीर्षकः नवोत्पाद
व्याख्याः कुछ नया बनाना

उदाहरण

मूल्य

सीमाएं

समूह अगुवे के लिए नोट्स (नवोत्पाद):
एक तरीका है जिससे योजनाएं आगे बढ़ती हैं वह है नवोत्पाद या कुछ नया बनाना। आपका समूह नवोत्पाद का मूल्यांकन प्रभावीपन की प्रक्रिया के लिए करेगा। व्यवसायी जगत से उदाहरण ढूंढें जिसमें किसी ने अपने आप को एक नया उत्पाद या एक नए व्यवसाय के लिए अलग किया। आप उन व्यक्तियों के विषय में भी सोच सकते हैं जिन्होंने बड़े सी पी संगठनों को छोड़कर कुछ नया आरम्भ किया। नवोत्पाद के तीन उदाहरणों को बताएं। इसमें कौन से खतरे पाए जाते हैं? इसमें क्या लाभ है?

नवोत्पाद की प्रक्रिया का मूल्यांकन करें– कब और कैसे नवोत्पाद खतरनाक या लाभप्रद हो सकता है?

चार्ट 2– शीर्षकः आकार

व्याख्याः प्रक्रिया रूपरेखा, कार्यान्वयन, मूल्यांकन, रूपरेखा दोहराना, कार्यान्वयन

उदाहरण

मूल्य

सीमाएं

समूह अगुवे के लिए नोट्स (आकार):

एक तरीका है जिससे योजनाएं विकसित होती हैं वो है आकार बदलना या जो पहले से है उसे लेना, और उसमें बदलाव या सुधार करना ताकि वह एक विशेष परिस्थिति के लिए योग्य हो जाए। आपका समूह प्रभावकारी प्रक्रिया के लिए आकार प्रदान करने का मूल्यांकन करेगा। जिस देश में आप रहते हैं वहीं से कोई उदाहरण सोचें। अधिक लोगों को आकर्षित करने के लिए कुछ फॉस्ट फूड बदलावों को तुरन्त अपनाते या मेन्यू को बदलते हैं। आप उन भेजने वाली संस्थाओं के बारे में भी सोच सकते हैं जिन्होंने अपनी दिशा बदली या अपने उददेश्यों को बदला। आकार सम्बन्धी तीन उदाहरणों को सोचें। इसमें क्या खतरा पाया जाता है? इसमें कौन से लाभ पाए जाते हैं? आकार संबंधी प्रक्रिया का मूल्यांकन करें– कब और कैसे आकार बदलना लाभप्रद या नुकसान दायक हो सकता है?

चार्ट 3– शीर्षकः विविध विकल्प

व्याख्याः प्रक्रिया

–जितनी हो सके उतने विकल्पों को पहचाने

– जितने विकल्प आप प्रयोग कर सकते हैं करें
– प्रत्येक विकल्पों के प्रभावीपन का मूल्यांकन करें
– जो विकल्प प्रभावी हैं उन्हें पुनः प्रयोग करें

उदाहरण

मूल्य

सीमाएं

समूह अगुवे के लिए नोट्स (विविध विकल्प):

विविध विकल्प या कई विकल्पों को तब तक खोजना जब तक एक प्रभावी तरीका न मिल जाए,एक तरीका है जिसके द्वारा योजना आगे बढ़ती है। आपका समूह विविध विकल्पों को प्रभावीपन की प्रक्रिया के रूप में मूल्यांकन करता है। एक व्यक्ति के विषय में सोचे जिसे खेती के विषय में कम जानकारी है, वह एक नए क्षेत्र में आ

जाता है और यह निर्णय करता है कि उस क्षेत्र के किसानों द्वारा पालन किए जा रहे तरीकों के बजाए वह 10 अलग अलग फसल लगाएगा ताकि वह देख सके कि किस फसल से सबसे अधिक आमदनी होती है। विविध विकल्प के बारे में तीन उदाहरण सोच लें। इसमें क्या खतरा पाया जाता है? इसमें कौन से लाभ पाए जाते हैं? विविध विकल्प संबंधी प्रक्रिया का मूल्यांकन करें– कब और कैसे विविध विकल्प लाभप्रद या नुकसान दायक हो सकता है?

चार्ट 4– शीर्षकः सर्वोत्तम अभ्यास निर्देश चिन्ह

व्याख्याः "निरन्तर पहचानने, समझने, श्रेष्ठ तरीकों को अपनाने और संस्था के अन्दर और बाहर पाए जाने वाली प्रक्रियाओं द्वारा कार्य को उन्नत करने की प्रक्रिया।"

उदाहरण

मूल्य

सीमाएं

समूह अगुवे के लिए नोट्स (सर्वोत्तम अभ्यास निर्देश चिन्ह):

सर्वोत्तम अभ्यास निर्देश चिन्ह या संस्था के अन्दर या बाहर की श्रेष्ठ प्रक्रिया को पहचानना एवं अपनाना, योजना आगे बढ़ाने का एक तरीका है। आपका समूह सर्वोत्तम अभ्यास निर्देश चिन्ह को प्रभावीपन की प्रक्रिया के रूप में मूल्यांकन करता है। व्यवसाय या अन्य क्षेत्रों की कुछ तकनीकों के विषय में विचार करें जिन्हें सर्वोत्तम अभ्यास के रूप में पहचाना गया है। सर्वोत्तम अभ्यास के बारे में तीन उदाहरणो सोच लें। इसमें क्या खतरा पाया जाता है? इसमें कौन से लाभ पाए जाते हैं? सर्वोत्तम अभ्यास निर्देश चिन्ह संबंधी प्रक्रिया का मूल्यांकन करें– कब और कैसे सर्वोत्तम अभ्यास निर्देश चिन्ह लाभप्रद या नुकसान दायक हो सकता है?

प्रवेश स्तर की जांच (5 मिनट):

पूछें: "आप कैसे जान पाएगें कि कौन सा तरीका चुनना चाहिए जो हमारी योजना को आगे बढ़ा पाए?"

इस तरह एक कहानी कहें: "जब मैं पहली बार भारत आया तो मैं टॉयलेट पेपर खरीदने गया। दुकानदार ने पूछा, "किस तरह का पेपर? क्या आपको टाइम्स आफ इन्डिया चाहिए?" मैंनें कहा,"नहीं मुझे टॉयलेट पेपर चाहिए" फिर उसने पूछा, "क्या आपको इण्डियन एक्सप्रेस चाहिए?" परन्तु मैं तो टायॅलेट पेपर खोज रहा था। तब दुकानदार ने मुझसे कहा, "क्षमा करें हम ऐसे पेपर नहीं छापते क्योंकि इसे कोई नहीं पढ़ता है।"
कहें: "जो बातें अमरीका में कारगर हैं वे यहां हमेशा कारगर नहीं होती। हमें यह जानना जरूरी है कि कौन सा तरीका कारगर है। हम इसे कैसे कर सकते हैं? हम चार तरीकों को देखेगें जिसके द्वारा एक योजना आगे बढ़ती है।"

मुख्य सत्र (40 मिनट):

प्रतिभागियों को को चार समूहों में बॉट दें और उन्हें एक से चार नम्बर बोलने को कहें। तब सभी एक नम्बर वाले को एक समूह में, दो नम्बर वाले को दूसरे समूह में बॉट दें। संचालक ही समूह के लिए एक अगुवा चुन दे। प्रत्येक समूह के अगुवे को संक्षिप्त व्यख्या वाला चार्ट पेपर का एक पन्ना मिलेगा जिसमें उन तरीकों में से एक तरीका होगा जो आगे बढ़ने की योजना का दर्शाता है, इसमें समूह के विचार के लिए प्रश्न भी रहेगें। समूह अपने उत्तर को चार्ट पेपर पर लिख लेगा। समूह के अगुवे समूचे समूह को सूचना देगा और चार्ट में अतिरिक्त सुझाव भी डालेगा। (इस अभ्यास को करने के लिए 10 मिनट और रिर्पोट देने के लिए 2 मिनट का समय दें।)

1. व्यवसाय एवं सेवा में रहने के दौरान अपने अनुभवों से उन संस्थाओं और व्यवसायों का उदाहरण दें जिन्होंने इसे प्रभावी रूप से इस्तेमाल किया है?
2. इस तरीके का महत्व क्या है?
3. कुछ सीमाऐं कौन कौन सी हैं?

जैसे प्रत्येक समूह प्रस्तुत करे, संचालक हमारी संस्था के अन्दर से ही कुछ सेवकाई के उदाहरणों को बताएगा जो योजना के बढ़ने को दर्शाएगा।

सारांश (15 मिनट):

समूचे समूह कहें मुख्य बातः

नवोत्पाद

महत्व

–सृजनात्मक
– सीमाओ से बाहर हटकर सोचना
–कारगर जब बाकि कुछ काम न दे

सीमाएं

–अति खतरनाक
–महंगा
–बहाव के विपरीत

आकार देना

महत्व

–कम खतरनाक
–जाना पहचाना परिणाम
–कारगर जब कुछ काम कर रहा हो

सीमाएं

–कम खतरा
–वृद्धि सम्बन्धी बदलाव
–वातारवरण में बड़े बदलाव की ओर प्रभावी रूप से प्रत्युतर नहीं
–बदलाव में कमी

विविध विकल्प

महत्व

–योजना का बदलाव
–उपयोगी यदि और कुछ काम नहीं किया
–सर्वोत्तम योजनाओं को पहचानने एवं उनमें व्यय करने की संभावनाएं बढ़ता है।

सीमाएं

–इसका अर्थ है कि किसी भी चीज़ का प्रयोग करेगें क्योंकि आप को नहीं मालूम कि क्या काम करेगा।
–महंगा और अपर्याप्त
–आपके पास उछालने के लिए कई गेंदें होंगी और हो सकता है सबसे महत्वपूण गेंद को ही आप गिरा दें।

सर्वोत्तम अभ्यास निर्देश चिन्ह

महत्व

–अब अपने को अपने से तुलना न करें
–जब हम सर्वोत्तम कों ढूंढ रहें हैं तो सुधार के क्रम को जारी रखें

सीमाएं

–प्रतिक्रियाशील हो सकता है
–उतना सृजनात्मक नहीं
–दूसरों के सृजनात्मकता और सुधार पर आश्रित

योजना विकास एवं लागूकरण के व्यापक प्रस्ताव में चार प्रकार के बदलाव सम्मिलित हैं।

सर्वोत्तम अभ्यास को पहचानना एवं स्थानान्तरित करना

स्थानान्तरण में व्यक्तिगत रूकावटें

–अज्ञानता–यह नहीं जानना कि कैसे सर्वोत्तम अभ्यास खोजा जाए
–अवशोषी क्षमता का अभाव– स्पंज का उदाहरण(यदि यह बहुत सुखा हो या अत्यधिक गीला हो तो यह ज्यादा पानी सोख नहीं पाएगा)
–पहले से कायम सम्बन्धों की कमी
–अभ्यासों को अपनाने की उत्साह में कमी

पूछें: "क्या किसी के पास इसके उदाहरण हैं और क्या आप उसे बताएगें?"

कहें: "इस प्रशिक्षण के दौरान हम आपको दो या तीन सर्वोत्तम अभ्यासों को पहचानने को कहेगें जिन्हें आप अपने **सी पी एम** के प्रत्येक भाग में उपयोग कर पाएगें।"

प्रेरितों के काम के गृह कार्य का पुर्न अवलोकन – प्रेरितों के काम पर विवरण देना
बी पी आई 2–2 और 2–3

(2 घण्टा– प्रत्येक भाग के लिए 1 घण्टा)

विषय और लक्ष्य:
इस सत्र में प्रतिभागी देखेगें कि कैसे **सी पी एम** सिद्धान्त प्रेरितों के काम पुस्तक में पाया जाता है। अब उन्हें इन सिद्धान्तों को अपने अन्दर आंतरीकरण करना होगा।

आवश्यक वस्तुएं:
- बाईबल
- हेडर्स और मार्कर्स के साथ पोस्टर पेपर
- एस सी व्यक्ति और 10 वैश्विक **सी पी एम** तत्वों का चित्र
- प्रेरितों के काम के चार्ट (पाठ के अन्त में देखें)

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
प्रेरितों के काम के चार्ट को भरने के लिए कई कॉपी बना लें ताकि सभी को यह मिले (पाठ के अन्त में देखें)।

एस सी व्यक्ति को पोस्टर पेपर पर बनाएं ताकि आप 10 वैश्विक सी पी एम तत्वों को उस पर रख सकें (1.परमेश्वर के वचन पर आधारित, 2.भरपूर प्रार्थना, 3.भरपूर सुसमाचार बोना, 4.साभिप्राय कलीसिया स्थापना, 5.घर में कलीसिया का मिलना, 6.कलीसिया द्वारा कलीसिया स्थापना, 7.स्थानीय अगुवे (अगुवे कलीसिया में से), 8.गृहस्थ अगुवे, 9.द्रुतगामी कलीसिया स्थापना, और 10.स्वस्थ कलीसिया)। इन्हें कागज के एक पन्ने पर लिखकर एस सी व्यक्ति के ऊपर टेप द्वारा चिपका दें, क्योंकि आगे के सत्र में उसे उपयोग किया जाएगा।

चार्ट के प्रत्येक घटक के लिए एक पोस्टर पेपर (पाठ के अन्त में देखें)– घटक का शीर्षक पोस्टर पेपर पर लिख लें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):
पूछें: "क्या आपमें से किसी ने पहले **सी पी एम** के 10 वैश्विक सिद्धान्त को पढ़ा है?" उन्हें इसे बताने को कहें। उन्हें श्वेत पट पर लिख लें। (इसके लिए हाथ के इशारे की ओर **न** जाएं क्योंकि यह दिन 5 के एम ए डब्ल्यु एल सत्र को अव्यवस्थित कर देगा)।

मुख्य सत्र (1घण्टा 45 मिनट) :

समूह को प्रेरितों के काम का चार्ट दिखाएं और प्रत्येक भाग के बारे बताएं (पॉच मिनट)। यदि जरूरत हो तो अन्य भाषाओं में भी लिखें।

प्रतिभागियों को सात छोटे समूहों में विभाजित कर दें (समान भाषाई समूह उत्तम है)। प्रत्येक समूह को प्रेरितों के काम के कुछ अध्याय दें (सभी अध्याय जरूरी नहीं है) ताकि वे इसे पढ़कर अपने चार्ट पर लिख सकें। बॅटवारा निम्न रूप में हो सकता है (30 मिनट):

1—3	13—15
4—6	16—18
7—9	19—21
10—12	

जब समूह मिल रहे हों तो सूचनाएं एकत्र की जा सकती हैं।

समूहों को वापस आकर रिर्पोट देने को कहें (यह लगभग दूसरा घण्टा पूरा ले लेगा)। सभी समूहों को रिर्पोट देने को कहें। एक व्यक्ति को सारी सूचनाएं सही कागज पर लिखने को कहें। जैसे प्रत्येक समूह प्रस्तुत करे तो उनसे पूछें: "जो रिर्पोट उन्होंने दी क्या उसमें कोई वैश्विक **सी पी एम** तत्व दिखाई दिए?" इन्हें घेर दें और **एस सी** व्यक्ति पर लिखें (वे उसके पैर के नीचे है)।

सारांश (5 मिनट):

पूछें: "प्रेरितों के काम पुस्तक पढ़ते समय किस बात ने आपको चौंका दिया?"
कहें: "मैं आशा करता हूं कि यह जानना उत्साहजनक है कि सी पी एम के 10 वैश्विक तत्व न केवल उनके आस पास के सी पी एम में थे वरन यह प्रेरितों के काम में प्रारम्भिक कलीसिया के फैलाव का एक बड़ा भाग था।"

(गौर करें: इस भाग की कहानी को फिर न बताएं। इसके बजाए निम्न बातों को खोजें और इन विशिष्ट बातों को बताने के लिए तैयार रहें। पद संख्या के साथ विचार भी प्रकट करें।)

1.इस भाग में पवित्र आत्मा का कार्य क्या है?	2. कलीसिया स्थापना के किन सिद्धान्तों को आप पाते हैं? क्या हुआ जिसके कारण कलीसिया स्थापित हुई?	3.उन्होंने किस प्रकार अगुवों को चुना? किसे उन्होंने चुना?	4. एक अगुवे को प्रभावी ढंग से अगुवाई करने के लिए क्या जानना, करना और होना चाहिए?	5. उन्होंने किस प्रकार अगुवों को प्रशिक्षण दिया? कौन से तरीको का इस्तेमाल हुआ?	6. प्राचीनो के अलावा किस तरह के अगुवे पाए गए? (सुसमाचार प्रचारक, प्रेरित) उन्हें कैंसे चुना और प्रशिक्षण दिया गया? उनका उददेश्य एवं कार्य क्या था?	7. इस भाग में परिवर्तन तथा कलीसिया/ संगति में क्या परिणाम दिखाई दिया?

उच्च उपयोगी क्रियाकलाप
बी पी आई 2–4

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी उच्च एवं निम्न महत्व के क्रियाकलापों को देखना शुरू करेगें और यह मूल्यांकन करेगें कि उनका समय कहां बर्बाद हो रहा है।

आवश्यक वस्तुएंः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- यीशु के क्रियाकलापों के चार्ट की चार कॉपी
- पोस्टर पेपर के दो बड़े टुकड़े
- कागज के 10–20 टुकड़े जिन पर उच्च एवं निम्न महत्व के क्रियाकलाप लिखे हों
- सभी विधार्थियों के लिए पेपर एवं कलम / पेन्सिल
- चिपकाने वाला टेप

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
10–20 टाईपिंग पेपर तैयार कर लें जिस पर उच्च एवं निम्न महत्व के क्रियाकलाप लिखे हों।

उदाहरण के लिए (आपके श्रोता के अनुसार इस सूची में जोड़े या अपनाएं): प्रतिदिन प्रार्थना का समय, अपने जन समूह को बढ़ाने के लिए एक वेबपेज बनाना, हरेक सप्ताह उनके साथ मिलकर प्रार्थना करना जो आपके जन समूह में रूचि रखते हैं, प्रत्येक सप्ताह अपने जन समूह के नए विश्वासियों को शिष्य बनाना और प्रशिक्षण देना, अपने जन समूह में पाए जाने वाले सभी गॉवों का मानचित्रण करना, उन स्थानीय अगुवों से मिलना जो प्रत्येक सप्ताह आपके जन समूह के नए विश्वासियों को शिष्य बना रहें हैं, ई मेल लिखना, गृह कार्य, अपने पति या पत्नी और परिवार के साथ समय व्यतीत करना, एक दिन का आराम लेना, वार्षिक छुटिटयों में जाना, प्रत्येक सप्ताह स्थानीय विश्वासियों के साथ सुसमाचार सुनाने जाना, स्थानीय कलीसियओं के साथ दर्शन बॉटना, अन्य संस्थाओं के लोगों को सी पी एम सिद्धान्त की शिक्षा देना, अपनी सेवा के लिए धन इकटठा करना।

नोट कार्ड पर निम्न चार्ट बनाएं। छोटे समूह में उपयोग के लिए चार से छह कॉपी बनाएं (हरेक छोटे समूह के लिए एक)।

अपनी सेवकाई में यीशु ने किन क्रियाकलापों पर जोर दिया?

दृ—————————	मत्ती13:3,10,34,35 मरकुस 4:33
स————————— अ—————————	मरकुस 4:34 मत्ती13:36,15:15, 17:1,19, 20:17
ब——————————बो—————————	मरकुस 4:1, 3:7 लूका 8:4, मत्ती9:35—37
ल————————— (यू पी जी)	लूका 13:10, 13:22, मरकुस 1:21, मत्ती 15:24
2————————— श———का पु——	लूका 10:1—11 लूका 9:1—11
से————अ————	यूहन्ना 13:5

जब समूह अपने उत्तर बता रहें हों तो वही चार्ट भरने के लिए श्वेत पट पर लिख लें।

नोटः *प्रशिक्षक को चाहिए कि वह एक्टस 29 पुस्तक के "प्रिसिजन हारवेस्टिंग" अध्याय से परिचित हो। यह प्रशिक्षक को यह समझाने में मदद करेगा कि यीशु कैसे उच्च और निम्न महत्व के क्रियाकलापों को देखता था।*

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):

पूछें: "आप प्रत्येक सप्ताह अपने समय को कैसे बिताते हैं? वे कौन से क्रियाकलाप हैं जो आपका ज्यादा समय लेते हैं?"

सभी को पेपर और पेन दे दें। प्रतिभागियों को पॉच मिनट का समय दें ताकि वे अपने लिए एक सप्ताह की समय सारिणी बनाएं। और तब उन्हें उन तीन क्रियाकलापों को देखने को कहें जो उनका ज्यादा समय को ले रहे है। कुछ विधार्थियों को बताने दें।

मुख्य सत्र (45 मिनट) :

पूछें : "हमारा उददेश्य क्या हैं?" (एक अंगुली ऊपर उठाएं)। कहें: "जब लोग यीशु के पास आते हैं तो परमेश्वर की महिमा होती है। इसलिए हम उसके लिए सेवा करते हैं न कि उसके कारण।"

- पूछें: "कौन मुझे महानतम आज्ञा बता सकता है?"
  मत्ती 22:37– उसने उससे कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।"

- पूछें: "परमेश्वर को सारे मन से प्रेम करने का क्या अर्थ है?"
  कहें: "इसका एक अर्थ तो यह है कि अपने मन का अपने कार्य के मूल्यांकन करने और यह देखने के लिए करना कि जो आप कर रहें हैं उससे आपके जन समूह के प्रत्येक जन सुसमाचार सुनकर समझ पाएगें कि नहीं। इसका अर्थ है कि यह क्या चाहता है न कि आप क्या कर सकते हैं।"

- कहें: "अपने आप से पूछने के लिए एक अच्छा प्रश्न: क्या आप अपने जन समूह को जीतना चाहते हैं या उन्हें मसीह के पास लाते हुए देखना चाहते हैं। यदि आप उन्हें जीतना चाहते हैं तो यहां केवल आप क्या करेगें यही मायने रखता है। यदि आप उन्हें मसीह पास आते हुए देखना चाहते हैं तो यह आपके द्वारा आपके जन समूह में सुसमाचार फैलाने से कहीं अधिक है"।

कहें: "यीशु प्रार्थना के लिए समय निकालकर अपनी सेवकाई के दिशा का मूल्यांकन करता था। वह समय लेकर यह निर्णय करता था कि कौन से कार्य उच्च महत्व के हैं और कौन से निम्न महत्व के। तब वह अपना ज्यादा समय उच्च महत्व के कार्य पर लगाता था। हमें उसका अनुसरण करना चाहिए और अपने कार्य के साथ भी यही करना चाहिए। प्रतिभागियों को चार छोटे समूहों में विभाजित कर दें। प्रत्येक छोटे समूह को "खाली स्थान भरो" चार्ट दें। उन्हें इन परिच्छेदों को पढ़ने और रिक्त स्थान भरने के लिए 10 मिनट का समय दें। (यदि समूह बड़ा हो तो आप छह समूह बना लें और प्रत्येक को एक ही भाग भरने को कहें। आपको यह भी जानना होगा कि कैसे इसे आप उन भाषाओं में भी कर पाएगें जो आपके समूह में पाए जाते हैं।) समूह को वापस आकर रिर्पोट देने को कहें। प्रत्येक भाग को संक्षिप्त रूप से समझाए

दृष्टांत	मत्ती 13:3,10,34,35 मरकुस 4:33
सलाहकार आदर्श	मरकुस 4:34 मत्ती 13:36,15:15, 17:1,19, 20:17
बहुतायत बोना	मरकुस 4:1, 3:7 लूका 8:4, मत्ती 9:35–37
लक्ष्य (यू पी जी)	लूका 13:10, 13:22, मरकुस 1:21, मत्ती 15:24
2–2 शान्ति का पुरूष	लूका 10:1–11 लूका 9:1–11
सेवक अगुवा	यूहन्ना 13:5

कहें: "अब आईए हम कुछ क्रियाकलापों को देखें और यह निर्णय करें कि वे उच्च महत्व के हैं या निम्न महत्व के।"

पोस्टर पेपर के एक टुकड़े के तरफ "उच्च महत्व" और दूसरे तरफ "निम्न महत्व" लिख दें। श्वेत पट पर उसे लटका दें। उस पन्ने को बढ़ाए जिस पर क्रियाकलाप लिखे हुए हों। प्रत्येक व्यक्ति जिसे वह प्राप्त होता है वह खड़े होकर उसे पढ़े।

तब उसे उस क्रियाकलाप के सही पोस्टर पर चिपका दें (उच्च महत्व या निम्न महत्व)। उन्हें यह बात समझानी होगा कि उन्होंने क्यों इस कार्य को उस श्रेणी में डाला। (आपकी वर्तमान सेवकाई स्थान के अनुसार विभिन्न कार्य अलग अलग स्थान में हो सकते हैं।)

सारांश (5 मिनट):

कहें: "कई तरह से हम अपने समय को व्यतीत कर सकते हैं। हमें अच्छे भण्डारी होने का उत्तरदायित्व मिला है अतः हमें अपने समय एवं शक्ति को ऐसे जगह लगाना चाहिए जो सबसे फलदायक हो और परमेश्वर को भाए भी। अब अपने लिए एक सहयोगी चुन लें और अपनी सूची के उन तीन कार्यो के बारे में बताएं जो आपका ज्यादा समय ले रहे हैं और जिसे बदलना है। और तब इसे बदलने के लिए एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें।

5 भाग – प्रवेश योजना
बी पी आई 2–5

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी अपने 5 भाग की सी पी एम योजना की प्रवेश नीति के विषय में सोचना आरम्भ करेगें।

आवश्यक संसाधनः
- बीच से फाड़ा हुआ पोस्टर पेपर
- पोस्टर का एक टुकड़ा जिस पर "प्रवेश योजनाएं" लिखी हो
- स्थाई मार्कर्स
- चिपकाने वाला टेप

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
पोस्टर पेपर के तीन टुकड़ो को बीच से फाड़ लें ताकि सभी पॉच समूह के पास यह हो। तब एक पूरे पोस्टर पेपर के टुकड़े पर "प्रवेश योजना" लिखें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):
पूछें: "हमारी **सी पी एम** योजना का प्रथम भाग क्या है?" उनके उत्तरों को पटल पर लिख लें। यदि उन्होंने "जन्माने" को छोड़ दिया तो निश्चित्त रूप से इसकी महत्ता से उन्हें अवगत कराएं। पूछें: "जन्माने का अर्थ क्या होता है? प्रवेश का अर्थ क्या होता है?"

जन्म देने वाली प्रवेश योजना (आप कैसे लोगों से आत्मिक मुददों के बारे बात करना शुरू करेगें?)

मुख्य सत्र (35 मिनट) :
किसी को आगे आकर श्वेत पट पर लगे पोस्टर पेपर पर "प्रवेश योजना" लिखने को कहें। बड़े समूहों को विभिन्न प्रवेश योजनाओं को बताने के लिए कहें (उदाहरणः सुसमाचार–क्लब, ब्रेसलेट, **टी 4 टी** कार्ड इत्यादि)। यदि उन्होंने उन बातों को बताया जो वास्तव में सुसमाचार प्रस्तुतिकरण है तो उनका मार्गदर्शन करें।

जब आपके पास 10–20 की सूची हो जाए तो प्रतिभागियों को उनके दलों में विभाजित कर दें (यदि प्रशिक्षण में कोई अकेला है तो उसे किसी दल में डाल दें)। हरेक समूह को आधा पोस्टर पेपर और मार्कर दें। उन्हें पॉच मिनट का समय दें कि

वे उन तीन प्रवेश योजनाओं को चुन लें जो दक्षिण एशिया में उनके कार्य के लिए उपयुक्त और अपनाने योग्य है।

(जब ऐसा कर रहे हों, प्रशिक्षक को चाहिए कि वह श्वेत पट पर मूल्यांकन प्रश्नों को लिखे)

कहें: "निम्न के आधार पर तीनों प्रवेश योजनाओं का मूल्यांकन करें (10 मिनट):

- इस तरीके में क्या अच्छी बात है?
- इस तरीके में कठिन क्या है? (याद रखें कि रूकावटें अवसर बन सकती हैं ताकि हमारे कार्य के लिए कुछ बेहतर उपयोग हो सके)
- क्या यह जन्म देने वाला होगा? (222–पौलुस–तिमुथियुस–विश्वासी लोग–अन्य)"

प्रत्येक समूह को रिर्पोट देने के लिए दो मिनट का समय दें।

कहें: "जब आपने प्रत्येक प्रवेश नीतियों का मूल्यांकन किया और इसके साथ कुछ समस्याओं को भी पाया, तो आपको यह स्मरण करना होगा कि इसका अर्थ होता है कि आपने अपना कार्य पा लिया– समस्या को पार कर के।"

पूछें: "प्रवेश के लिए लिखीं कुछ नीतियां सुसमाचार प्रस्तुतिकरण भी है, क्या यहां दोहराव है?" **हॉं**

सारांश (5 मिनट):

कहें: "जब आप अपने 5 भाग वाली सी पी एम को लिखने के लिए तैयार हो रहें हैं तो एक या दो जन्माने वाली प्रवेश नीतियों के बारे भी प्रार्थना करें जिसे परमेश्वर आपके द्वारा उपयोग कर सकता है। यहां इसे साधारण रखना आवश्यक है क्योंकि हमारा लक्ष्य **जन्म देना है।"**

एस सी भूमिका का अवलोकन
बी पी आई2–6

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी एस सी भूमिका के विषय में सीखेगें और यह भी कि कैसे इससे कई लोगों को कलीसिया स्थापना आन्दोलन में परमेश्वर की योजना का अनुसरण करने में सहायता हुई है।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- चिपकाने वाला टेप
- "एस सी व्यक्ति" जैसे दाहिने ओर दिखाया गया है और जिसे इस सत्र में प्रयोग भी करना है
- कागज के टुकड़े जिन पर सी पी एम के तत्व लिखे हों

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
पोस्टर पेपर पर एक बड़े आकार का "एस सी व्यक्ति" बनाएं जिसके हाथ इस चित्र के समान ऊपर हों, निचे लिखे भागों को भी बनाएं (शब्दों को अलग लिखें– नम्बर न लिखें):
- विग टेक विचार वाला बुलबुला
- हैन्डी बाईबल गाइड
- टूटा हृदय
- फसल की भूमि वाला बाक्स
- फसल शक्ति बाक्स
- सी पी एम के 10 वैश्विक तत्व
- व्यक्तिगत तैयारी बाक्स

एक अलग पन्ने पर जो चित्र के दिए स्थानों के समान हों, निम्न बातों को लिख लें (*नम्बर न लिखें,* यह आपकी सहायता के लिए है ताकि आप उन्हें न भूलें, और **10 तत्वों के हाथ के इशारे की ओर न जाएं–** यह मॉल सत्र में समझाया जाएगा):

1. यू पी जी लक्ष्य / सी पी एम योजना
2. एक स्वस्थ कलीसिया / पाउच pouch 1–2–3–4–5
3. प्रार्थना और स्तुति से भरा जीवन
4. आत्मिक और भौतिक दो ओर की जवाबदेही
5. प्रवेश नीति
6. सुसमाचार प्रस्तुतिकरण
7. शिष्यता
8. कलीसिया निर्माण
9. अगुवों की बढ़ोत्तरी

10. प्रार्थना
11. खोज
12. सहयोगी
13. मंच
14. बाईबल का अधिकार
15. असाधारण प्रार्थना
16. बहुतायत से बीज बोना (सुसमाचार प्रचार)
17. साभिप्राय जन्माने वाली कलीसियाओं की स्थापना
18. स्थानीय अगुवाई
19. जन साधारण अगुवा
20. गृह कलीसिया
21. कलीसिया द्वारा कलीसिया स्थापन
22. तीव्र गति से कलीसिया का जन्म
23. स्वस्थ कलीसियाएं

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):

पूछें: "आप में से कितने लोग **एस सी** भूमिका से अवगत हैं? **एस सी** का अर्थ क्या होता है? इस भूमिका के विषय में आप क्या जानते हैं?"

मुख्य सत्र (35 मिनट) :

कहें: "**एस सी** भूमिका और जिस तरह हम लोगों को प्रशिक्षण देते हैं वह निरंतर बदल रहा और विकसित हो रहा है। यह सच है कि लोग किसी भी कार्य को अलग अलग ढंग से करते हैं, परन्तु जैसे समय गुजरेगा तो हम देख पाएगें कि कई बातें लाभप्रद होंगी और कई नहीं।

"**एस सी** व्यक्ति" के चित्र को लटका दें। कहें: "यह तीन वर्षों के परिश्रम का प्रतिफल है जिससे यह भूमिका सरल हो पाई और इसके द्वारा **एस सी** कार्य के विभिन्न भाग प्रदर्शित होते हैं। इस चित्र में आप हमारी समय सारिणी के कई भागों को देख पाएगें।"
जब आप बात कर रहें हों तो किसी से कहें कि वह उन टुकड़ों को बढ़ाए जो एस सी व्यक्ति के चित्र पर बैठेगा।

जो भाग वर्तमान में चित्र में दिए हुए हैं उनके बारे में संक्षिप्त में बताएं।

1. पूछें: "यह क्या है?" (टूटे हृदय की ओर इशारा करें)। एस सी शुरू होता है अपने लोगों के लिए "टूटेपन" के साथ।

   किसी को यह पढ़ने के लिए कहें:

   अ. यहेजकेल 22:28,30,31– प्रभु यहोवा यों कहता है – "मैंने उन में ऐसा मनुष्य ढूँढ़ना चाहा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे सामने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसका नाश न करना पड़े, परन्तु ऐसा कोई न मिला। इस कारण मैं ने उन पर अपना रोष भड़काया और अपनी जलजलाहट की आग से उन्हें भस्म कर दिया है, मैंने उनकी चाल उन्हीं के सिर पर लौटा दी है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।"

ब. मत्ती 9:35–38 – यीशु सब नगरों और गॉवों में फिरता रहा और उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता , और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। जब उसने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। तब उसने अपने चेलों से कहा, "पके खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे।"

कहें: "हृदय के बगल में जो बाक्स है वह "व्यक्तिगत तैयारी" को दर्शाता है, उसका अर्थ है किस तरह के व्यक्ति को परमेश्वर इस्तेमाल करना चाहता है– परमेश्वर के हृदय अनुसार स्त्री या पुरूष। (सभी को अपने अपने कागज के टुकड़े देखने को कहें)। दो बातें हैं जो इस बाक्स में जाते हैं– क्या कोई सोचता है कि उनके पास जो है वह "व्यक्तिगत तैयारी" के समान है?"

यदि वे अनुमान नहीं लगा पाए, तो जिनके पास नीचे लिखे पेपर हों उन्हें आकर उसे चिपकाने को कहें:

अ. प्रार्थना और स्तुति से भरा एक जीवन
ब. आत्मिक और भौतिक दो ओर की जवाबदेही।

2. कहें: "हम पहले ही एक सी पी एम योजना के 5 भागों के विषय में देख चुके हैं। आपकी 5 भाग वाली सी पी एम योजना के प्रत्येक भाग "फसल काटने के खेत" में होगी। कटनी के खेत" क्या है? यह वह जगह जहां आपके जन समूह रहते हैं – ये खोए हुए लोग हैं।

"उसके कमर से होते हुए एक बड़ा बाक्स है जो एस सी भूमिका के एक बड़े भाग को दर्शाता है।"

पूछें: "किन लोगों के पास वे टुकड़े हैं जो "कटनी के खेत" में जाते हैं?"

अ. प्रवेश नीति	ब. सुसमाचार प्रस्तुति	स. शिष्यता
ड. कलीसिया निर्माण	इ. अगुवों की बढ़ोत्तरी	

3. कहें: "यहां एक दूसरा छोटा बाक्स है जो केवल "घुटने तक ही गहरा" और यह "कटनी की शक्ति" है।

इन बातों पर आपको ध्यान देना चाहिए परन्तु यदि ये आपके लक्ष्य हैं तो आप फंस जाएगें और आपकी "कटनी का खेत" सुसमाचार कार्य की कमी से प्रभावित होगा।"
पूछें: "कटनी शक्ति के चार भाग क्या हैं? कौन सोचता है कि उसके पास एक है– यहां इसे लाकर चिपकाएं?"

अ. प्रार्थना	ब. सहयोगी	स. खोज	ड. मंच

4. कहें: "विग टेक बुलबुला दर्शाता है कि एक **एस सी** हमेशा अपने मन में क्या सोचता है।) उसके सिर के चारों ओर एक विग भी बनाएं। "इसके अंतर्गत मन में हमेशा दो बातों को रखने की बात आती है:

अ. यू पी जी या लक्ष्य क्षेत्र
ब. सी पी एम योजना (ध्यान दें मैंने "मुख्य योजना" नहीं कहा। अब "5 भाग वाली सी पी एम योजना" या "सी पी एम कटनी योजना" छोटे समय की है– यह तीन से छह महीनों पर केन्द्रित है जिसे आपको अभी करना है।)"

5. कहें: "सी पी एम की वैश्विक बातें (इस बाक्स को दिखाएं और शीर्षक लिखें)।"

1. बाईबल का अधिकार
2. असाधारण प्रार्थना
3. बहुतायत से बीज बोना (सुसमाचार प्रचार)
4. साभिप्राय जन्माने वाली कलीसियाओं की स्थापना
5. स्थानीय अगुवाई
6. जन साधारण अगुवा
7. गृह कलीसिया
8. कलीसिया द्वारा कलीसिया स्थापना
9. तीव्र गति से कलीसिया का जन्म
10. स्वस्थ कलीसियाएं

6.कहें: "स्वस्थ कलीसिया के लिए मार्गदर्शन (बाएं हाथ में)।" कलीसिया निर्माण के एक दिन पहले से इसका पुर्न अवलोकन करें।

7. कहें: "प्रार्थना / प्रार्थना के साथ चलना।" (पॉचो अंगुलियों को बढ़ाए हुए अपने हाथ को उठाएं)। पूछें: "क्या आपमें से किसी ने एक्टस 29 से प्रेयर वॉकिन्ग पढ़ा है? क्या आपको मालूम है पॉच अंगुलिया क्या दर्शाती हैं? (पॉच बातें जिसके लिए प्रार्थना करनी है और पॉच स्थान जिसके लिए प्रार्थना करनी है)।"

8. अन्त में, "विग टेक" बुलबुले की ओर इशारा करें। पूछें: "क्या किसी को पता है "विग टेक" का अर्थ क्या होता है? क्या बच गया है जिसे यहां जाना है? यू पी जी / सी पी एम योजना – एस सी हमेशा यह पूछना चाहता है "हमारे सभी लोगों को सुसमाचार सुनाने और एक जन्माने वाली कलीसिया में आराधना के लिए लाने के लिए हमें क्या करना पड़ेगा?" यहीं से सी पी एम योजना आएगी – एस सी क्या कर सकता है उससे नहीं, परन्तु सभी को सुनने के लिए क्या चाहिए।"

सारांश (5 मिनट):

कहें: "मेरी आशा है कि आप इस सप्ताह के दौरान एस सी भूमिका के इस चित्र का उपयोग करेगें ताकि आप यह देख पाएं कि जो कुछ हमने इस सप्ताह सीखा है वो कैसे एक दूसरे का पूरक है। विभिन्न प्रशिक्षक इस चित्र का उदाहरण दे सकते हैं, और हम रिक्त स्थानों को भरेगें और कुछ और टुकड़ों को जोड़ पाएगें।"

कड़ुवे तथ्यों का सामना
बी पी आई 2–7

(1घण्टा)

विषय और लक्ष्य:

इस सत्र में प्रतिभागियों के कलीसिया स्थापना सोच को चुनौती दी जाएगी। वे कुछ कलीसियाई बढ़ोत्तरी के आंकड़ों का अध्ययन करेगें और उस के द्वारा अपने कार्य के सम्बन्ध में निश्कर्श निकालेगें।

आवश्यक वस्तुएं:

- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- पोस्टर के चार्ट
- सही उत्तर देने वालों को पुरुस्कार देने के लिए चॉकलेट

प्रशिक्षक की तैयारी :

इस सत्र से एक दिन पहले प्रतिभागियों को स्मरण दिलाएं कि वे जिम कोलिन्स की पुस्तक गुड टु ग्रेट (बी पी आई तैयारी पाठयक्रम में) में पाए जाने वाले *"गुड टु ग्रेट"* ढांचे के नौ बिन्दुओं से अवगत रहें।

सत्र आरम्भ करने से पहले पोस्टर पेपर पर निम्न चार्ट बना लें:

चार्ट 1: अच्छा से महान / नई कलीसियाओं का जन्म

1. स्तर 5 के अगुवे
2. समूह में सही लोग
3. समूह में लोगों की सही भूमिका
4. (इसे रिक्त रहने दें और नम्बर 4 को लाल से लिखें)
5. अपनी योजना बनाएं
6. योजना के लिए कार्य (कठिन) करें
7. परिषद (रूकावट का समना हेतु)
8. "संसार में सर्वोत्तम" सिद्धान्त
9. गति बढ़ना

चार्ट 2:

	संयुक्त राज्य अमेरिका	दक्षिण एशिया
कलीसिया का औसत आकार क्या है?		
ज्यादातर पास्टर किस आकार की कलीसिया चाहते हैं?		
एक पूर्णकालिक सेवक की सहायता के लिए कितने लोग एक कलीसिया में होने चाहिए?		
कलीसिया के औसत आकार और एक पूर्णकालिक सेवक की सहायता के लिए कलीसिया में जितने लोग चाहिए, उसके आधार पर कितने "दो–कार्य" करने वाले पास्टर चाहिए?		

(यद्यपि ये आंकड़े रोचक और महत्वपूर्ण हैं– वे हमारे लक्ष्य नहीं हैं। यह हमारी सोच के प्रति चुनौती सत्र है–प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन्हें दिखाए कि बहुत से परमेश्वर के दासों को दो कार्य करने वाला होना चाहिए। परन्तु यदि कलीसिया स्वयं पोषित है तो उसे अगुवे की सहायता जरूर करनी चाहिए, स्वयं पोषित का अर्थ है एक 70 लोगों की कलीसिया जिन्हें दसवांश देना सिखाया गया है)

प्रवेश स्तरों को जाचें (15 मिनट):

पूछें: "आपमें से कितनों ने *"गुड टु ग्रेट"* या *"ब्रेकथ्रु चर्चेज"* पढ़ा है? आपमें से कितनों ने गृहकार्य के दौरान *गुड टु ग्रेट* के रिव्यु को पढ़ा है?"

किसी एक को चार्ट पर लिखने को कहें। मिली प्रतिलिपी को देखे बगैर प्रतिभागियों को *गुड टु ग्रेट* के नौ बिन्दुओं को लिखने को कहें।

कहें: "यदि हम अपने कार्य में उन्नति देखना चाहते हैं तो हमें इन नौ बातों के विषय मैं सोचना होगा।"

प्रतिभागियों को कहें कि वे संक्षिप्त रूप से प्रत्येक को समझाएं। (आशा यह है वे इस ढांचे से अवगत हो जाएगें। उन्हें निराश होने से बचाने के लिए जो वे बता रहें हैं उन्हें लम्बा न खीचें– केवल आवश्यक परिभाषा को लें।)

गुड टु ग्रेट / नई कलीसियाएं

1. स्तर 5 के अगुवे (निस्वार्थ, लक्ष्य पर केन्द्रित– कलीसिया में यह आवश्यक है)
2. समूह में सही लोग
3. समूह में लोगों की सही भूमिका
4. कड़ुवे तथ्यों का सामना

5. अपनी योजना बनाएं
6. योजना के लिए कार्य (कठिन) करें
7. परिषद (रूकावट का समना हेतु)
8. "संसार में सर्वोत्तम" सिद्धान्त
9. गति बढ़ना

मुख्य सत्र (35–40 मिनट) :

पूछें: "कडुवे तथ्यों से हम क्या समझते हैं?" कहें: "कडुवे तथ्यों का अर्थ है बातों की सत्यता– हमें इस सच्चाई का सामना करना पड़ेगा कि हमें कलीसिया स्थापित करना है।"

कडुवे तथ्य को समझाएं (चार्ट न. 2 को भरें, जब ऐसा कर रहें हों तो जो सही उत्तर दें उन्हें चॉकलेट दें।

1. पूछें: "अमरीका की कलीसियाओं में औसत उपस्थिति क्या है?" (लगभग 50)
   अ. पूछें: "क्या यह चकित करने वाला है? क्यों?"
   ब. पूछें: "प्रत्येक पास्टर किस आकार की कलीसिया चाहता है?" (सामान्यता 150 से अधिक)

2. पूछें: "एक पूर्णकालिक सेवक के सहायता के लिए एक कलीसिया में कितने लोगों की आवश्यक्ता है? (लगभग 70)
   अ. पूछें: "क्या यह चकित करने वाला है? क्यों?"

3. पूछें: " कलीसिया के औसत आकार और एक पूर्णकालिक सेवक की सहायता के लिए कलीसिया में जितने लोग चाहिए, उसके आधार पर कितने "दो–कार्य" करने वाले पास्टर चाहिए? (लगभग 50 प्रतिशत)
   अ. पूछें: "क्या यह चकित करने वाला है? क्यों?"

जिस देश में आप रहते हैं उसके लिए भी प्रयोग करें– आपको एवं प्रतिभागियों को बुद्धिमानी वाले अनुमान लगाने होंगें। (सामान्यतः भारत के लिए औसत आकार 35 का होगा। दक्षिण पूर्वी बंगलादेशियों ने 8–10 व्यस्को प्रति कलीसिया का आकार दिया।)

पूछें: "इन बातों के बीच क्या आप समस्या देख पाते हैं?"

- कहें:"कलीसिया के पास हमेशा बड़ी संख्या में दो कार्य करने वाले अगुवे चाहिए।"

- कहें:"यदि आप कलीसिया स्थापना के अन्य आदर्शों को लागू करना चाहतें हैं तो यह बहुत खर्चिला होगा और 40–50 से ज्यादा बड़ी कलीसिया बनाना कठिन होगा।"

- कहें:"यदि संसार में कलीसिया का *औसत* आकार 50 है तो इसका अर्थ है *आधे से ज्यादा* कलीसियाओं में 50 से *कम* लोग चर्च आते हैं– कई कलीसियाओं में तो केवल 15,20,30,40 सदस्य ही हैं। अमरीका की ज्यादातर कलीसियाओं में 50 से *कम* लोग हैं।"

कहें:"**सी पी एम** शायद आसान न हो परन्तु यह तो हमें मानना ही होगा कि यदि हम एक या दो कलीसिया आरम्भ करते हैं तो यह और भी कठिन होगा– एक कलीसिया को औसत आकार से बढ़ाने की कोशिश करें।"

- कहें:"एक छोटी कलीसिया को चलाना आसान है। जब एक कलीसिया में केवल 15 लोग हों तो उसे चलाना बहुत आसान है। जब संख्या 30 पहुँच जाए तो यह कठिन हो जाता है। जब 50 लोग हों जाएं तो यह और भी कठिन हो जाता है। एक कलीसिया में जितने अधिक लोग होंगे उसे चलाना उतना ही कठिन होगा।"

- कहें:"अगले आकार की ओर में बढ़ना दिन प्रतिदिन कठिन ही होता जाता है।"

  - कहें:"एक कलीसिया को औसत आकार से बढ़ाने में कौन सी समस्या आती है?" (आर्थिक, अन्तर्वैयक्तिक, बदनामी, राजनीति, इत्यादि)

  - कहें:"क्या कलीसिया में 40 तक उपस्थिति लाना आसान है?" (आसान तो है पर उतना आसान भी नहीं)

  - कहें:"इसे स्वीकार करें, अधिकतर लोगों (पास्टर्स) की निपुणता उन्हें एक कलीसिया को 70 से अधिक बढ़ाने में बाधक हो सकती है।"

- कहें: "यदि कलीसिया 15–30 लोगों के होने के बाद नई कलीसिया बन जाए तो यह कैसे सहायक होगा?"

  - एक छोटी कलीसिया को जन्म देने में आसानी होती है।

  - एक छोटी कलीसिया के अगूवे को बहुत शिक्षा की जरूरत नहीं है।

  - यदि आप अपनी कलीसिया को 15–30 सदस्य के बाद बढ़ाना छोड़कर नई कलीसियाएं बनाएगें तो आप सी पी एम पर तेजी से पहुँच सकते हैं।

यदि समय हो तो कोई और प्रश्न पूछ सकते हैं या कलीसिया बढ़ोत्तरी के तथ्यों को बता सकते हैं।

✷✷अपनी स्थापना के प्रथम 15 वर्षों में कलीसिया तेजी से बढ़ती हैं।(मैक गेवरोन)

✷✷एक क्षेत्र में जब ज्यादा कलीसियाएं होंगी तो औसत उपस्थिति भी अधिक होगी। (मैक गेवरोन)

यह अच्छा कारण है कि क्यों कलीसियाओं को नई स्थापना के लिए तैयार रहना चाहिए।

(✷✷कई और कडुवे तथ्य भी हैं परन्तु ये इस सत्र के लिए मुख्य हैं– आपको बहुत सारे रोचक और महत्वपूर्ण तथ्यों से निराश नहीं करना है)

सारांश (5–10 मिनट):

निम्नलिखित बात कहेंः "कुछ लोगों ने कहा है, "परमेश्वर का राज्य छोटी कलीसियों के पीठ पर चलता है।" इसका अर्थ क्या होता है? इसका अर्थ होता है कि संसार की कई कलीसिया छोटी हैं! कैसे परमेश्वर कलीसियाओं में कार्य करता है जब हम इसके कड़ुवे तथ्यों को जानते हैं तो हम समझते हैं कि स्वाभाविक तरीका है छोटी कलीसिया– हजारों हजार की संख्या में!"

"**सी पी एम** कार्य कलीसिया शुरूआत करने का एक स्वाभाविक तरीका है– कलीसिया स्थापित करने के लिए यह परमेश्वर का तरीका है.... लगभग सभी कलीसिया छोटे से ही शुरू होती है... और बहुत सी कलीसिया छोटी ही रह जाती हैं... तो फिर क्यों अगुवों को धन उठाने के लिए इतनी मेहनत करनी चाहिए जब ज्यादातर कलीसिया छोटी ही रह जाएगीं!"

क्या करना परमेश्वर के नाम के लिए अधिक महिमा लाएगाः कई छोटी कलीसियाओं को बनाना या एक या दो बड़ी कलीसिया बनाना? यह याद रखें कि **सी पी एम** क्या है? यह है **कलीसिया** द्वारा कलीसिया स्थापना।"

"क्या होगा यदि प्रत्येक कलीसिया प्रति वर्ष एक कलीसिया की स्थापना करेगी? अपनी कलीसिया के लिए यह प्रार्थना करें!"

दूसरे दिन की सूचना प्राप्त करना

(15 मिनट)

प्रतिभागियों को चार चार के समूह में बॉट दें। कहें: "जिस बात से आपने आज चुनौती पायी उसे बताएं। जब आप जो सीख रहें हैं उसे समझने और अपने जीवन में अपनाने की कोशिश कर रहें तो एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें।"

बड़े समूह में आ जाएं। अगर आपके समूह में से कोई कुछ बताना चाहता है तो पूछें। इन्हें अलग अलग रंग से बुचर पेपर पर लिख लें।

पूछें: "यह नाम **बी पी आई** कहां से आया?"

पूछें: "**एस सी भूमिका** के विषय में आपको क्या स्मरण है?"

गृहकार्य:

पूछें: "कलीसिया के पॉच उददेश्य क्या हैं?"

कहें: "सुबह में अपने गृह कलीसिया में आराधना करने के नए तरीकों के बारे में सोचें, और क्लास के बाद सहभागिता करना, सुसमाचार प्रचार करना, सेवकाई करना, और शिष्यता करना न भूलें।"

कहें: "गृहकार्य मार्गदर्शिका में बपतिस्मे के विषय में प्रेरितों के काम के परिच्छेद को आज रात पढ़ें।"

गृहकार्य मार्गदर्शिका से प्रकरण अध्ययन 1 और 2 भी पढ़ें। प्रत्येक प्रकरण अध्ययन में एस सी की भूमिका को देखें।"

तीसरे दिन के लिए एच सी बाईबल परिच्छेद:

मत्ती 25:14–30, लूका 19:11–27

तीसरे दिन(शुरूआत) का अवलोकन

(10 मिनट)

सामने खड़े होकर चुटकी बजाएं। पूछें: "प्रत्येक बार जब मैं चुटकी बजाता हूँ तो क्या होता है?"

पूछें: "कल आपने कलीसिया के पॉच उददेश्यों का किस प्रकार अभ्यास किया?"

"**एस सी भूमिका / एस सी व्यक्ति** का संक्षिप्त पुर्न अवलोकन

दिन के लिए जो सूचना देनी हों दें

प्रार्थना निवेदन पूछें। प्रार्थना करने के बाद सत्र आरम्भ करें।

हथौड़ा (प्रेरितों के काम में बपतिस्मे का तरीका)
बी पी आई 3–1

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी प्रेरितों के काम पुस्तक को देखेगें कि लोगों ने किस प्रकार सुसमाचार सुना, विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। इन विषयों पर कई गलत धारणाएं पाई जाती हैं, और इस सत्र में हम उन्हें हटाएगें।

आवश्यक वस्तुएं:
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- पोस्टर पेपर जो आधा फाड़ा गया हो और जिस पर वचन लिखा हो
- स्थाई मार्कर

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
विधार्थियों को एक दिन पहले स्मरण दिलाएं कि वे **बी पी आई** तैयारी पाठयक्रम बपतिस्में पर दिए पदों को पढ़ें।

समूहों के लिए पोस्टर पेपर के आधे पन्ने को तैयार करें। यदि पर्याप्त प्रतिभागी हों तो पॉच समूह बनाएं। प्रत्येक पन्ने पर निम्नलिखित पदों में से दो पद संख्या लिख लें। तब प्रत्येक पन्ने पर इस सूची "सुना", "विश्वास किया", और "कब बपतिस्मा लिया" को लिख लें।

प्रेरितों के काम 2:37–41	प्रेरितों के काम 8:12–13 (5–13)
प्रेरितों के काम 8:36–38	प्रेरितों के काम 9:10–12, 17–19
प्रेरितों के काम 10:47–48	प्रेरितों के काम 16:13–15
प्रेरितों के काम 16:27–34	प्रेरितों के काम 18:5–8
प्रेरितों के काम 19:1–5	प्रेरितों के काम 22:14–17

सत्र शुरू होने से पहले, श्वेत पट पर लिखें:

सुना विश्वास किया कब बपतिस्मा लिया?

प्रवेश स्तरों को जाचें (15 मिनट):
कहें: "बहुत प्रश्न उठते हैं जब बात बपतिस्मे की आती है। किसी को कब बपतिस्मा लेना चाहिए? क्या उद्धार के लिए बपतिस्मा आवश्यक है? छोटे बच्चों को बपतिस्मा देना सही है? हमें बपतिस्मा किस तरह देना चाहिए डुबाकर, छिड़ककर या किसी और तरीके से? कौन बपतिस्मा दे सकता है?

कहें:"सही तरीके से बपतिस्मा देने के कई विचार पाये जाते हैं।"

दो अंगुली ऊपर उठाकर पूछें: "यह किसे दर्शाता है? (अधिकार की दो पटरियां क्या क्या हैं?)

कहें: "परमेश्वर का वचन हमारा स्रोत है, हमारी उत्तर देने वाली पुस्तक है, हमारी निर्देश पुस्तिका है। इस सत्र में हम अपनी निर्देश पुस्तिका में जाकर यह देखेगें कि ***परमेश्वर*** बपतिस्मे के विषय में क्या कहता है।"

गृह कार्य का पुर्न अवलोकन करें ताकि यह मालूम हो कि लोगों ने क्या सीखा है। पन्ने पर दिए प्रश्नों से कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निकालें।

<u>बपतिस्मा गृहकार्य अध्ययन में ये पद थे। इसे पढ़ने में समय न लगाएं परन्तु निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें।</u>

- मत्ती 3:13–17
- प्रेरितों के काम 8:26–40
- रोमियों 6:3–5
- प्रेरितों के काम 2:37–41
- प्रेरितों के काम 16:11–15,25–34
- 1 कुरिन्थियों 1:13–17

इन प्रश्नों को पूछें:

- "नए नियम में आपने बपतिस्मे का क्या तरीका पाया?"
- "नए नियम के परिच्छेदों के आधार पर बपतिस्मे का क्या महत्व पाया?"
- "उन्हें आप क्या कहेगें जो बपतिस्मे को महत्वपूर्ण नहीं मानते?"
- "आप उन्हें क्या कहेगें जो यह मानते हैं कि उद्धार के लिए बपतिस्मा आवश्यक है?"

मुख्य सत्र (40 मिनट) :

प्रतिभागियों को पॉच समूहों में विभाजित कर दें (प्रतिभागियों की संख्या और पदों के साथ कितने पन्ने तैयार हैं के अनुसार कम या अधिक भी रख सकते हैं)। प्रत्येक समूह को एक पन्ना दे दें जिस पर पद लिखा है। उन्हें 10 मिनट का समय दें ताकि वे पदों को पढ़ें और सुनने, विश्वास करने और कब उन्होंने बपतिस्मा लिया इसे वे देख पाएं।

प्रत्येक समूह को बारी बारी से प्रस्तुत करने को कहें (प्रत्येक समूह से ऐसे जन को प्रस्तुत करने को कहें जिसने अब तक प्रस्तुतिकरण नहीं किया है)। किसी से कहें कि जो बताया जा रहा है उसे श्वेत पट पर लिख दे।

नीचे कुछ प्रश्न / नोटस दिए हैं जो प्रशिक्षक को प्रत्येक पदों के मुख्य बिन्दुओं को बताएगी (समूह के बाद रिर्पोट दी जाएगी)। यदि आप या कोई अन्य के पास अपनी सेवा में से इन परिस्थितियों के विषय में कुछ याद हो तो उसे बताएं।

प्रेरितों के काम 2:41	क्या सभी सिद्ध थे? क्या आप सोचते हैं कि उन्होंने बपतिस्मा देने में सहायता की होगी?
प्रेरितों के काम 8:12–13	शमौन कितना अदभुत व्यक्ति था?
प्रेरितों के काम 8:36–38	फिलिप्पुस और खोजा– खोजा कितनी शिष्यता ग्रहण कर चुका था जब उसको बपतिस्मा देने वाला गायब हो गया?
प्रेरितों के काम 9:18	शाऊल / पौलुस एक सताने वाला था परन्तु उसे तुरन्त बपतिस्मा दिया गया
प्रेरितों के काम 10:47–48	रोमी सुबेदार–अन्यजाति द्वारा पालन किया गया तरीका– पतरस को केवल उसके घर जाने के लिए तीन दर्शन देखने पड़े।
प्रेरितों के काम 16:13–15	लुदिया– कपड़े बेचने वाली थी। क्या आपके देश में व्यवसायिओं का भरोसा करने लायक अच्छा नाम है?
प्रेरितों के काम 16:33	दारोगाः एक सताने वाला था– कम से कम उसने उन्हें पीटा था।
प्रेरितों के काम 18:8	क्रिसपुस– आराधनालय का सरदार– याजकीय समुदाय परन्तु तुरन्त मसीह के साथ पहचान और उसे बपतिस्मा दिया गया
प्रेरितों के काम 19:1–5	दिगभ्रमित मसीही परन्तु पुनः बपतिस्मे के लिए इच्छा
प्रेरितों के काम 22:14–17	अब क्यों देर करता है?उठ बपतिस्मा ले...

सारांश (5 मिनट):

पूछें: "क्या आप इस नमूने को अपनी सेवा में देखते हैं?"

कहें: "तुरन्त बपतिस्मे के लिए कोई स्पष्ट आदेश नहीं है। बपतिस्मा लेने से पहले यह समझना आवश्यक है कि बपतिस्मा क्या है।"

कहें: "बपतिस्मा आज्ञाकारिता की बात है। इसका अर्थ यह नहीं कि आज्ञा मानने से पहले हमारे सभी पाप मिट जाने चाहिए। हमें सावधान रहना चाहिए कि हम लोगों को विश्वास करने के तुरन्त बाद बपतिस्मा लेने के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए रूकावट नहीं बनना चाहिए।"

कहें: "यदि आपके क्षेत्र में यह नमूना नहीं पाया जाता, तो आप बपतिस्मे के बारे बताने के लिए इन वचनों का उपयोग कर सकते हैं। पवित्र आत्मा को अवसर दें कि वह बाईबल द्वारा लोगों से बात करे, आप लोगों से वाद विवाद न करें।"

पूछें: "हमारे अधिकार की दो पटरियां क्या हैं (तर्जनी और बड़ी अंगुली को ऊपर उठाएं)?"

कहें: "यदि हम चाहते हैं कि पवित्र शास्त्र और पवित्र आत्मा के अनुसार परमेश्वर की महिमा हमारे जन समूह द्वारा फैले तो, सबसे तेज तरीका क्या है?"

कहें: "हम सी पी एम की बात कर रहें हैं क्योंकि जैसे लोग तेजी से मसीह के पास आएं, तो परमेश्वर की महिमा एक जन समूह पर वैसे ही भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भरपूर है। हम इसलिए भी सी पी एम की बात करते हैं यह नए नियम एवं यीशु की शिक्षा पर आधारित है।"

कहें: "अगले कुछ दिनों में, हम बाईबल एवं सी पी एम प्रकरणों के तरीकों का अध्ययन करेंगें जिन्हें "सर्वोत्तम तरीकों" के रूप में जाना जाता है। इस प्रशिक्षण के दौरान, हमारी यह आशा और प्रार्थना है कि इन सत्रों के द्वारा परमेश्वर आपको अपने लक्ष्य समूह के लिए एक सी पी एम विकसित करने में सहायता करें।"

सी पी एम के लिए संसाधन (पश्चिम के लोग)
बी पी आई 3–2

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः

इस सत्र में प्रतिभागियों को उन संसाधनों से अवगत कराया जाएगा जो उनके क्षेत्र के अंतर्गत उपलब्ध हैं ताकि उससे उन्हें अपने 5 भाग वाली **सी पी एम** योजनाओं को बनाने में सहायता मिल सके। यह पाठ योजना आई एम बी के लिए है, परन्तु आप इसी के समान विचार को अन्य संस्थाओं से भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

आवश्यक वस्तुएं:

- पोस्टर पेपर और मार्कर
- चिपकाने वाला टेप
- कोई भी ऐसा दस्तावेज जिसमें सम्पर्क और संधटन संबंधी जानकारी पाई जाती हो (सुरक्षा के दृष्टि से इन दस्तावेजों को इस पाठ योजना से अलग रखना चाहिए)
- प्रश्नोत्तर के लिए चॉकलेट (जब किसी ने सही उत्तर दिया तो उसे चॉकलेट दें)।

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):

नीचे लिखी जानकारी के साथ पोस्टर पेपर पर चार्ट बनाएं:

चार्ट1: पोस्टर पेपर का एक टुकड़ा लें और उसे बगल से पलट दें (प्रकृति छवि के लिए)। दस्तावेज से प्रथम खण्ड की जानकारी ऊपर लिखें या चिपकाएं। तब अन्य तीन खण्ड के साथ भी ऐसा ही करें ताकि यह इस प्रकार दिखे:

सम्पर्क और संधटन सूचना

माध्यम विवरण　　संधटन समूह विवरण　　सम्पर्क समूह विवरण

नीचे स्थान खाली रखें ताकि समूह विवेचना के पश्चात वहां उत्तर लिखा जा सके।

चार्ट 2, 3, और 4: प्रत्येक समूह के लिए तीन अलग अलग पोस्टर पेपर पर संगठन संबंधी चार्ट बनाएं। (प्रत्येक समूह के लिए सूचना के लिए वर्ड डाक्यूमेंटस उपयोग करें।)

उदाहरणः

सम्पर्क नीति दल

भूमिका	मौखिक और कहानी बताना	पवित्र शास्त्र अनुवाद

प्रवेश स्तर जॉचें (15 मिनट):

पूछेंः एस सी भूमिका के विषय में सोचें। "कटनी शक्ति" के अन्तर्गत सूचीबद्ध चार बातें किसे याद है?

प्रार्थना मंच खोज सहभागी

पूछेंः "यदि आपको **एस सी भूमिका** का चित्र याद है तो "कटनी शक्ति" में **एस सी** का पैर कितना गहरा था?(घुटने तक) "कटनी खेत" की क्या बात है? (कमर तक) ऐसा क्यों है?

कहेंः "**एस सी** होने के कारण हम चाहते हैं कि हमारा अधिकतर समय कटनी खेत में ही व्यतीत हो, परन्तु हम कटनी शक्ति को भी अपने संग कटनी खेत में निमंत्रण (तंत्र और संगठन) देते हैं। इसके अंतर्गत प्रार्थना, मंच और अनुसंधान द्वारा हमारी सहायता तथा हमारी **सी पी एम** योजना (हमारे कटनी खेत में वास्तव में प्रवेश करना और दूसरों को हमारे 5 भाग की **सी पी एम** योजना का प्रशिक्षण देना) को लागू करने में उनका सहयोग।"

समूह को दो दो में विभाजित कर दें। कहेंः "**विग टेक** भावना उपयोग करके, उन कुछ बातों की सूची बनाएं जिन्हें कटनी शक्ति द्वारा करना होगा ताकि यह सुनिश्चित्त किया जा सके कि आपके लक्ष्य समूह के सभी लोग सुसमाचार समझने लायक ढंग से जाने और स्थानीय कलीसिया में भाग ले।" (उन्हें पॉच मिनट का समय दें)

किसी से कहें कि वह सामने आकर पोस्टर पेपर पर उन बातों को लिखे जो लोग बता रहें हों।

मुख्य सत्र (30 मिनट) :

*(हो सकता है कुछ **जी सी सी** के लोग इस सत्र में उपस्थित हों– अतः **आई एम बी** के विषय में अपने शब्दों को समायोजन कर लें क्योंकि हो सकता है कि वे हमारे **आई एम बी** संसाधन का प्रयोग न कर पाऐं।)*

कहेंः "हमारा क्षेत्र यह स्वीकार करता है कि इनमें से कुछ क्रियाकलाप और परियोजनाओं के लिए बहुत अधिक समय और शक्ति की आवश्यक्ता होती है अतः इसे उन्हीं लोगों द्वारा करना चाहिए जो इस क्षेत्र में दक्ष हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, सम्पर्क एवं संधटन दल को विकसित किया गया है।"

पूछेंः "क्या किसी को पता है कि सम्पर्क नीति दल और संधटन नीति दल का संचालन कौन करता है?"

एक उप दल भी पाया जाता है जिसे कहा जाता है "कास्ट(**CAST**)" (सृजनात्मक कला और सेवा दल)

पूछें: "इन दलों से किस तरह की सहायता मिल सकती है?"

जब प्रत्युत्तर खत्म हो जाए, तो चार्ट नम्बर 1 लटका दें जिसे आपने पहले ही सम्पर्क और संधटन नीति दल के लिए बनाया था। संक्षिप्त तौर पर सूचनाएं बताएं।

किसी लिखने वाले को आगे आने को कहें। तब उन बातों की सूची पर वापस जाएं जिन्हें समूह ने सुझाया था कि उन्हें अपनी **सी पी एम** योजना में कटनी शक्ति को सम्मिलित करने के लिए क्या करना होगा। समूह को उस सूची को देखने और यह निर्णय करने का समय दें कि किस कार्य में यह दल सहायता कर सकता है। लिखने वाले को पोस्टर नम्बर एक पर उन्हें उपयुक्त उप–दल के नीचे लिखने को कहें। (कुछ उदाहरण: चलकर प्रार्थना करने वाला दल– संधटन दल, जन समूह की प्रार्थना निवेदन या स्तुति बताना – माध्यम दल, जन समूह के लिए स्थानीय संगीत विकसित करने में सहायता करें – सम्पर्क दल)।

जब आप उनके कुछ उदाहरणों को चार्ट नम्बर 1 पर लिख चुके हों, तब आप चार्ट 2, चार्ट 3 और चार्ट 4 की सूचना को बताएं। एक बार में सिर्फ एक ही पोस्टर लटकाएं और दल भंग एवं उन तरीकों को बताएं जो उन दलों में प्रत्येक भूमिका **एस सी** की सहायता कर सकता है। उनके द्वारा बनायी सूची से भी उदाहरण लें।

सारांश (5 मिनट):

पोस्टर उतार कर प्रतिभागियों से जो सूचना बतायी गयी हैं उनसे संबंधित सवालों को पूछें। सही उत्तर के लिए चॉकलेट दें। निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें:

1. "आप एक स्वास्थ्य प्रशिक्षण / **सी पी** कार्यक्रम विकसित कर रहें हैं ताकि राष्ट्रीय विश्वासी गॉवों तक पहुंच सके। आपके पास कुछ साधारण रूपरेखा होनी चाहिए ताकि उस तथ्यज्ञान को चित्र द्वारा समझाया जा सके। इसमें कौन सहायता कर सकता है? (सम्पर्क दल – **डी पी**)

2. "आप एक व्यापक वितरण परियोजना करना चाहते हैं और आपको इसकी योजना बनाने के लिए और लोगों को इस कार्य में जोड़ने के लिए सहायता की आवश्यक्ता है। कौन सा दल इसमें सहायता कर सकता है?

3. "आपका जन समूह ड्रामा के माध्यम से कहानियों को बताएगा। आपको इसे सीखना है कि कैसे इसका इस्तेमाल सुसमाचार प्रचार के लिए किया जाए। कौन सा दल इसमें सहायता कर सकता है?

4. "आपके पास एक महान कहानी है कि कैसे परमेश्वर हमारी सेवा में या स्वयंसेवको के समूह के साथ कार्य कर रहा है। कौन सा दल सहायता कर सकता है? (माध्यम नीति – चेले **सी**)

5. "आप देखना पसन्द करेगें कि आपके जन समूह का हमारी क्षेत्रीय वेब साइट पर एक वेब मौजूद हो। कौन सा दल सहायता कर सकता है? (माध्यम नीति – माइक **एम**)

6. "अपने स्टॉस(STAS) के लिए आपको संसाधन एवं विडियो चाहिए? (VPN Compass site-Mobilization Section, or Go 2SouthAsia - स्रोत. छापने योग्य, IMB.org. स्रोत)"

प्रश्न पूछने के बाद ध्यान दें सभी लोग ई–मेल पता जानते हो क्योंकि ये दल कम्पास वेबसाईट में मोबिलाईजेशन के नीचे पाए जाते हैं। वे सम्पर्क सूचना के साथ एक दस्तावेज पाएगें।

सी पी एम के लिए संसाधन (अपने देश के लोग)
बी पी आई 3–2

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी अपने 5 भाग वाली **सी पी एम** योजना के लागूकरण में संभव संसाधन एवं सहयोग के लिए कटनी शक्ति को देखना शुरू करेगें। इस सत्र के दौरान पश्चिमी / बाहरी लोग दक्षिण एशियाई लोगों से अलग किये जाएगें क्योंकि वे अपनी **"सी पी एम योजनाओं"** के लागूकरण के लिए संसाधन ढूंढने के लिए भिन्न परिस्थिति का सामना करेगें।

आवश्यक वस्तुएं:
- पोस्टर पेपर और मार्कर
- चिपकाने वाला टेप

प्रशिक्षक की तैयारीः
इस पाठ को पूरा पढ़ लें ताकि आप समूहन सुप्रचालन विज्ञान से और इसे किस तरह उपयोग करना है से अवगत हो जाएं।

प्रवेश स्तरों की जॉच (15 मिनट):
पूछें: अपने "**एस सी व्यक्ति**" के विषय में सोचें। "कटनी शक्ति" के अंर्तगत सूचीबद्ध चार बातें किसे स्मरण हैं?

प्रार्थना मंच खोज सहयोगी

कहें: "**एस सी** होने के कारण हम अपना अधिकतर समय 'कटनी खेत' में लगाना चाहते हैं, परन्तु हम 'कटनी शक्ति' को हमारे साथ होकर 'कटनी खेत' में आने का निमंत्रण भी देते हैं। उसके कुछ भाग हमारी **सी पी एम** योजनाओं के लागूकरण के लिए प्रार्थना, मंच, खोज, और सहयोग द्वारा सहायता करेगें– वास्तव में हमारे कटनी खेत में आना और हमारी 5 भाग वाली **सी पी एम** योजना में दूसरों का प्रशिक्षण देना।

सभी लोगों को एक एक कागज का टुकड़ा निकालने को कहें। कहें: "एक **'विग टेक'** विचार भाव को इस्तेमाल करके उन सभी बातों की सूची बनाएं जिन्हें करना जरूरी है ताकि आपके लक्ष्य समूह के सभी लोग सुसमाचार समझ आने वाले ढंग से सुन लें और स्थानीय कलीसिया में सहभागी हों।" उन्हें पॉच से दस मिनट का समय दें।

जब लोग उन बातों को बताएं जो उन्होंने लिखी है तो किसी से कहें कि वह सामने आकर उन बातों को पोस्टर पेपर पर लिखे। जब प्रत्युत्तर समाप्त हो जाए, तब आप इन बातों को व्यापक सुसमाचार प्रचार, रेडियो प्रसारण, संसाधन विकास, अनुवाद परियोजना, प्रार्थना चाल, शिष्यता आदि श्रेणियों में विभाजित कर दें।

मुख्य सत्र (35 मिनट):

प्रतिभागियों को तीन या चार के समूह में विभाजित कर दें। पोस्टर पेपर उन्हें बॉट दें। जिन श्रेणियों को आपने पाया उसके आधार पर प्रत्येक समूह को कुछ श्रेणियॉ दे दें। प्रत्येक समूह को अपनी श्रेणी लिखने को कहें और तब आपके क्षेत्र में जितनी भी महान आज्ञा संसाधन हैं उन्हें सूचीबद्ध करें। शुरूआत करने के लिए आप उन्हें सलाह दे सकते हैं। यह एक स्थानीय कलीसिया हो सकती है जिससे वे जुड़े हुए हैं या एक संस्था जैसे कैम्पस क्रुसेड –जो जीजस फिल्म बॉटती है–, वाई डब्ल्यू ए एम, और अन्य देशों या क्षेत्रों से स्वयंसेवक।

पॉच मिनट के बाद सभी समूह को रिर्पोट प्रस्तुत करने को कहें। दूसरों को इस सूची में जोड़ने की इजाजत दें यदि वे पाते हैं कि एक संसाधन छूट गया है।

सारांश (10 मिनट):

कहें: "याद रखें, जब हम मसीह में अपने भाइयों एवं बहनों के साथ मिलकर कार्य करते हैं तो परमेश्वर की महिमा होती है। मसीह की देह के एक अंग होने के कारण हम में से कोई भी अपने आप में पूर्ण नहीं है। ऐसी बहुत कलीसियाएं और संस्थाएं हैं जिनके पास वे दान हैं जो आपके पास नहीं है। अपने आप से पूछें, 'इस जन समूह को सुसमाचार सुनाने के लिए क्या आवश्यक है, यह तुरन्त आपको संसाधन के लिए अपने से बाहर देखने के लिए बाध्य करेगा।"

कहें: "अपनी 5 भाग वाली **सी पी एम** योजना में पाए जाने वाले बातों के आधार पर, कुछ मिनट लेकर आप एक सहयोगी चुन लें और उसे बताएं कि आप कौन से दूसरे मसीहियों को चाहते हैं कि वे कटनी खेत में आकर आपकी सहायता करें। तब कुछ समय लेकर एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें।"

सी पी एम योजना के 5 भाग: सुसमाचार प्रस्तुतिकरण
बी पी आई 3–3

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्य:
इस सत्र में प्रतिभागी अपनी प्रवेश नीति से एक सम्पूर्ण सुसमाचार प्रस्तुतिकरण में कैसे बदलें, इसे सीखेगें। वे कई सुसमाचार प्रस्तुतिकरणों का मूल्यांकन यह जानने के लिए करेगें कि कौन सा प्रस्तुतिकरण उनके जन समूह के लिए सटीक होगा।

आवश्यक वस्तुएं:
- पोस्टर पेपर और मार्कर
- चिपकाने वाला टेप

प्रशिक्षक की तैयारी:
इस पाठ को पूरा पढ़ लें ताकि आप समूहन सुप्रचालन विज्ञान से और इसे किस तरह उपयोग करना है से अवगत हो जाएं।

एक पोस्टर बनाएं जिस पर लिखा हो, उपस्थिति /= उद्धोषणा

प्रवेश स्तरों की जॉंच (15 मिनट):
पूछें: "**सी पी एम** योजना का प्रथम भाग क्या है?" (प्रवेश– हम कैसे यीशु के बारे बात करना शुरू कर सकते हैं)

पूछें: "दूसरा भाग क्या है?" (सुसमाचार प्रस्तुतिकरण– मैं कैसे किसी व्यक्ति को यह अवसर दे सकता हूँ कि वह मसीह को प्रभु करके स्वीकार करे / यीशु का अनुयायी बन जाए)

चुटकी बजाना शुरू करें और पूछें: "'**एस सी व्यक्ति**' का हृदय क्या है?" – चुटकी बजाते रहें– 2 पतरस 3:9 बोलें।

कहें: "हमें यह बात सुनिश्चित करनी चाहिए कि जब हम लोगों से बात करें तो हम सुसमाचार प्रस्तुति तक जरूर पहुंचें। **उपस्थिति उदधोषणा नहीं है** (इन शब्दों को लिखा पोस्टर पेपर लटका दें और वह प्रशिक्षण के दौरान वहीं दिवाल पर लगा रहे)। हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि जब आप एक खोए व्यक्ति को सुसमाचार सुना रहें हैं तो उन्हें प्रत्युत्तर देने का भी अवसर दें।"

जितनी भाषा वहां पाई जाती है उन सभी भाषाओं में रोमियों 10:17 पढ़ें। पछें: "क्या आप इस पद एवं सुसमाचार प्रस्तुतिकरण के बीच संबंध देख पाते हैं?"

मुख्य सत्र (45 मिनट):

श्वेत पट पर लिखने के लिए किसी को आगे आने को कहें।

पूछें: "जब हम सुसमाचार बताते हैं तो किन बातों को बताना आवश्यक है (लिखने वाले को इन्हें बोर्ड पर लिखने को कहें)?"

इन में कुछ बातें सम्मिलित कर सकते हैं:

- किस परमेश्वर की बात हम कर रहे हैं।
- मनुष्य एवं परमेश्वर के बीच टूटा संबंध।
- पाप के कारण अलगाव।
- यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान।
- यीशु ही एकमात्र मार्ग है।
- पश्चताप आवश्यक है।

जब प्रतिभागी सूची से सन्तुष्ट हो जाएं, पूछें: "क्या और कुछ बाकी है जिसे सुसमाचार प्रस्तुतिकरण में होना चाहिए?" इस बात को समझाएं कि जब हम सुसमाचार सुनाते हैं तो हमें हमेशा लोगों को प्रत्युत्तर देने का अवसर देना चाहिए।

उन्हें चार या पॉच छोटे समूहों में बॉट दें (यदि पॉच से ज्यादा समूह हों तो रिर्पोट प्रस्तुत करने में **ज्यादा समय** लग जाएगा)। पोस्टर पेपर के आधे पन्नों को उन्हें दे दें। उन्हें सुसमाचार प्रस्तुतिकरण के कुछ तरीकों को लिखने को कहें जो उन सभी बातों का समावेश हो जो हमने बोर्ड पर लिखी है।

जब प्रतिभागी यह कर रहें हों तो बोर्ड को मिटाकर इसे लिखें:

1. प्रवेश नीति से सुसमाचार प्रस्तुतिकरण में मैं कैसे जाउॅं?
2. मैं कैसे सुसमाचार के कठिन भागों को प्रासंगिक संस्कृति के अनुरूप समझाउॅं?
3. मैं किस प्रकार ऐसा निमंत्रण दूं जो सुनने वाले व्यक्ति को ईमानदारी से सुसमाचार स्वीकार या अस्वीकार करने का अवसर दे सके?
4. मुझे क्या करना चाहिए यदि वे यीशु के पीछे चलने को तैयार हों? क्या मैं इसके लिए उनकी अगुवाई के लिए तैयार हूॅं?

पॉच मिनट के बाद छोटे समूहों को वापस बुलाकर मिला दें। जिन बातों को उन्होंने लिखा है उन्हें बताने को कहें (इसे पॉपकॉर्न तरीके से करें, प्रत्येक समूह को अपनी सूची न पढ़ने दें)।

अब समूहों को अपने पोस्टर पेपर उलटने को कहें, ताकि वे उस पर उस एक सुसमाचार प्रस्तुतिकरण के तरीके को लिख लें जिसका वे मूल्यांकन करेगें। शायद आपको उन्हें एक संक्षिप्त उदाहरण बताना पड़ेगा। उन्हें श्वेत पट को देखने को कहें और उन प्रश्नों को बताएं जो उन्हें उस तरीके से पूछने होगें जिसे उन्होंने चुना है। इसे करने के लिए उन्हें 10 मिनट का समय दें।

समूह को रिर्पोट देने को कहें और पोस्टर को दिवाल पर चिपका दें।

सारांश (5 मिनट):

कहें: "हम सुसमाचार बताने के कई तरीकों को देख चुके हैं। आशा है कि इनसे आपको यह स्पष्ट रूप से पता चल गया होगा कि कौन सा तरीका आपके जन समूह में सुसमाचार सुनाने के लिए उपयुक्त है और किस तरीके को नए विश्वासी को आसानी से सिखाया जा सकता है। जब आप दूसरों को सुसमाचार बताने की शिक्षा देते हैं तो यह स्मरण रखें कि इसे प्रवेश नीति से जोड़ें, निमंत्रण दें, और भविष्य में गवाही के लिए द्वार खुला छोड़ें।"

नीति संयोजको की मूल योग्यताएं
बी पी आई 3–4

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी प्रकरण अध्ययनों के मूल्यांकन द्वारा नीति संयोजक के लिए मूल योग्यताओं को देखेगें।

आवश्यक वस्तुएं:
- श्वेत पट एवं मार्कर
- योग्यता प्रश्न लिखा पोस्टर पेपर (नीचे देखें)
- छोटे समूहों के लिए प्रकरण अध्ययन की प्रतिलिपी (1एवं 2)
- "**एस सी** मूल योग्यताओं" की प्रतिलिपी (प्रत्येक प्रतिभागी के लिए एक)

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले कर लें):
छोटे समूह में चार से छह लोग होने चाहिए। प्रतिभागियों की संख्या के आधार पर पहले से निर्णय करें कि चार या आठ समूह आप बनाएगें। यदि चार समूह हैं तो प्रकरण अध्ययन 1 की चार प्रतिलिपी बनाएं। यदि आठ समूह होंगें तो आठ प्रतिलिपी तैयार करें।

यदि सम्भव हो, तो प्रकरण अध्ययनों को स्थानीय भाषा में अनुवाद करा लें। यह पढ़ने एवं समझने में लगने वाले समय को कम कर देगा। जो अंग्रेजी नहीं पढ़ पाते हैं उन्हें उन संक्षेपण है जिन्हें समझाना आवश्यक है।

पोस्टर पेपर पर निम्नलिखित चार चार्ट बनाएं। यदि चार समूह हों, तो पोस्टर पेपर के चार टुकड़ों को लें प्रत्येक पर एक निम्नलिखित भागों के एक भाग को लिख लें। यदि आठ समूह हों, तो पोस्टर पेपर के आठ टुकड़ों को लें और दो दो पर निम्नलिखित भागों में से एक भाग लिख लें।(प्रत्येक शीर्षक के लिए दो)

चार्ट 1 :**एक नीति संयोजक को क्या जानना आवश्यक है? (मुख्य मुददा)**

- समझ
- ज्ञान
- जानकारी

चार्ट 2 : **एक नीति संयोजक को कैसा होना चाहिए है? (मुख्य मुददा)**

- जोशिला
- केन्द्रित
- प्रेरणा

चार्ट 3 : **एक नीति संयोजक को क्या करना चाहिए? (मुख्य मुददा)**

- समय ठहराना
- प्रशिक्षण
- जाहिर करना

चार्ट 4 : **एक नीति संयोजक को किस तरह सम्बद्ध होना चाहिए? (मुख्य मुददा)**

- साझेदार
- आदर्श बनना
- प्राथमिकताएं

प्रत्येक प्रतिभागी के लिए "**एस सी** मूल योग्यता" की पर्याप्त प्रतिलिपली बनवाएं (जो इस पाठ के अन्त में है)

प्रवेश स्तरों की जॉच (5 मिनट):

"**एस सी** भूमिका / **एस सी** व्यक्ति" का यह जानने के लिए पुर्न अवलोकन करें कि जो उन्हें सिखाया गया है उसमें से उन्हें क्या याद है।

मुख्य सत्र (30 मिनट):

कहें: "हम निम्नलिखित के विषय में विचार करना चाहते हैं ताकि एस सी के लिए कुछ मूल योग्यताओं को निर्धारित करें।

- एक **एस सी** को क्या जानना चाहिए? (दक्षता, ज्ञान)
- एक **एस सी** को कैसा बनना चाहिए? (जोशिला, केन्द्रित, प्रेरणा)
- एक **एस सी** को क्या करना चाहिए? (वे अपना समय किस प्रकार व्यतीत करते हैं, वे कौन से प्रशिक्षण पा रहे हैं, किस तरह जाहिर करें)
- एक **एस सी** को दूसरे के साथ किस तरह सम्बद्ध होना चाहिए? (उनकी साझेदारी किसके साथ है, वे क्या आदर्श प्रस्तुत कर रहें हैं, उनकी प्राथमिकताएं क्या हैं)"

कहें: "इसे करने के लिए हम एक नीति संयोजक के वास्तविक "प्रकरण अध्ययन" को देखना चाहते हैं जिसने कलीसिया स्थापना आन्दोलन देखा है। हमने प्रकरण अध्ययन (जैसे कई विश्वविधालय और व्यवसायी स्कूलों ने भी पाया) को कई महत्वपूर्ण बातों की शिक्षा के लिए सहायक पाया है जो वास्तविक परिस्थितियों से हैं।"

चार या आठ के छोटे समूह में सभी को विभाजित कर दें। सभी समूह को चार्ट और प्रकरण अध्ययन बॉट दें। प्रत्येक समूह अलग अलग क्षेत्र (जानना, होना, करना, जोड़ना) अपनाएगें और प्रकरण अध्ययन को पढ़कर अपने क्षेत्रों की योग्यताओं को ढूंढेंगें। प्रत्येक समूह केवल एक ही प्रकरण अध्ययन का देखेगा। वे अपने प्रकरण अध्ययन एवं चार्ट पर लिखे प्रश्नों को इस्तेमाल करके जो मूल योग्यताएं लाभदायक थीं उसे खोजेगें। (यदि उन्होंने **एस सी** भूमिका के लिए कोई समस्या क्षेत्र को पाया है तो उसे कागज के निचले भाग पर लिखें)। (15 मिनट)

जब आप उन्हें समूह से बुला लें तो प्रत्येक समूह से किसी को संक्षिप्त रूप से प्रकरण समझाने को कहें। यदि दो समूह को एक ही प्रकरण अध्ययन दिया गया हो, तो दोनों समूह को उन प्रकरण अध्ययन की रिर्पोट देने को कहें, दूसरे समूह को समझाने की आवश्यक्ता नहीं। यह रिर्पोट करने के समय को कम कर देगा।

सारांश (10 मिनट):

इस सत्र के अन्त में, "एस सी मूल योग्यता" पन्ने को बॉटें। उन्हें यह बता दें कि यह पृष्ठ कई सभाओ एवं प्रशिक्षण (विदेशी एवं स्वदेशी दोनों) पर आधारित है, जहां सफल एस सी के विषय पर चर्चा की गयी। जिन सूचियों को उनके समूह ने तैयार की उनके मध्य समानताएं और भिन्नता पर सभी को टिप्पणी करने का अवसर दें।

कहें: "यह सच है कि किसी एक **एस सी** में सभी योग्यताएं नहीं पाई जाएगीं, **'एस सी** भूमिका / **एस सी** व्यक्ति का चित्र हमें यह समझने में सहायता करेगा कि किन बातों से प्रभू की सेवा करने में **एस सी** प्रभावी होगा।"

दक्षिण एशिया
योजना संयोजको की मूल योग्यताएं

सिर – जानना

- उस साधारण योजना एवं प्रक्रिया को जानना जिससे प्रशिक्षक एवं स्वस्थ कलीसियाएं उत्पन्न होंगी
- जो अपने लोगों को समझता हो
- **सी पी एम** सर्वोत्तम अभ्यास जानना
- जो स्वस्थ सीमाएं (कब ना कहना है) जानता हो
- जो सम्पर्क के मार्ग को समझता हो
- जो अपना अन्त दर्शन जानता हो

हृदय – अस्तित्व

- खोए हुओं के लिए बोझ
- एकनिष्ठ, कर्मठ, जोशिला
- अटल– ना सुनना पसन्द नहीं
- आपातकाल की भावना महसूस करता और दिखाता भी है
- आत्मिक प्रामाणिकता
- परमेश्वर की सुनता, विश्वास करता और आज्ञा मानता है
- आत्मा के अनुसार चलता, जो पवित्रता की ओर ले जाती है
- परमेश्वर और दूसरों के समक्ष सत्यनिष्ठा से जीता है
- महान विश्वास इस्तेमाल करते हुए अपेक्षा करता है कि परमेश्वर अभी उसके **यू पी जी** में एक **सी पी एम** शुरू करेगा
- परमेश्वर एवं दूसरों से प्रेम
- जीवन पर्यन्त सीखने वाला
- हमेशा परमेश्वर के समक्ष सीखता है ताकि दर्शन को बेहतर तरीके से पूरा कर सके, परन्तु सभी शिक्षा को परमेश्वर के वचन से परखता है
- दृढ़ता– स्थिर, कार्य पूरा करने के लिए सही कार्य करना, जो रूकावटें आती उनका सामना करना

हाथ– करना

- खोए हुओं के लिए प्रार्थना और खोए हुओं के लिए जोशीली प्रार्थनाओं के लिए उत्साहित करना, विशेषकर देशी लोगों को
- अपेक्षा करता है कि परमेश्वर आश्चर्यजनक तरीके से अपनी शक्ति प्रकट करेगा
- साहस के साथ सुसमाचार बॉटने का आदर्श, स्वस्थ कलीसिया स्थापित करने वाला और भविष्य के अगुवों को तैयार करने वाला
- बड़े समूह को प्रशिक्षण देता है ताकि उनमें से आज्ञाकारी लोगों को चुन पाए जो आज्ञाकारिता के बढ़ते स्तर में वृद्धि लाते हैं
- जैसे जैसे आन्दोलन बढ़ता है वह उच्च स्तर के अगुओं को खड़ा करता है और उनकी सहायता करता है ताकि आन्दोलन बढ़े और उसका मार्गदर्शन हो
- अच्छे ढंग से समझाने वालाः दर्शन, सुधार और उत्साहित करना
- हमेशा प्रशिक्षण की नई धारा शुरू करना चाहता है

घर – संबंध बनाना

- अपने समूह के साथ काफी समय व्यतीत करता और प्रगाढ़ संबंध बनाता है
- भाषा पर जोर और संस्कृति अधिग्रहण
- देशी सहभागियों को प्रशिक्षण देना और संधठित करना, प्रशिक्षण की नई धारा को शुरू करना
- आज्ञाकारिता, पुनरूत्पादन और जवाबदेही का आदर्श
- 222 सिद्धान्त लागू करने वाला
- सही अगुवों को प्रशिक्षण देना, उन्हें चुनना, और प्राथमिकता पर ध्यान

मौखिक सम्पर्क की दुनिया
बी पी आई 3–5

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी दो तरह के संचारक की तुलना करेगें और यह मूल्यांकन करेगें कि इनका 5 भाग वाली **सी पी एम** योजनाओं में क्या प्रभाव पड़ता है।

आवश्यक वस्तुएं:
- प्रथम क्रियाकलाप के लिए लिखा निर्देश
- पोस्टर पेपर और मार्कर
- श्वेतपट और मार्कर

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र शुरू होने से पहले कर लेना चाहिए):
नीचे लिखे शब्दों को दो अलग अलग कागज के टुकड़े पर लिख लें– प्रत्येक समूह के लिए एक।

निर्धारित करें कि समूह के 70 प्रतिशत की कितनी संख्या होगी (इस संख्या को तैयार रखें)

अपने आपको कहानी और कहानी प्रदर्शन के लिए सवालों से अवगत करा लें (पाठ के अन्त में कहानी प्रदर्शन को देखें)।

समूह 1
आपको एक स्थानीय कलीसिया में आमंत्रित किया गया है ताकि आप अपने जन समूह को सुसमाचार पहुॅचाने का दर्शन दें पाएं और उन्हें इस कार्य के लिए संधठित करें। नीचे दी गयी सूचना के आधार पर 10 मिनट का समय लेकर एक तीन मिनट का प्रस्तुतिकरण छपाई माध्यम के लिए तैयार करें (इन सभी को सम्मिलित करना आवश्यक नहीं)।

छपाई संचारक निम्न बातों का उपयोग करेगाः

सूचियॉ	मेजें	रूपरेखा
रेखाचित्र / ग्राफ	कदम	शिक्षा बिन्दु
काल्पनिक विचार		

समूह 2
आपको एक स्थानीय कलीसिया में आमंत्रित किया गया है ताकि आप अपने जन समूह को सुसमाचार पहुॅचाने का दर्शन दें पाएं और उन्हें इस कार्य के लिए संधठित करें। नीचे दी गयी सूचना के आधार पर 10 मिनट का समय लेकर एक तीन

मिनट का प्रस्तुतिकरण मौखिक माध्यम के लिए तैयार करें (इन सभी को सम्मिलित करना आवश्यक नहीं)।

मौखिक संचारक निम्न बातों का उपयोग करेगाः

पूर्व एवं वर्तमान से कहानी	दोहराव	नीतिवचन
परम्परगत कथन	गीत	बार बार कहना
कविता	ड्रामा	जीवन के अनुभव

प्रवेश स्तरों की जॉंच (15 मिनट):

प्रतिभागियों को दो भाग में विभाजित कर दें (यदि प्रतिभागियों की संख्या अधिक हो तो उन्हें चार समूहों में बॉट दें– दो "समूह 1" और दो "समूह 2")। प्रत्येक समूह के लिए एक अगुवा चुन लें (समूह दो के लिए उसे चुने जिसे कहानी सुनाने का अनुभव है) और उसे इस क्रियाकलाप के लिए निर्देश, पोस्टर पेपर और मार्कर सौंप दें। तब संक्षिप्त तौर पर क्रियाकलाप को समझाएं और उन्हें प्रस्तुतिकरण तैयार करने के लिए तीन मिनट का समय दें।

समूह 1 को प्रस्तुतिकरण करने को कहें

जब वे प्रस्तुतिकरण कर चुके तो सम्पूर्ण समूह से पूछें: "प्रस्तुतिकरण से आपको क्या स्मरण है? आपने क्या सीखा? क्या आपने ऐसी कोई बात सीखी जो आप पुनः किसी को सिखा सकते हैं?"

समूह 2 को प्रस्तुतिकरण करने को कहें

पुनः वही प्रश्न पूछें: "प्रस्तुतिकरण से आपको क्या स्मरण है? आपने क्या सीखा? क्या आपने ऐसी कोई बात सीखी जो आप पुनः किसी को सिखा सकते हैं?"

यदि आपके पास समय हो, तो प्रथम समूह को दूसरे समूह ने जो किया उसे ही करने को कहें। यह इस बात पर जोर देगा कि अनपढ़ के लिए भी मौखिक पाठों को पुनरूत्पादन करने सीखना कितना आसान है।

मुख्य सत्र (25 मिनट):

समूह के 70 प्रतिशत लोगों को खड़ा कर दें। यह हमारी जनसंख्या का 70 प्रतिशत है। यह संसार भर में पाए जाने वाले मौखिक संचारको की संख्या को दिखलाता है। इसका अर्थ है कि संसार के आधे से भी ज्यादा जनसंख्या प्राथमिक तौर पर मौखिक रूप से ही सम्पर्क स्थापित करती है।

श्वेत पट पर लिखें "कहानी कहना"।

1. पूछें: "कहानी कहना क्या है?" (सम्भव उत्तर नीचे हैं)
    - बाईबल की सच्चाईयों को बाईबल की कहानियों द्वारा प्रस्तुत करना
    - सम्पूर्ण कहानी बताना
    - कालक्रम विज्ञान की महत्ता
    - स्थितिपरक कहानियॉं

2. पूछें: " कहानी क्यों बतानी चाहिए?" (सम्भव उत्तर नीचे हैं)
    - मौखिक सीखने वाले (मौखिक बनाम अशिक्षित)

- यीशु ने कहानी का प्रयोग किया
- सभी को कहानी पसन्द है
- कोई भी व्यक्ति कहानी बता सकता है (पुनरूत्पाद योग्य)
- बाईबल एक कहानी है

3. पूछें: "आप किस प्रकार कहानी कहें?" (सम्भव उत्तर नीचे हैं)
    - कहानी से भली भांति अवगत हों
    - कहानी को रोचक बनाएं– शब्द– विश्वव्यापी दर्शन और रूकावटें एवं सेतु निर्माण
    - पहले से उस सच्चाई को जानें जिसे आप सिखाना चाहते हैं
    - केवल कहानी बता दें– पवित्र आत्मा बाकि का कार्य करता है
    - शीर्षक पर आधारित पथ (उदाहरण: क्षमा, सम्बंध पुनः स्थापित होना, पाप पर जय)
    - सुसमाचार बनाम शिष्यता
    - अपने उददेश्य को जानें– विश्वासी या अविश्वासी
    - कितनी कहानी आपको चाहिए

पॉच स्वयंसेवको को आगे आने को कहें और नीचे दिए "कहानी प्रदर्शन" का उपयोग करके एक कहानी का प्रदर्शन करें (कहानी और प्रश्नों के लिए केवल 10 मिनट का समय लें)। यदि आपके पास समय हो तो आप "कहानी प्रदर्शन" की सूचना पूरे समूह से लें –उन्होंने इस प्रदर्शन में क्या देखा और क्या सीखा?

सारांश (2 मिनट):

पूछें: "यदि दूनिया की ज्यादातर जनसंख्या प्रमुख रूप से मौखिक तरीकों से ही सीखती और सम्पर्क करती है तो अपने पॉच भागों वाली **सी पी एम** योजना के प्रत्येक भाग के लिए जो तरीका आपने चुना है, उन्हें किस प्रकार यह प्रभावित करता है?"

कहें: "दक्षिण एशिया में ऐसे लोगों का दल पाया जाता है जो इस क्षेत्र में आपकी मदद करने को इच्छुक हैं। मौखिक दल के लिए स्टीफन एस. को सम्पर्क करने से न झिझकें, जो आपको मौखिक तरीका के विचारों एवं प्रशिक्षणों को देंगी।"

व्यक्तिगत तैयारी – जिस व्यक्ति को परमेश्वर उपयोग करता है
बी पी आई 3–6

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी उस तरह के व्यक्ति को देखेंगें जिसे परमेश्वार **सी पी एम** संचालन करने के लिए इस्तेमाल करता है। हम सभी अपने जन समूह में **सी पी एम** देखना चाहते हैं। हम ईमानदारी से उस तरह के व्यक्ति की व्याख्या करने और समझने की कोशिश करेगें जिसे हम **सी पी एम** में पाते हैं। हम आसानी से यीशु की व्याख्या कर सकते हैं, परन्तु हम यहां इसके लिए नहीं हैं।

आवश्यक वस्तुएं:
- श्वेत पट और मार्कर
- छपे टुकड़े जिसमें सात विशिष्टता कटे हुए हों
- पोस्टर पेपर और मार्कर

प्रशिक्षक की तैयारी (इसे सत्र के पहले कर लें):
"उस व्यक्ति की सात विशिष्टता जिसे परमेश्वर इस्तेमाल करते हैं" इसे छाप लें (इस पाठ के अन्तिम पृष्ठ पर) और इसे छोटे छोटे टुकड़ों में काट लें ताकि प्रत्येक टुकड़ों में एक एक विशिष्टता हो।

नीचे लिखी बातों में से सात पोस्टर पेपर में एक एक बात लिख लें। समूह इनका उपयोग इन वाक्यों से संबंधित बाईबल पदों को लिखने के लिए करेगें।

1. परमेश्वर प्रार्थना करने वाले व्यक्ति को इस्तेमाल करता है।

2. परमेश्वर एक धन्यवादी हृदय वाले व्यक्ति को इस्तेमाल करता है।

3. परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति को इस्तेमाल करता है जो केवल दो तरह के लोगों को ही देखता है।

4. परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति को इस्तेमाल करता है जो यह जानता है कि प्रत्येक भीड़ में शान्ति के पुरूष पाए जाते हैं।

5. परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति को इस्तेमाल करता है जो ऐसे लोगों की खोज में रहता है जो तेजी से कार्य फैलाए।

6. परमेश्वर ऐसे लोगों को इस्तेमाल करता है जो वचन के सुनने वालों में से वचन के पालन करने वालों को अलग करतें हैं।

7. परमेश्वर ऐसे लोगों को इस्तेमाल करता है जो चार आवाजों को सुनते हैं जो उन्हें बताने के लिए विवश करतीं हैं।

ऊपर नीचे अन्दर बाहर

सत्र के पहले, श्वेत पट पर लिखें:

प्रभावी **एस सी** ... (प्रत्येक योग्यताओं के मध्य लिखने के लिए स्थान छोड़ें)।

जानना

अस्तित्व

करना / ना करना

संबंध बनाना (लोगों के साथ)

प्रवेश स्तरों की जॉच (15 मिनट):

पूछें: "आप में से कितने लोग किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो कलीसिया स्थापित करने एवं बढ़ाने में अत्यंत प्रभावकारी है?" (उन्हें हाथ उठाने दें)

यदि केवल कुछ ही लोग हों तो कहें: "प्रभावी **सी पी एम** चलाने वाला या नीति संयोजक की विशिष्टताओं को नहीं जानना समस्या का एक भाग है।"

कहें: "किसी ऐसे व्यक्ति के विषय में सोचें जिसे आप जानतें हैं जो कलीसिया शुरूआत करने और विस्तार करने में अत्यंत प्रभावकारी है। निम्न बातों के विषय में सोचें:

वे किस प्रकार के लोग हैं?
वे क्या करते हैं?
उनका चरित्र कैसा है?
वे दूसरों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं?

कहें: "जनवरी 2007 में, एस सी प्रशिक्षकों ने एस सी प्रशिक्षण के लिए सबसे प्रभावी तरीके की विवेचना करने के लिए मुलाकात की ताकि प्रभावी कलीसिया स्थापक तैयार किए जाएं। उन्होंने निम्नलिखित बातों के आधार पर प्रत्येक आन्दोलन के सी पी एम को जांचा और एस सी की भूमिका का मूल्यांकन किया:

1. प्रभावी होने के लिए एस सी को क्या जानना जरूरी है?
2. एस सी को क्या करना चाहिए और क्या नहीं?
3. आन्दोलन को बढ़ाने के लिए के लिए एस सी का चरित्र कैसा होना चाहिए?
4. एस सी लोगों से कैसे संबंध बनाता है?"

जब आप बात कर रहे हों तो किसी को सामने आकर लिखने को कहें (प्रत्येक भाषा के लिए एक व्यक्ति)।

कहें:

"जानना:

उनके पास एक आसान, पुनरूत्पान करने वाली योजना है– योजना जितनी कठिन होगी उसे समझाना उतना ही कठिन। एस सी की प्रतिभा इसमें नहीं कि वह कितना *तेज* है पर इसमें है कि वे कितने सरल एवं बढ़ोत्तरी करने वाले हो सकते हैं।

"अस्तित्व:

वे जोशिले, दृढ़ निश्चयी और अटल होते हैं– वे सीखने वाले होते हैं परन्तु हमेशा सीखते नहीं। वे उन बातों को सीखते हैं जो उन्हें उनके दर्शन तक पहुँचाएगा। वे आत्मिक तौर पर सच्चे होते हैं– इस पापमय संसार में वे परमेश्वर के साथ एक वास्तविक संबंध में रहते हैं। वे दोषी लोगों के साथ कार्य करने से घबराते नहीं।

करना / नहीं करना:

प्रार्थना के लोग– वे केवल अपने लोगों *के लिए* प्रार्थना नहीं करते परन्तु अपनी दिनचर्या में वे लोगों के *साथ* प्रार्थना करते हैं। वे अपना समय किसी अन्य लेख या समाचार लिखने में नहीं करते परन्तु उन्हें समुदाय द्वारा प्रार्थना के पुरूष के रूप में जाना जाता है। वे लगातार नए अगुवे खड़ा करते हैं जो नई कलीसिया स्थापित कर सके। जो वे करते हैं उसे दृढ़तापूर्वक मूल्यांकन करते और अपनाते हैं।

"संबंध बनाना:

वे प्रमुख रूप से स्थानीय विश्वासियों एवं खोए हुओं से संबंध स्थापित करते हैं। अन्य मिश्नरी यह सोचते हैं कि ये **एस सी** उनके साथ समय व्यतीत नहीं करते– ये **एस सी** अपना अधिकतर समय देशी लोगों के साथ बिताते हैं (विश्वासी और खोए लोग)। वे बहुत समय इस बात की खोज में लगाते हैं कि उन्हें देशी सहयोगी मिले और **सी पी एम** की नई धारा शुरू की जा सके। वे एक समूह या एक तंत्र से संतुष्ट नहीं होते। वे सही अगुवों (जो आज्ञाकारी और फलदायी हैं) के साथ समय बिताते हैं न कि उनके साथ जिन्हें वे पसन्द करते हैं। वे आन्दोलन की रक्षा करते और उन बातों को पहचान लेते हैं जो इसे धीमा कर सकता है।

मुख्य सत्र (30 मिनट):

कहें: "हम पहले ही **एस सी** मूल योग्यताओं एवं **एस सी** भूमिका के विषय में बात कर चुके हैं। बाद में हमारे **टी 4 टी** सिंहावलोकन में हम एक **एस सी** (जॉन चेन) को देखेगें और यह भी कि उसने क्या उपयोग किया। अब हम उस व्यक्ति की सात विशिष्टताओं को देखेगें जिसे परमेश्वर इस्तेमाल करता है, ये विशिष्टताएं जॉन के पर्यवेक्षक ने जॉन के जीवन और उसकी सेवकाई की विशिष्टता को देखकर बनाई हैं।"

सात समूह में विभाजित करें। प्रत्येक समूह को पोस्टर पेपर में लिखे विशिष्टता के एक एक भाग दे दें। उन्हें पॉच मिनट का समय दें कि वे पवित्र शास्त्र भाग की सूची बनाएं जो इस विचार को बल देती हैं। प्रत्येक समूह को को इन विशिष्टताओं को प्रस्तुत करने के लिए तैयार रहने को कहें, उन्हें पदों की सूची तथा किसी हाथ के इशारे को भी तैयार करने को कहें जिससे यह विशिष्टता सभी को स्मरण रहे

प्रत्येक दल को अपनी विशिष्टता और हाथ के इशारे को बताने को कहें (दो दो मिनट)। सात विशिष्टता एवं हाथ के इशारे को दोहराएं।

सारांश (10 मिनट):

कहें: "हम में से प्रत्येक परमेश्वर की लिए सेवा में प्रभावी बनना चाहते हैं। अकेले कुछ मिनट लेकर परमेश्वर से सहायता मांगें कि वह आपको यह जानने में मदद करे

कि जिन विशिष्टताओं को आपने आज सुना है क्या उन्हें आपको अपने जीवन में विकसित कर सकें। तब प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको इस क्षेत्र में बढ़ने में सहायता करे।"

(समूह को सोचने के लिए 3–6 मिनट का समय दें)। इस सत्र को इस प्रार्थना के साथ समाप्त करें कि इन पुरूषों और स्त्रियों को परमेश्वर इस्तेमाल करने के लिए आनन्दित है।

परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने वाले व्यक्ति की सात विशेषताएं

(जॉन चेन के अगुवे द्वारा जॉन के जीवन, कार्य और शिक्षा के आधार पर लिखी गयी)

1. परमेश्वर प्रार्थना करने वाले व्यक्ति को इस्तेमाल करता है।

जॉन प्रतिदिन दो धण्टे प्रार्थना में व्यतीत करता है:

- जिन लोगों के साथ सुसमाचार बॉटना है
- जिन लोगों को उसने सुसमाचार सुनाया है
- जिन लोगों ने यीशु को हां कहा है
- प्रशिक्षक
- स्वयं और उसका परिवार
- जो नई कलीसियाएं स्थापित हुई हैं

2. परमेश्वर एक धन्यवादी ह्रदय वाले व्यक्ति को इस्तेमाल करता है।

जॉन हरेक बातों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता है । यदि आप सभी बातों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद नहीं दे पाएं तो शैतान उस एक बात जिसके लिए आप धन्यवादित नहीं हैं को लेकर आपको बर्बाद कर देगा।

3. परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति को इस्तेमाल करता है जो केवल दो तरह के लोगों को ही देखता है।

1.ऐसे लोग जिन्हें सुसमाचार सुनना है (खोए हुए)

2.ऐसे लोग जिन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए प्रशिक्षण देना है (उद्धार पाए हुए)

4. परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति को इस्तेमाल करता है जो यह जानता है कि प्रत्येक भीड़ में शान्ति के पुरूष पाए जाते हैं।

शान्ति के पुरूष वे हैं जिन्हें पवित्र आत्मा ने आपको एवं आपके संदेश को स्वीकार करने के लिए तैयार किया है। मसीही पी ओ पी सुनना एवं प्रशिक्षण पाना चाहेगें। खोए हुए पी ओ पी सुनेगें और प्रत्युत्तर देगें। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि जहां आप रहते हैं वहां लोग आपका इन्तजार कर रहे हैं। मसीही लोग प्रशिक्षण पाने के लिए और खोए हुए लोग उद्धार पाने के लिए इन्तजार कर रहे हैं। आप उन्हें पाएगें जब आप सभी को अपनी कहानी बताएगें। आप अनुमान नहीं लगा सकते। आप पी ओ पी को पा सकते हैं जिस प्रकार तिलचटटा प्रकाश की ओर या तो आर्कषित होता है या उससे भागता है।

5. परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति को इस्तेमाल करता है जो ऐसे लोगों की खोज में रहता है जो तेजी से कार्य फैलाए।

मसीहियों की प्रत्येक भीड़ मे अत्यधिक तेजी से सुसमाचार फैलाने वाले पाए जाते हैं। वे सुसमाचार को दूर तक फैला देते हैं। यदि जॉन ने 25 लोगों को प्रशिक्षण दिया तो उसमें आधे लोग कुछ भी नहीं करेगें। सालों से उन्होंने कुछ करना नहीं सीखा है। 13 कार्य करने वालों में से आधे प्रभावी नहीं होगें और कुछ थोड़े ही प्रभावी होगें। परन्तु एक अत्यधिक प्रभावी होगा। जितने लोगों को बाकि सभी लोग मिलकर मसीह के पास लाएगें उतनों को वह अकेले ही लाएगा। यही आपका तेजी से सुसमाचार फैलाने वाला है। आप तभी तेजी से सुसमाचार फैलाने वाले को ढूंढ़ पाएगें जब आप सभी को प्रशिक्षण दें और उनके फलों का मूल्यांकन करें।

6. परमेश्वर ऐसे लोगों को इस्तेमाल करता है जो वचन के सुनने वालों में से वचन के पालन करने वालों को अलग करतें हैं।

जॉन एक दयालु व्यक्ति है और वह कभी भी किसी को प्रशिक्षण में आने से मना नहीं करेगा। परन्तु अक्सर जो कुछ भी नहीं करते ऐसे लोग अच्छे लोग भी होंते हैं। जॉन हमेशा ऐसे लोगों को उत्साहित करेगा और कहेगा कि अगले सप्ताह हम आप से और आपके सप्ताह के दौरान कार्य से आरम्भ करेगें। जो लोग कार्य नहीं करते वे या तो कार्य करना शुरू करेगें या फिर आना बन्द कर देगें। यह आवश्यक है कि जो आपके प्रशिक्षु करते हैं उसे आप दृढ़ता से मूल्यांकन करें।

7. परमेश्वर ऐसे लोगों को इस्तेमाल करता है जो चार आवाजों को सुनते हैं जो उन्हें बताने के लिए विवश करती है।

वे इन स्थानों से आवाज सुनते हैंः

- ऊपर– परमेश्वर हमें भेजता है (यशायाह 6:8)
- नीचे– जो नरक में हैं वे हमें उनके रिश्तेदारों के पास जाने के लिए कहते हैं (लूका 16:23–24
- अन्दर– हाय हम पर यदि हम न जाएं, पवित्र आत्मा हमें विवश करता है (1 कुरि 9:16)
- बाहर – जो हमें उसी प्रकार से बुलाते हैं जिस प्रकार मकिदुनिया का व्यक्ति पौलुस को दर्शन में बुला रहा था (प्रेरितों के काम 16:9)

सी पी एम योजना कार्यशाला 1
बी पी आई 3–7

(45–60 मिनट, समय सारिणी के अनुसार)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी अपने अन्त दर्शन को मरोड़ेगें ताकि प्रवेश और सुसमाचार प्रस्तुति के तरीको को पहचाने और इस भाग के लिए अपने 5 भाग वाले **सी पी एम** योजनाओं का लक्ष्य निर्धारित करेगें।

आवश्यक वस्तुएंः
- श्वेत पट और मार्कर
- तैयार पोस्टर पेपर
- विभिन्न **सी पी एम** योजना संरचना के खाली पृष्ठ जिन पर प्रतिभागी अपनी योजनाओं को लिख सकते हैं।

प्रशिक्षक की तैयारी (इसे सत्र के पहले कर लें):
यह सहायक होगा यदि कई प्रशिक्षक उपस्थित हों ताकि प्रत्येक व्यक्ति के अन्त दर्शन को व्यक्गित रूप से देखा जाए और सलाह दी जाए।

कुछ खाली **सी पी एम** योजनाओं की प्रतिलिपी बना लें (**बी पी आई** परिशिष्ट संसाधन देखें) ताकि प्रतिभागी उनका उपयोग कर सकें। निम्नलिखित को श्वेत पट या पोस्टर पेपर पर लिखें (जिन **शब्दों को नीचे रेखांकित** किया गया है वे सब सांचा हैं, जो केवल काले रंग में है वो आपके लिए उदाहरण है)।

अन्त दर्शनः *एक्स वाई जेड जहां रहते हैं वहां के 7 जिलों में कई सी पी एम का देखरेख करना ताकि प्रत्येक एक्स वाई जेड व्यक्ति के चलकर पहुंचने के स्थान पर एक पुनरूत्पादन करने वाली गृह कलीसिया हो।*

	प्रवेश	*सुसमाचार प्रस्तुतिकरण*
वस्तुएं:	*गवाही*	*रोमी मार्ग*
3 माह लक्ष्यः	*मैं अपनी गवाही को उन जिलों में एक सप्ताह में 5 बार बताऊँगा जहां एक्स वाई जेड लोग रहते हैं*	*मैं सप्ताह में एक बार पूर्ण सुसमाचार प्रस्तुत करूँगा*

6 माह लक्ष्य: *मैं पॉच लोगो को गवाही बताने के लिए प्रशिक्षित करूॅगा*

सप्ताहिक तौर पर मैं सुसमाचार सुनाने का आदर्श स्थानीय विश्वासी के लिए बनूॅगा

प्रार्थना: *अमरीका और कनाडा में 10 समूह , दक्षिण एशिया में 3 समूह*

अन्दर– *एक्स वाई जेड लोगों के बिच सुसमाचार बताने की अवसर के लिए प्रार्थना करना*

बाहर– *उन भाषा के लिए प्रार्थना करें जिसमें बताना हो*

संसाधन / सहयोगी: *2 एक्स वाई जेड विश्वासी , स्थानीय ए बी सी कलीसियाएं*

प्रवेश स्तरों की जॉच (5–10 मिनट):

अन्त दर्शन का पुर्न अवलोकन करें और कुछ लोगों को इसे बताने को भी कहें – अन्य प्रतिभागियों को सुझाव देने को कहें।

मुख्य सत्र (35–50 मिनट):

प्रतिभागियों को अकेले कार्य करने दें परन्तु यदि वे साथ आ गए हों तो उन्हें दल बना कर कार्य करने दें। उन्हें अपने अन्त दर्शन लिखने के लिए पॉच मिनट का समय दें, जिसे वे प्रवेश एवं सुसमाचार प्रस्तुतिकरण में इस्तेमाल करेगें।

कुछ लोगों को बोलने का मौका दें। बाकि बचे समय में इन दो भागों के लिए लक्ष्यों को लिखने की इजाजत दें। प्रशिक्षक को चाहिए कि वह कमरे में घूमता रहे और सहायता करे तथा प्रश्न पूछे।

सारांश (5–10 मिनट):

बड़े समूह में आ जाएं और किसी से प्रवेश नीति लक्ष्यों को बताने को कहें। सुसमाचार प्रस्तुतिकरण के लिए भी ऐसा ही करें। दो दो करके विभाजित करें ताकि आपकी परमेश्वर सहायता करे , जो योजना उसने दी है, को पूरा करें।

तीसरे दिन की सूचना प्राप्त करना

(15 मिनट)

पूछें: "आज जो हम लोगों ने पढ़ा क्या उसमें से कोई बात समझ नहीं आई? समझने में क्या सबसे कठिन है?"

पूछें: "आज सुबह जब हमने प्रेरितों के काम में बपतिस्मे के विषय में देखा , तो आपने इससे क्या सीखा?"

पूछें: "जब आपने मौखिक सीखने वालों को सुसमाचार सुनाने के विषय में सुना तो क्या उसमें कुछ ऐसा था जिसने आपके चुनौती दी।

गृह कार्य:

गुह कार्य के लिए प्रकरण अध्ययन 3 और 4 लोग होंगें।

दूसरे प्रतिभागी से अपनी 5 भाग वाली सी पी एम योजना के बारे में बात करें

कलीसिया के पॉच उददेश्यों का प्रचार करते रहना।

चौथे दिन के लिए गृह कार्य वाले बाईबल परिच्छेद':

मत्ती 13: 31:33

प्रार्थना करें कि हमारी इच्छा जागे और हम इस तरह अपना जीवन जीयें ताकि परमेश्वर हमें उपयोग करने में खुश हो तब लोगों को जानें दें।

दिन 4 का अवलोकन (आरम्भ)

(10 मिनट)

समूह से पूछें: "आपकी गृह कलीसिया और बाईबल अध्ययन / आराधना कैसी चल रही है?"

अपनी गृह कलीसिया के विषय में बताने के लिए एक या दो प्राचीनो को बुलाएं। पूछें: "क्या आपकी कलीसिया दसवांश लेती है? पूछें: "पॉच उददेश्यों के पूरा करने के लिए आपकी कलीसिया क्या कर रही है?"

एक व्यक्ति जिसे परमेश्वर इस्तेमाल करता है उसका पुर्न अवलोकन करें (कोशिश करें कि आप उन्हीं के द्वारा विकसित हाथ के इशारे को इस्तेमाल करें।)

प्रार्थना निवेदनो के विषय में पूछें। किसी को प्रार्थना करने को कहें।

एस सी प्रभावपूर्णता का प्रकरण अध्ययन
बी पी आई 4–1

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी ऐसे दो प्रकरण अध्ययनों को दखेगें, मूल्यांकन करेगें और विवेचना करेगें, जिन प्रकरण में दर्जनों कलीसियाएं नीति संयोजक के स्थानीय लोगों के साथ सहयोग करने पर स्थापित हुई। वे उन सकारात्मक उदाहरणों को भी देखेगें जहां एक **एस सी** ने किस प्रकार प्रशिक्षण एवं **सी पी एम** सिद्धान्तों को लागू कर के कलीसिया स्थापना को काफी बढ़ा दिया।

आवश्यक वस्तुएं:
- प्रश्न युक्त पोस्टर
- दोनों प्रकरण अध्ययन (3 एवं 4) का दो या तीन प्रतिलिपी

प्रशिक्षक की तैयारी (इसे सत्र के पहले कर लें):
प्रकरण अध्ययन 3 और 4 की प्रतिलिपी बनाएं (दोनों की दो दो प्रतिलिपी यदि वहां चार समूह होंगे)

यदि प्रशिक्षण से पहले समय और योग्यता हो तो प्रकरण अध्ययन को प्रतिभागियों की भाषा में अनुवाद कर लें (कम से कम एक को)।

निम्न प्रश्नो को पोस्टर पर लिखें (यदि संभव हो तो प्रश्न अंग्रेजी और जो अन्य भाषाएं वहां पाई जाती है उनमें हों– इतनी प्रतिलिपियां कि सभी समूहो के पास एक हो)। प्रश्नों के मध्य जगह छोड़े ताकि प्रतिभागी उन जगहों पर अपनी टिप्पणी लिख पाएं जिसे वह कक्षा में प्रस्तुत करते समय बता पाएं।

1. वे महत्वपूर्ण बातें कौन कौन सी थीं जिससे **सी पी एम** चला और कायम रहा?
2. **एस सी** ने क्या भूमिका निभाई?
3. **एस सी** के द्वारा लिए गए प्रशिक्षण ने क्या भूमिका निभाई?

प्रवेश स्तरों की जॉच (5 मिनट):
पूछें: "क्या कोई मुझे एक कहानी बता सकता है कि कैसे आप **सी पी एम** के भाग हैं /थे या **सी पी एम** जिसके बारे आप ने सुना हैं?" (आप एक व्यक्ति को पहले ही से तैयार रख सकते हैं कि वह एक सी पी एम के बारे में एक कहानी बताए)।

मुख्य सत्र (35 मिनट):

प्रतिभागियों को चार समूहों मे बॉट दें (समान भाषा के लोग एक साथ जहां एक ऐसा व्यक्ति हो जो प्रकरण अध्ययन को स्थानीय भाषा या भाषाओं में अनुवाद कर पाए)। यदि एक समूह में आठ से अधिक लोग हों तो पॉच या छह समूह बना लें।

दो समूह प्रकरण अध्ययन 3 पढ़ेगें और उसके प्रश्नों का उत्तर देगें, और दो समूह प्रकरण अध्ययन 4 पढ़कर उसके प्रश्नों के उत्तर देगें। प्रत्येक समूह को उन पोस्टर पेपर को दे दें जिन पर प्रश्न लिखा है। समूहों के पास जाकर यह सुनिश्चित करें कि वे समझ चुके हैं कि उन्हें क्या करना है। (20 मिनट का समय दें)

किसी से कहें कि वह आकर संक्षिप्त तौर पर बताए कि प्रकरण अध्ययन 3 का मूल्यांकन क्या है (यह व्यक्ति समूह का प्रस्तुतिकरण करने वाला न हो– हम नहीं चाहते कि प्रत्येक प्रस्तुतिकरण करने वाला यह करे।)। तब उन दोनों समूहों को प्रश्न दर प्रश्न उत्तर देने का अवसर दें जिन्होंने समान प्रकरण का अध्ययन किया है– यदि उनका उत्तर एक समान है तो उसे दोहराने की आवश्यक्ता नहीं। तब इसे प्रकरण अध्ययन 4 के साथ भी करें और दूसरा मूल्यांकन भी करें।

सारांश (5 मिनट):

परमेश्वर ने कैसे बड़े बड़े कार्यों को उन विश्वासियों एवं अगुवों के जीवन में किया जिन्होंने अपने विश्वास को बॉटा और गृह कलीसिया स्थापना करने को तत्पर हुए, इसकी ओर उनका ध्यान आर्कषित करें। प्रार्थना का समय निकालें ताकि लोगों और उन नई कलीसियाओं के लिए प्रार्थना किया जा सके जिसके विषय में उन्होंने अभी सुना।

टी 4 टी सिंहावलोकन
बी पी आई 4–2

(1घण्टा)

विषय और लक्ष्यः

इस सत्र में प्रतिभागी *"प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण"* को देखेगें। यहां वे जॉन चेन की कहानी देखेगें कि कैसे परमेश्वर ने इस औजार को विकसित करने का, इसे इस्तेमाल करने का मार्गदर्शन जॉन को दिया, और इस **एस सी** कार्य पर चीन के एक शहर में क्या प्रभाव पड़ा। जबसे **टी 4 टी** तरीका सर्वप्रथम चीन में इस्तेमाल हुआ तबसे अब तक संसार भर में इसे अपनाया और प्रयोग किया गया। इसे **"सी पी एम** सर्वोत्तम अभ्यास" पुरूस्कार मिला और इसे बहुत ध्यान से देखने की आवश्यक्ता है।

आवश्यक वस्तुएं:

- दो से चार छोटे **सी पी एम** मूल्यांकन जो **टी 4 टी** के उपयोग पर प्रकाश डालते हैं (प्रकरण अध्ययन 2,3,4,6)
- समूह कार्य पर्चे (नीचे देखें)
- छह **टी 4 टी** पाठ
- चेन की कहानी अंक विघटन के साथ (इसे अंग्रेजी बोलने वाले समूह को दें)

प्रशिक्षक की तैयारी (इसे सत्र के पहले कर लें):

इस सत्र को चार या छह छोटे समूहों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, पर यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या आप चेन के कहानी को बताएगें और आपके पास टी 4 टी से संबंधित कितनी **सी पी एम** प्रकरण अध्ययन हैं। यदि आप स्वयं चेन की कहानी बताना चाहते हैं, तो इसे पहले ही पूरा पढ़ लें ताकि आप इसे कहानी के समान अपने याददास्त से बता पाएं।

समूह 1 के उपयोग के लिए प्रतिलिपी बनाएं (यदि आप कहानी स्वयं बताएगें तो इसकी आवश्यक्ता नहीं)।

समूह 2,3 और 4 के लिए **टी 4 टी** पाठों की प्रतिलिपी बनाएं (प्रत्येक समूह के लिए दो भिन्न पाठं)।

समूह 5 और 6 के लिए प्रकरण अध्ययन की प्रतिलिपी बनाएं (प्रत्येक समूह के लिए भिन्न प्रकरण अध्ययन)।

छोटे समूहों को देने के लिए नीचे लिखी बातों को कागज के टुकड़ों में लिखें:

समूह 1 : चेन की कहानी बताएं– कृप्या चेन की कहानी पढ़ें और या तो उसे कहानी के समान कहकर या स्किट के माध्यम से तीन मिनट में बताएं।

समूह 2,3 और 4: उन दो **टी 4 टी** पाठों को लेकर जो आपको मिली है उसे पढ़ें। वहां सिखाए बाईबल की सच्चाईयों की सूची बनाएं और विधार्थियों को उस सप्ताह क्या करने के लिए जवाबदेह ठहराया गया है। यहां हम क्या सीखते हैं? दक्षिण

एशियाई श्रोताओं के लिए क्या बदलाव आवश्यक हैं? इसे एक या दो मिनट में बड़े समूह के सामने प्रस्तुत करें।

समूह 5 और 6 : **सी पी एम** प्रकरण अध्ययन पढ़ें (एक समूह के लिए एक)। जब **टी 4 टी** पढ़ाया और उपयोग किया जाए, तो कार्य पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? **टी 4 टी** इस्तेमाल करते समय किन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है? क्या इन प्रकरण अध्ययनों से कुछ हानि भी है? बड़े समूह में एक या दो मिनट लेकर संक्षिप्त तौर पर मूल्यांकन तथा **टी 4 टी** में आपने क्या सीखा, उसे बताएं।

प्रवेश स्तरों की जॉंच (5–10 मिनट):

पूछें: "आप में से कितने लोगों ने **टी 4 टी** की प्रशिक्षण को पाया है? आप में से कितने लोग वर्तमान में **टी 4 टी** के किसी भी रूप को अपने कार्य में इस्तेमाल कर रहें हैं?"

पूछें: "क्या आपने जॉन चेन की कहानी को पढ़ा है?"

पूछें: "क्या आपमें से कोई उन चार प्रश्नों को जानता है जो जॉन चेन के अनुसार लोगों को प्रभावी कलीसिया स्थापक होने से रोकती है?"

इसे बोर्ड पर लिखें:

1. मैं क्या कहता हूँ?
2. मैं इसे किसे कहता हूँ?
3. आपको ऐसा क्यों लगता है मैं इसे करूँगा?
4. मैं क्या करूँगा यदि उन्होंने यीशु को "हॉं" कहा?

कहें: "चेन यह विश्वास करते हैं कि यदि आप इन चार प्रश्नों का उत्तर दे पाए, तो कोई भी व्यक्ति एक प्रभावी कलीसिया स्थापना करने वाला बन सकता है।"

मुख्य सत्र (40 मिनट):

किस प्रकार आप चेन की कहानी बताना चाहते हैं और कितने **सी पी एम** आप मूल्यांकन का आप इस्तेमाल कर रहें हैं, उसके आधार पर चार से छह समूह में उन्हें विभाजित कर दें (आप बताएं या समूह को बताने दें)। ध्यान दें कि जो लोग **टी 4 टी** में प्रशिक्षित हों या इसका इस्तेमाल कर रहे हों, उन लोगों को समूह में अलग अलग जगह पर बैठा दें– यह उन लोगों के लिए सहायक होगा जो आज पहली बार इसे देख रहें हैं और वे उनके अनुभव का लाभ उठाएगें। प्रत्येक समूह को वस्तुएं दे दें और निर्देश दें। इसके लिए 10–15 मिनट का समय दें।

सभी समूह को प्रस्तुतिकरण का अवसर दें। जॉन चेन की कहानी से जो मुख्य बातें छूट गई हों उन्हें प्रकाश में लाएं। संचालक को चाहिए कि वह उन्हें समय सारिणी में रहने में सहायता करे।

सारांश (10 मिनट):

अब आप वापस उन चार प्रश्नों पर जाएं जिन्हें आपने छोटे समूह में विभाजन होने से पहले लिखा था। देखें कि प्रतिभागी इसका उत्तर दे पातें हैं या नहीं।

प्रत्येक समूह से क्या सीखा गया उसे दोहराएं। **टी 4 टी** में जवाबदेही पर जोर दें– कि *सभी* को प्रशिक्षकों का प्रशिक्षक होना है।

पूछें: "शिक्षा देने और प्रशिक्षण में क्या अन्तर है?" उन्हें कुछ उत्तर देने का अवसर देने के बाद, कहें: ***"शिक्षा देने के द्वारा ज्ञान दिया जाता है, प्रशिक्षण व्यवहार परिवर्तन करता है।"***

फिर से यह बताएं कि पाठों की सरलता इसे अधिक पुनरूत्पादन करने वाला बनाती है।

टी 4 टी में **सी पी एम** योजना के सभी पॉच भाग समाहित हैं। यदि समय हो, प्रतिभागियों से कहें कि क्या वे इन पॉच भागों को पहचान सकते हैं। यही कारण है कि **टी 4 टी** को "**सी पी एम** सर्वोत्तम अभ्यास" पुरूस्कार मिला है– यह एक साधारण तरीका है जिसमें एक **सी पी एम** को चलाने के लिए सब कुछ मौजूद है।

डेविड गैरिसन की पुस्तक चर्च प्लान्टिगं मूवमेन्ट में लिखी जॉन चेन की कहानी

जॉन चेन का जन्म ताईवान में एक बैप्टिस्ट पास्टर के घर मे हुआ था। उसके पिता उसके लिए एक नमूना बने कि अपनी सेवकाई में प्रत्येक वर्ष एक नई कलीसिया का स्थापना करने की कोशिश करते थे। यह बात जॉन को स्मरण रही। जब वह खुद पास्टर बना तो उसने कलीसिया स्थापना करने के इसी तरीके को जारी रखा, वह प्रत्येक वर्ष एक नई कलीसिया स्थापित करता था और 50 से 60 लोगों को प्रभु के पास लाता था।

दो दशक तक पास्टर और कलीसिया स्थापना का कार्य करने के बाद वह और उसका परिवार ताईवान से हॉग कॉग और वहॉ से अन्त में 1995 में वह मिश्नरी बनकर अमरीका गया। तब, 2000 में जॉन ने परमेश्वर की बुलाहट को सुनकर चीन देश के एक शहर में जाकर नीति संयोजक बन गया।

चेन के अनुमान से कहीं ज्यादा चुनौतियों का सामना चीन में उसे करना पड़ा । जिस शहर, नान्दोगं में वह रहने लगा वहां की जनसंख्या 2 करोड़ थी। प्रत्येक दिन हजारों की संख्या में मजदूर उस शहर में नौकरी की तलाश में आते थे।

वर्ष 2000 की ग्रिष्म ऋतु में चेन ने पहली बार नान्दोगं शहर के अन्दर यात्रा की। उन्होंने पाया कि शहर फैक्ट्रियों से और हजारों मजदूरों से खचाखच भरा पड़ा था। जॉन स्मरण करते हुए कहते हैं, "वहां इतने सारे लोग थे कि वहां धीरे धीरे काम करने का समय नहीं था। परन्तु हमें यह नहीं मालूम नहीं था कि इसे अलग ढंग से कैसे करें।"

तब वर्ष 2000 के अक्तुबर माह में जॉन और उसकी पत्नी होप ने नीति संयोजक प्रशिक्षण में प्रवेश किया और तब इस बात को सीखना आरम्भ किया कि परमेश्वर कैसे कलीसिया स्थापना आन्दोलन में कार्य कर रहा है। जॉन ने तब इस बात को जाना कि वह खुद यह काम नहीं कर सकता है और न ही वह केवल एक कलीसिया स्थापना समूह पर ही यह जिम्मा डाल सकता है। जॉन ने कलीसिया स्थापना आन्दोलन के सिद्धान्तों को लेकर अपने आप से इन प्रश्नों को पूछाः

"एक कलीसिया स्थापना करने से अच्छा और क्या है?"
उत्तरः कलीसिया स्थापना करने के लिए दूसरों को प्रशिक्षण देना।

"और कलीसिया स्थापना के लिए दूसरों को प्रशिक्षण देने से अच्छा क्या है?"
उत्तरः प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देना ताकि वे कलीसिया स्थापना करने वालों को प्रशिक्षण दें और अधिक कलीसियाएं स्थापित हो!

इस अत्यंत तेजी से बढ़ने वाले तरीके के साथ, जॉन जो पास्टर था और कलीसिया स्थापना करने वाला था वह प्रशिक्षक और कलीसिया स्थापना आन्दोलन का जरिया बन गया।

जॉन को यह पता था कि सभी लोग कलीसिया स्थापना करने के योग्य नहीं हैं, परन्तु साथ ही वह यह भी जानता था कि परमेश्वर किसी को भी इस्तेमाल कर सकता है। तो आप यह किस तरह जान पाएगें कि कौन एक प्रभावी कलीसिया स्थापना करने वाला होगा और कौन नहीं? इसे सुलझाने से पहले जॉन ने निर्णय लिया कि वह सभी को कलीसिया स्थापना करने और कलीसिया स्थापना करने वालों को प्रशिक्षित करने का प्रशिक्षण देगा। जो उसके प्रशिक्षण को अपनाएगें वे

कलीसिया स्थापना आन्दोलन में उसके सह–कर्मी बन जाएगें, और जो नहीं अपनाएगें वह स्वयं पीछे छूट जाएगें।

जॉन कहते हैं, "मैं जानता था कि मैं और मेरी पत्नी प्रति वर्ष 30 लोगों को यीशु के पास ला सकते थे परन्तु तभी हम समूचे नान्दोगं के करोड़ों लोगों को प्रभु के पास ला सकने की आशा कर सकते थे जब सभी मसीही किसी को यीशु के पास लाए।" नवम्बर 2000 में जॉन ने अपना कार्य शुरू किया।

शुरूआत में, जॉन ने नान्दोगं जिले के केवल तीन शहर में ही कलीसियाओं को पाया, और इनमें सब मिलाकर 250 ही मसीही थे। जॉन ने एक अति महत्वाकांक्षी लक्ष्य से आरम्भ किया कि वह जिले के सभी शहर में एक कलीसिया स्थापना होते हुए देखना चाहता है। इसका अर्थ था 200 से अधिक कलीसियाओं की स्थापना। जब जॉन ने अपने इस लक्ष्य को एक स्थानीय पास्टर के समक्ष रखा तो उस पास्टर ने अपना सिर हिलाया और कहा, "तुम्हे वापस हॉग कॉग चले जाना चाहिए!" कुछ प्रयास के बाद वह पास्टर तैयार हो गया कि जॉन इच्छुक विश्वासियों को कलीसिया स्थापना का प्रशिक्षण दें। कलीसिया के सदस्य अधिकतर किसान थे जो दिन भर अपने खेतों में काम करते थे, अतः कक्षाएं रात में चलती थी। पहले सत्र में 30 लोगों ने भाग लिया।

चेन दम्पत्ति ने अपना दर्शन बॉटने के द्वारा कक्षा की शुरूआत की परन्तु जो प्रशिक्षण लेने आए थे उन्हें सन्देह था। जॉन ने पाया कि उनके प्रभावी सुसमाचार प्रचारक बनने में दो बाधाएं थीं। पहली, उन्हें यह नहीं पता था कि क्या बोलना है और दूसरा कि उन्हें यह नहीं पता था कि बोलना किससे है। जॉन ने इसके समाधान के लिए सर्वप्रथम उन्हें एक सूची तैयार करने को कहा जिसमें उन लोगों के नाम थे जो खोए हुए थे और जिन्हें वे जानते थे, और तब जॉन ने उन्हें उस सूची से पॉच लोगों की पहचान करने को कहा जिन्हें वे सबसे पहले सुसमाचार सुनाएगें।

तब उसने प्रथम बाधा के तरफ ध्यान किया। जॉन ने उन्हें बताया कि उन प्रत्येक के पास बताने के लिए एक अनोखी कहानी है। एक व्यक्ति की कहानी साधारण है जिसके तीन भाग हैंः 1.यीशु को पाने से पहले आप कैसे थे, 2. यीशु से आपकी मुलाकात कैसे हुई और 3.यीशु को अपनाने के बाद आपका जीवन कैसा बन गया। तब जॉन ने उन्हें कहा कि वे अपने कहानी से धार्मिक शब्दों को हटा लें।

"हम इसे गवाही भी नहीं कहते," जॉन ने समझाया, "एक गवाही तो मसीहियों के लिए है। अविश्वासी यह नहीं जानते कि एक गवाही है क्या, अतः हम उसे अपनी कहानी कहते हैं।" जॉन ने प्रत्येक लोगों को अपनी गवाही को एक पन्ने पर लिखने को कहा।

सर्वप्रथम सभी लोग अपनी कहानी कहने से कतरा रहे थे, अतः जॉन ने उन्हें अपनी गवाही को पॉच बार ऊॅचे आवाज में पढ़ने को कहा और तब उन्हें तीन के समूह में बॉटकर अपनी गवाही एक दूसरे से बताने को कहा। प्रथम कक्षा के अन्त होते होते, वे किसान प्रशिक्षु उत्साहित और आत्मविश्वास से भरे हुए थे।

आने वाले कुछ सप्ताहों में , जॉन ने उन प्रशिक्षुओं को छह प्राथमिक पाठों को पढ़ाया ताकि वे अपने नए विश्वासियों को विश्वास के प्रमुख बातों में मजबूत कर सके। जब उसने उन्हें बाहर भेजा, उसने कहा, "जाओ और इस सप्ताह उन पॉच लोगों को अपनी गवाही बताओ जिन के नाम आपके सूची में है। जब आप अगले सप्ताह वापस आएगें, तो हम देखेगें कि परमेश्वर ने क्या किया।"

प्रथम कक्षा के बाद जॉन ने पाया कि 30 में से केवल 17 लोगों ने किसी को गवाही बताया, परन्तु एक किसान ने 11 लोगों को सुनाया। उनके विश्वास को

बढ़ाने के लिए , जॉन ने प्रत्येक प्रशिक्षु को अपना अनुभव बॉटने को कहा। इस तरह से , उन्होंने एक दूसरे से उत्साह मिला और वे सीखे भी। दूसरे पाठ के बाद जॉन ने उत्तरदायी होने की बात उन्हें सिखाई, "यदि आप इस सप्ताह किसी से अपनी कहानी नहीं कहने का चुनाव करते हैं तो, आप अगले सप्ताह कक्षा में मत आईएगा।" इससे प्रशिक्षु केवल सुनने के प्रति नहीं परन्तु काम करने के प्रति गम्भीर हुए। परिणाम को देखकर चेन दम्पत्ति भी चकित हो गए।

जनवरी 2001 तक (शुरूआत के दो महीनों के बाद), 20 छोटे समूह आरम्भ हो चुका था जो कलीसिया बन रहे थे। मई माह तक छोटे समूहों की संख्या 327 तक पहुँच चुकी थी और 4000 नए विश्वासियों ने बपतिस्मा लिया, और कलीसियाएं 17 शहरों में फैल चुकी थी। 2001 के अन्त तक, वहां 908 गृह कलीसियाएं स्थापित हो गईं जिसमें 12,000 से अधिक नए मसीही थे।

लूका 10 में जैसा यीशु के शिष्यों के साथ हुआ, प्रशिक्षुओं ने पाया कि प्रत्येक गांव जहां वे गए उन्हें पहले से ही तैयार एक शान्ति का पुरूष मिला जो उनके सुसमाचार की कहानी को सुनना चाहता था। एक बुजुर्ग किसान जिसने कभी कलीसिया स्थापना नहीं की थी, ने दो महीनों में 12 कलीसियाएं और एक वर्ष में 110 कलीसियाएं स्थापित कीं।

उस बुजुर्ग व्यक्ति की जीवन शैली उसके प्रभावी होने की वजह थी। वह प्रतिदिन 5 बजे सुबह से 7 बजे तक बाईबल पढ़ता था और तब 5 बजे शाम तक खेतों में कार्य करने के बाद वह रात्रि के भोजन एवं परिवार के साथ समय बिताने के लिए घर जाता था। तब वह फिर 7 बजे निकल जाता था और "आधी रात तक परमेश्वर के खेत में कार्य करता था।"

आज जो आन्दोलन वृहत कलीसिया स्थापना आन्दोलन बन चुका है उसमें यह बुजुर्ग किसान अनोखा नहीं है। एक दूसरे शहर में एक 67 वर्ष की महिला ने यीशु को ग्रहण किया, और एक वर्ष में वह 60 परिवारों को यीशु के पास लायी। जान ने कहा,"मैंने उससे कहा कि मुझे भी आप ले जाएं और दिखाएं कि ये आप कैसे कर पातीं हैं। वह लोगों को बताती है कि वह कमजोर थी और तब यीशु ने उसे बचा लिया। तब वह उन्हें अपने घर में बाईबल अध्ययन में बुलाती है। यह स्पष्ट है कि उसके ऊपर पवित्र आत्मा का अभिषेक है।"

"हम नए विश्वासियों को सिखाते हैं कि किस तरह बाईबल अध्ययन करें और परमेश्वर के साथ समय बिताएं। ताकि वे इसे हमेशा कर सकें। तब हम उन्हें सिखाते हैं कि कलीसिया किस लिए है और हम कैसे एक कलीसिया का रूप ले सकते हैं ताकि हम सभी मिलकर मसीह में बढ़ें।"

जॉन ने कहा, "एक बार, हमने एक मसीही मजदूर को खो दिया, परन्तु छह महीने बाद हमने उसे पुनः पाया, हुआ यह था कि उसे दूसरे बड़े फैक्ट्री में तबादला कर दिया गया था जहां 10,000 मजदूर थे। उन छह महीनों के दौरान, उसने 70 छोटे समूह आरम्भ किया और 10 पीढ़ियों के पुनरूत्पादन को देखा (कलीसिया द्वारा कलीसिया स्थापना)।"

यदि आप जॉन से इस प्रभावशाली आन्दोलन का रहस्य जानना चाहेगें, तो वह अपने पैंट को घुटने के ऊपर तक खींचेगा और आप उसके घुटने पर दाग देख पाएगें। वह कहता है,"आप को कम से कम दो घण्टे प्रतिदिन प्रार्थना में व्यतीत करना चाहिए।" जॉन अपने प्रशिक्षुओं को यह सिखाता है कि वे पवित्र आत्मा के अभिषेक के लिए प्रार्थना करें, परमेश्वर के सारे हथियार पहन लें, अपने अड़ोस पड़ोस के खोए लोगों के लिए प्रार्थना करें, और प्रत्येक बार जब वे सुनाने जाएं तो

प्रार्थना के साथ जाएं, और यह प्रार्थना करें कि शैतान के सभी आक्रमण से यीशु का लहू उनकी रक्षा करे।

सुबह में दो घण्टे के प्रार्थना के बाद, जॉन कटनी के खेतों में चला जाता है। वह विश्वासयोग्यता के साथ प्रतिदिन अपने साधारण कहानी को सुनाता है, और हर समय उन्हें ढूंढ़ता रहता है जिन्हें परमेश्वर ने चुना है। जॉन यही करने के लिए निरन्तर प्रशिक्षण देता रहता है।

वर्ष 2003 तक, प्रति महीना 300–400 कलीसिया स्थापना करने वालों को प्रशिक्षण दे रहा है। वह मुस्कुराते हुए कहता है, "आप नहीं जान पाएगें कि परमेश्वर किसे इस्तेमाल कर सकता है, इसलिए हम सभी को प्रशिक्षण देते हैं!" जॉन का सभी को प्रशिक्षण देने का यह सम्पर्ण ही उसके वास्तविक दर्शन (200 कलीसिया) से कहीं अधिक बढ़ोत्तरी होने का कारण ठहरा। आज यह आन्दोलन कई जिलों में फैल रहा है और धीमा होने का कोई चिन्ह नहीं दिख रहा है।

वास्तव में, सभी अनुमानों से नान्दोंग आन्दोलन निर्माण हो रहा आन्दोलन है। वर्ष 2001 में, 908 कलीसियाएं स्थापित हुई जिसमें 12,000 बपतिस्मा लिए सदस्य थे। अगले वर्ष, चेन ने 3535 नयी कलीसियाओं का उदय होते देखा जिसमें 53,430 से भी अधिक लोगों ने बपतिस्मा लिया। और तब वर्ष 2003 के प्रथम छह माह में, इस आन्दोलन ने 9320 नए कलीसियाओं को जन्म दिया और 104542 लोगों ने बपतिस्मा लिया। आज, जॉन 15 उप प्रशिक्षकों की अगुवाई करते हैं जो 30 प्रशिक्षण केन्द्र में पाए जाते हैं जो घर में या चर्च भवन में मिलते हैं और यह आन्दोलन बढ़ता ही जा रहा है।

जॉन और होप की कहानी हमें यह दिखाती है कि जब हम नजर को ऊपर को उठाते और अपने को अपने आराम के क्षेत्र से निकालते हैं तो क्या हो सकता है। चेन के अनुभव से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, परन्तु नान्दोंग आन्दोलन का ईन्धन और ईन्जन पाठयक्रम या तकनीक में नहीं है। इसके बजाए, वे प्रार्थना, दर्शन, अगुवे और उसके दल के आज्ञाकारिता में छिपे हुए हैं।

- दो महीनों के बादः 20 छोटे समूह आरम्भ हुए
- छह महीनों के बादः 327 गृह कलीसियाएं और 4000 बपतिस्मे
- एक वर्ष बादः 908 गृह कलीसियाएं और 12,000 बपतिस्मे
- अगले सालः 3535 नई कलीसियाएं और 53,430 बपतिस्मे
- 2002 के प्रथम छह माहः 9320 नई कलीसियाएं और 104,542 बपतिस्मे
- तीसरे वर्ष की समाप्ति परः 15,000 नई कलीसियाएं और 1,60,000 बपतिस्मे

प्रत्येक जन जो इस प्रकार के आन्दोलन को अनुभव करना चाहता है जो चेन ने अनुभव किया उसे एक समान सोच वाले सह कर्मियों के दल का विकास करना होगा और अगुवाई करना होगा। आप कैसे इस तरह के दल बना सकते हैं? यदि आप चाहते हैं कि आपका दल सफल हो तो अपने आप से पूछें कि क्या आपने उन्हें आवश्यक वस्तुएं दीं हैंः 1.दर्शन, 2. प्रशिक्षण, 3.जोश, 4.सह–कर्मी और 5.परिणाम जो आप चाहते हैं।

अब आईए हम देखें कि कैसे ये सारी बातें कलीसिया स्थापना आन्दोलन में महत्वपूर्ण हैं।

प्रमुख संघटक

1. दर्शन – अपने जन समूह या समुदाय के मध्य एक कलीसिया स्थापना आन्दोलन का अन्त दर्शन।

2. प्रशिक्षण– सुसमाचार प्रचार, शिष्यता, कलीसिया स्थापना, प्रशिक्षण और बढ़ोत्तरी में निपुणता की आवश्यकता ताकि उस नीति को पूरा किया जा सके जिसके द्वारा दर्शन को पूरा किया जा सकता है।

3. जोश– एक कलीसिया स्थापना आन्दोलन के दर्शन को पारस्परिक तौर पर पुनः जोर देना। एक दूसरे को यह स्मरण दिलाना कि मसीह के उद्धार के बगैर आपका समुदाय अनन्तकाल के लिए खो गया है।

4. सह कर्मी– जबतक आप बहुत सारे सह–कर्मियों को प्रशिक्षित नहीं करेगें, तबतक आपकी इच्छा कभी पूरी नहीं होगी। स्मरण करें, कि "संसाधन कटनी में ही है।" प्रत्येक खोया व्यक्ति एक अपेक्षित विश्वासी है और प्रत्येक नया विश्वासी एक सह–कर्मी है जिसे प्रशिक्षित करना है।

5. जवाबदेही– अपने दल में आप जवाबदेही के तरीके का निर्माण करें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी लोग सुसमाचार, शिष्यता कलीसिया स्थापना और प्रशिक्षण में लगातार बढ़ते जाएगें।

क्या होता है जब इनमें से कोई संघटक नहीं पाया जाता? यदि आपके समूह के पास प्रशिक्षण, जोश, सहयोगी और जवाबदेही पाई जाती है परन्तु एक कलीसिया स्थापना आन्दोलन का दर्शन स्पष्ट नहीं है तो आपके समूह में अव्यवस्था पायी जाएगी।

यदि आपके समूह में स्पष्ट दर्शन, जोश, एक बढ़ती हुई सह–कर्मियों की देह, और जवाबदेही पायी जाए परन्तु दर्शन पूरा करने के लिए निपुणता की कमी हो तो आपका समूह चिंतित और अनिश्चित पाया जाएगा!

यदि आपके समूह में सह–कर्मियों में दर्शन और निपुणता पाई जाती है और वे उत्तरदायी भी हैं परन्तु उनमें जोश का अभाव है तो बदलाव तो आएगा परन्तु बहुत धीरे।

यदि आपके समूह में स्पष्ट दर्शन, जोश, एक बढ़ती हुई सह–कर्मियों की देह, और जवाबदेही पायी जाए परन्तु कटनी से बढ़ते हुए संख्या में सह–कर्मियों को प्रशिक्षण देने में असफल रहे तो आपके समूह में हताशा पायी जाएगी।

अन्त में, यदि आप अपने समूह को दर्शनयुक्त अगुवाई, निपुणता, जोश और सह–कर्मी प्रदान करते हैं, परन्तु जवाबदेही लागू नहीं कर पाते तो समूह एक मिश्रित परिणामों को अनुभव करेगा, कुछ अच्छा कुछ बुरा।

कैमल अवलोकन
बी पी आई 4–3

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागियों का एक प्रवेश नीति से परिचय होगा, यह है मुसलमानों के बीच शान्ति के पुरूष को ढूंढ़ने के लिए सर्वोत्तम तरीका।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- तीन चार्टः प्रेरितों 17:16–34– जो कार्य पौलुस ने किया, प्रेरितों 17:16–34– जो कार्य पौलुस ने नहीं किया, अल इमरान 42–55 में ईसा के विषय में सच्चाईयां।
- स्थाई मार्कर
- "अल इमरान" और "कुरान के सहायक परिच्छेद" की प्रतिलिपी (आप उन्हें हाथ से इन संदर्भों को लिखने को कह सकते हैं)।
- एक पोस्टर जिस पर एक तीन कुबड़ वाला ऊँट जो कह रहा हो, "हेलो, मैं अल हूँ"

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है) :
अल इमरान परिच्छेद की प्रतिलिपी बना लें (इतनी कि सभी गृह कलीसिया समूह के लिए पर्याप्त हो)।

कुरान से सहायक परिच्छेदों की प्रतिलिपी बना लें (इतनी कि सभी व्यक्ति के लिए पर्याप्त हो)।

पोस्टर पेपर के तीन टुकड़ों पर तीन चार्ट बना लेंः

प्रेरितों 17:16–34– जो कार्य पौलुस ने किये
प्रेरितों 17:16–34– जो कार्य पौलुस ने नहीं किये
अल इमरान 42–55 में ईसा के विषय में सच्चाईयां

एक पोस्टर बनाएं जिस पर एक तीन कूबड़ वाला ऊँट जो कह रहा हो, "हेलो, मैं अल हूँ"

प्रवेश स्तरों को जाचें (15 मिनट):
प्रतिभागियों को गृह कलीसिया समूह में बॉट दें। उन्हें पॉच से दस मिनट का समय दें ताकि वे प्रेरितों के काम 17:16–34 पढ़ें और उन बातों पर गौर करें कि पौलुस ने एथेन्स के लोगों को सुसमाचार बताने के लिए किन बातों को किया और किन बातों को नहीं किया। उसे क्या प्रत्युत्तर मिला, यह भी गौर करें।

श्वेत पट पर "जो कार्य पौलुस ने किये" और "जो कार्य पौलुस ने नहीं किये" इन दोनों चार्ट को लटका दें।

जब लोग बता रहें हों तो किसी से आगे आने को कहे ताकि वह इन बातों को बोर्ड पर लिख सके। पहले लोगों से यह बताने को कहें कि पौलुस ने क्या किया (समूह से न पूछें बरन सभी को बोलने की अनुमति दें)। तब उन्हें यह बताने को कहें कि उसने क्या नहीं किया (जैसे, उसने उन्हें मूर्ति पूजा करने के लिए डांटा नहीं, उसने पवित्र शास्त्र भी इस्तेमाल नहीं किया–उनके कवियों को इस्तेमाल किया)। जिन बातों को समूह ने छोड़ दिया उन्हें जोड़ें।

पूछें: "क्या किसी को वे तीन प्रत्युत्तर मालूम है, जो एथेन्स वासियों ने पौलुस को दिये?" (कुछ ने विश्वास किया, कुछ लोगों ने हंसी उड़ाई, और कुछ लोग अधिक सुनने के इच्छुक थे।)

मुख्य सत्र (30 मिनट) :

तीन कूबड़ वाले अल के पोस्टर का टॉग दें। अपने मित्र अल इमरान का परिचय कक्षा से कराएं। बताएं कि वह एक तीन कूबड़ वाला ऊँट है जिसके 42 भाई और 55 बहनें हैं। कहें " अल हम लोगों की सहायता करेगा ताकि हम कुरान के द्वारा मुसलमानों के बीच सुसमाचार सुनाने के लिए प्रवेश नीति सीख पाएं। जैसे पौलुस ने एथेन्स वासियों को सुसमाचार सुनाने के लिए सांस्कृतिक पुल का सहारा लिया, उसी प्रकार हम मुसलमानों तक पहुँचने के लिए कुरान को पुल के समान इस्तेमाल करेगें ताकि ईसा को ऊपर उठाएं और उन्हें ढूंढें जो विश्वास करेगें, अधिक सुनना चाहेगें, या जो केवल हंस देगें।"

संक्षिप्त रूप से यह समझाएं कि कुरान किस प्रकार की है (उसमें 114 अध्याय हैं जो सबसे बड़े से शुरू होकर सबसे छोटे तक जाता है और प्रत्येक अध्याय केवल अध्याय या सूरा संख्या के अलावा एक नाम है) और अल इमरान 42–55 को किस प्रकार खोजा या पढ़ा जा सकता है।

प्रतिभागियों को उनके गृह कलीसिया समूहों में भेज दें। प्रत्येक समूह को अल इमरान 42–55 की एक प्रतिलिपी दे दें। उन्हें पॉच से दस मिनट का समय दें कि वे इसे पढ़ें और यहां जो कुछ भी ईसा (यीशु) के विषय सत्य बातें (जो बाईबल के अनुरूप है) लिखीं है उस पर गौर करें।

किसी को आगे आकर पोस्टर पेपर "अल इमरान 42–55 में ईसा के विषय में सच्चाईयॉ" पर लिखने को कहें। समूह के बजाए प्रतिभागियों को सच्चईयों को बताने को कहें।

संक्षिप्त रूप में समझाएं कि कैमल तरीके को यह नाम कैसे मिला (अरबी विश्वास के अनुसार अल्लाह के 100 नाम हैं परन्तु मनुष्य केवल 99 नाम ही जानता है– ऊँट को 100 वां नाम मालूम है पर वह नहीं बता रहा है)। इस कहानी को कहने के बाद इस तरीके को कैमल तरीका कहने के दूसरे कारण को बताएं, जैसे सी ए एम ई एल आदिवर्णिक शब्दः

सी – मरियम को चुना गया था
ए – स्वर्गदूतों ने उसे यह समाचार सुनाया
एम – ईसा ने आश्चर्यकर्म किए
ई एल – ईसा के पास अनन्त जीवन है।

अल ऊॅट का पुर्न अवलोकन करें और समझाएं कि उसके तीन कूबड़ भी ईसा की तीन सच्चाईयों को दर्शाती हैः पवित्र (45–47), शक्तिशाली (49–50), और वह स्वर्ग में है (55)।

इस भाग की तैयारी के लिए, आप प्रतिभागियों को निम्नलिखित लिखने को कहेंः *सूराह* 6:115, *सूराह* 10:94, और *सूराह* 46:9

इसे संक्षिप्त रूप से बताएं कि आप किस प्रकार कैमल तरीके को एक मुसलमान के साथ इस्तेमाल करेगें। और उनके कुछ सामान्य आपत्ति का समाधान कैसे करेगें (**कुरान से सहायक परिच्छेदों के पन्ने को बाटें**):

आपका **सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नः** *यह रोचक है, क्या यह कुरान से है या हदिथ से? क्या आप उसे मुझे दिखा सकते हैं?* (मुसलमानों के अधिकतर यीशु और बाईबल के प्रति आपत्ति कुरान में नहीं पाई जाती, परन्तु इस्लामिक परम्परा की पुस्तक *हदिथ* में पाई जाती है। मुसलमान इसे स्वीकार करते हैं कि हदिथ "परमेश्वर की पुस्तक"से अलग है और इसलिए पूर्णरूप से भरोसे लायक नहीं।

सारांश (5 मिनट):

कहेंः "**कैमल** तरीका एक प्रवेश नीति है जो आपको यह देखने में सहायता करती है कि पवित्र आत्मा कहां मुसलमानों के बीच कार्य कर रहा है। लक्ष्य यह है कि उन्हें बाहर निकालें और उन्हें *सूराह* 3:50 तक पहुॅचाएं ताकि वे ईन्जिल में ईसा के आदेश के पास पहुॅचें।"

सूराह 3:50 में ईसा कहते हैं..."मैं तुम्हारे पास प्रभु का एक चिन्ह लेकर आया हूॅ इसलिए अल्लाह के प्रति (अपने कर्तव्यों के प्रति) गम्भीर रहो और मेरी आज्ञा मानो।"

"कुरान के अनुसार, हमें ईसा की आज्ञाओं का पालन करना है। ईसा की आज्ञा क्या हैं?"

कहेंः "यदि आप ने एक मुसलमान से यह पूछा और उसने कहा कि उसे नहीं मालूम तब आप क्या करेगें? उन्हें एक बाईबल दें।"

कुरान से सहायक परिच्छेद

उनकी आपत्तिः "हां, परन्तु बाईबल (इन्जिल) को बदल दिया गया है।"

आपका प्रत्युत्तरः "कुरान इसके विषय में क्या कहती है? कृप्या देखेंः *सूराह* 6:115 और 10:94 क्या बाईबल बदली गई है?

सूराह 6:115 "प्रभु का वचन सत्य और न्याय में सिद्ध है। कोई भी बात उसके वचन को नहीं बदल सकती। वह सुनने वाला और जानने वाला है।"

सूराह 10:94 "यदि तुम्हें संदेह है जो हमने तुम्हें प्रकट किया है तो उनसे प्रश्न करें जिन्होंने तुम से पहले पवित्र शास्त्र पढ़ा है। यह सच है कि प्रभु से सत्य तुम्हारे पास आया है इसलिए हिचकिचाओ मत।"

उनकी आपत्तिः "यीशु वास्तव में नहीं मरा"

आपका प्रत्युत्तरः "कुरान इसके विषय में क्या कहती है? कृप्या देखेंः *सूराह* 19:33"

सूराह 19:33 "सो शान्ति मेरे ऊपर है जब मैं जन्मा, जिस दिन मैं मरूँगा, और जिस दिन मैं जीवित उठूगॉ (फिर से)"

वे पूछ सकते हैंः "नबी मुहम्मद के विषय में आप क्या कहते हैं?"

आपका प्रत्युत्तरः "जो कुरान मुहम्मद के विषय में कहती है मैं उससे सहमत हूँ। क्या आप सूराह 46:9 पढ़ेगें?"

सूराह 46:9 "अल्लाह के संदेशवाहकों में मैं कोई नया नहीं हूँ, न ही मुझे यह मालूम है कि मेरे साथ या तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा। जो मेरे अन्दर प्रेरणा आता है मैं उसका अनुसरण नहीं करता, और मैं तो बस एक साधारण चेतावनी देने वाला हूँ।"

"स्मरण करें कि हमने सूराह 3:50 में क्या पढ़ा?"

सूराह 3:50 "मैं तुम्हारे पास प्रभु का एक चिन्ह लेकर आया हूँ इसलिए अल्लाह के प्रति (अपने कर्तव्यों के प्रति) गम्भीर रहो और मेरी आज्ञा मानो।"

"कुरान के अनुसार, हमें यीशु की आज्ञा माननी है। ईसा की आज्ञा क्या हैं?"

टी 4 टी पहला दिन
बी पी आई 4–4

(3 घण्टे)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी और स्थानीय विश्वासी एक **टी 4 टी** प्रशिक्षण सत्र में भाग लेगें। प्रशिक्षक स्थानीय विश्वासियों का एक समूह प्रशिक्षण में लाएगें और एक **टी 4 टी** प्रशिक्षण के प्रथम सत्र में सिखाएगें ताकि यह **बी पी आई** प्रतिभागियों के लिए उदाहरण हो।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- कागज और कलम ताकि जिन लोगों को कहानी बताना है उनके नाम लिखे जाएं

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
जबकि **टी 4 टी** के परिचय का एक भाग **सी पी एम** के दर्शन संबंधी है और गुणा बनाम जोड़ के महत्व की व्याख्या करता है, अतः प्रशिक्षक को चाहिए कि वह स्थानीय विश्वासियों के लक्ष्य को जाने जो इस प्रशिक्षण में भाग ले रहे हैं ताकि यह जानकारी इस्तेमाल की जा सके। आपको एक विशेष समूह उदाहरण के आधार पर "गुणा बनाम जोड़" में गणित करना पड़ेगा।

टी 4 टी का पहला दिन काफी लम्बा होता है, इसलिए अगर कई प्रशिक्षक छोटे छोटे भागों को सिखाए तो प्रतिभागियों के लिए बैठना आसान हो जाता है।

प्रतिभागियों से कहें कि वे सत्र की शुरूआत अराधना के साथ करने में सहायता करें (दो गीत अंग्रेजी में और दो स्थानीय भाषा में)।

जहां तक सम्भव हो, उन्हीं एस सी का उपयोग करें जो बी पी आई के बाद भी प्रशिक्षण जारी रखेगें ताकि आप उन्हें, उनके लिए जिन्हें वे प्रशिक्षण देगें, एक **टी 4 टी** अभ्यास कर्ता के रूप में स्थापित करें।

परिचय (10 मिनट):
टी 4 टी प्रशिक्षण में समूह का स्वागत करें। प्रार्थना और अराधना के समय के साथ शुरूआत करें। समझाएं कि आज दो समूहों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति को यह बताने का अवसर दें कि उसका नाम क्या है, वह कहां से आया / आई है, और वह कब विश्वास में आया / आई। दूसरे प्रशिक्षक को इसे पहले कर के दिखाने को कहें।

अन्त में, **टी 4 टी** के साथ अपने अनुभव और अपना परिचय दें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):

पूछें: "क्या किसी को मालूम है कि **टी 4 टी** क्या है? आप इस प्रशिक्षण के विषय में क्या जानते हैं?"

किसी को आगे आकर पोस्टर पेपर पर लिखने को कहें। पूछें: "इस प्रशिक्षण से आपकी क्या अपेक्षाएं हैं (इन्हें पोस्टर पेपर पर लिखें ताकि प्रशिक्षण के अन्त में आप इसका मूल्यांकन कर सकें)?"

मुख्य सत्र:

दर्शन प्रदान करना(10 मिनट) :

कहें: "मैं आज यहॉ इसलिए आया हूँ क्योंकि परमेश्वर ने मुझे दक्षिण एशिया के 1.4 अरब लोगों के लिए बोझ दिया है।

"क्या कोई प्रत्येक भाषा में 2 पतरस 3:9 पढ़ेगा? यह पद 1.4 अरब लोगों के विषय में क्या कहती है?

"मेरी लालसा है कि दक्षिण एशिया प्रत्येक व्यक्ति सुसमाचार को एक समझ में आने वाले तरीके से सुन पाए और उसे यह अवसर मिल पाए कि वह एक पुनरूत्पादन करने वाली उस गृह कलीसिया में सहभागी हो जो सुसमाचार को अपने समुदाय, देश और संसार में ले जा रहा है।" (जब आप इसे बी पी आई वालों से साथ सूचना प्राप्त करेगें, तो यह बता दें कि उन्हें दर्शन प्रदान करने के लिए अपने दर्शन का इस्तेमाल करना होगा)। "आज आपको इस प्रशिक्षण में उसके द्वारा निमंत्रण मिला है जिसे दक्षिण एशिया के विशेष जन समूह या भौगोलिक स्थान का बोझ है।" (आपके पास एस सी हैं जिन्होंने स्थानीय विश्वासियों को अपने अन्त दर्शन बॉटने के लिए बुलाया है)।

जोड़ बनाम गुणा (15 मिनट):

कहें: "यदि आप चाहते हैं कि ––––– जन समूह के ––––––– लोग सुसमाचार सुनें, तो इसके लिए कितना वक्त लगेगा?" (इस गणित को सत्र से पहले ही कर लें)

जन समूह की संख्या को बोर्ड पर लिख लें। तब कमरे में पाए जाने वाले लोगों की संख्या लिखें जो उस जन समूह पर केन्द्रित हैं। कहें: "यदि प्रत्येक लोग प्रतिदिन जन समूह में एक व्यक्ति को सुसमाचार सुनाएगा, तो जब तब इस जन समूह के सभी लोग इसे सुनें इसमें ––––– वर्ष लग जाएगें। इस गणना में नए शिशुओं या मरने वालों को नहीं रखा गया है।

कहें: **"यह बहुत ही धीमा है!"**

कहें: "प्रत्येक विश्वासी को सुसमाचार बताने और दूसरे विश्वासियों को शिष्य बनाने और नई कलीसिया स्थापित करना जानना चाहिए।

"यदि आप सभी ––– लोग प्रति सप्ताह पॉच लोगों को सुसमाचार सुनाते हैं और वे जाकर पॉच पॉच लोगों को सुनाते हैं और वे जाकर फिर पॉच पॉच लोगों को सुनाते

हैं तो आप जानते हैं कि सुसमाचार कितनी तेजी से जन समूह / शहर के ––––लोगों में फैलेगा?

"––––––सप्ताह से भी कम समय लगेगा– यदि जिन्होंने सुना है उन सभी लोगों ने प्रति सप्ताह पॉच लोगों को सुनाना शुरू कर दिया।

"यदि कलीसिया के सभी विश्वासी प्रति सप्ताह पॉच लोगों को सुसमाचार सुनाते हैं तो कलीसियाएं, नए कलीसियाओं को जन्म देंगी और तेजी से कार्य बढ़ेगा।"

टी4टी का परिचय (15 मिनट):

कहें: "प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण मत्ती 28:18–20 और 2 तिमुथियुस 2:2 पर आधारित है।" (किसी को इन पदों को पढ़ने को कहें)। इन पदों को ध्यान से देखें। लोगों को खड़ा कर के 2 तिमुथियुस 2:2 में पाए जाने वाली पीढ़ियों को दर्शाएं।

कहें: "जब आप अगले कुछ सप्ताहों में टी4टी प्रशिक्षण को पाएगें, आप सुसमाचार बताना सीखेगें, यह भी कि किसे सुनाना है और यह भी सीख पाएगें कि कैसे उन विश्वासियों को प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे दूसरे लोगों को प्रशिक्षण दें। प्रत्येक जन जो टी4टी प्रशिक्षण में भाग लेता है उसे यह कहा जाता है कि एक सप्ताह में वह पॉच लोगों को सुसमाचार सुनाए और प्रशिक्षण दे जो जाकर एक सप्ताह में पॉच लोगों को प्रशिक्षण देगें।"

पूछें: "क्या आप में से कोई इसके विषय में घबराया हुआ है?" किसी को यूहन्ना 14:12 सभी भाषा में पढ़ने को कहें। कहें: "इससे हमें बहुत उत्साहित होना चाहिए।"

कहें: "यदि प्रत्येक व्यक्ति जाकर पॉच लोगों को प्रशिक्षण देता है और वे लोग जाकर पॉच लोगों को प्रशिक्षण देते हैं तो ––––लोग ––––––सप्ताह में सुसमाचार सुन लेगें।"

कहें: "क्या आप शुरूआत करने के लिए तैयार है?"

सुसमाचार बॉटने के लिए चार बुलाहट(15 मिनट):

कहें: "विश्व में, कम से कम ऐसी चार अलग अलग बुलाहट है जो हमें सुसमाचार सुनाने के लिए कहती है।" (प्रत्येक के लिए हाथ के इशारे का प्रयोग करें: ऊपर–ऊपर दिखाएं, नीचे– नीचे दिखाएं, अन्दर– अपनी ओर इशारा करें, बाहर– अपने से दूर इशारा करें।) प्रत्येक को निम्नलिखित के समान समझाएं:

1. ऊपर से बुलाहट– यह यीशु का निवेदन है।

उसने उनसे कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" मरकुस 16:15

तब मैंने प्रभु का यह वचन सुना, "मैं किसको भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा?" यशायाह 6:8

परमेश्वर हम लोगों से बस यह नहीं चाहता कि हम सुसमाचार बॉटें परन्तु यशायाह के अनुसार ऊपर से हमारी बुलाहट भी है कि हमें सुसमाचार सुनाना है।

2. नीचे से बुलाहट– वह बुलाहट जो उन आत्माओं से आती हैं जो नरक में तड़प रहें हैं।

जब धनवान मनुष्य और लाजर दोनों मरे तो धनवान मनुष्य नरक में गया और लाजर अब्राहम के गोद में गया। उस धनवान मनुष्य ने अब्राहम से कहा, "मैं तुझसे विनती करता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज क्योंकि मेरे पॉच भाई हैं , वह उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आऍं।" लूका 16:27–28

क्या हम नरक में तड़प रहे लोगों की बुलाहट को सुनते हैं, वह बुलाहट जो नीचे से आ रही है?

3. अन्दर से बुलाहट– यह बुलाहट प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर से आती है।

जब से पौलुस ने मसीह पर विश्वास करना शुरू किया, उसने अपने अन्दर एक मजबूत इच्छा को पाया जो उसे बाहर जाकर सुसमाचार सुनाने के लिए उकसा रहा था। उसने कहा, "यदि मैं सुसमाचार सुनाऊँ, तो मेरे लिए कुछ घमण्ड की बात नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिए अवश्य है। यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय! क्योंकि यदि अपनी इच्छा से यह करता हूँ तो मजदूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता तौभि भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है।" 1 कुरि 9:16–17

4. बाहर से बुलाहट– मकिदुनिया से बुलाहट

वहॉ पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरूष खड़ा हुआ उससे विनती करके कह रहा है, "पार उतरकर मकिदुनिया में आ, और हमारी सहायता कर।" प्ररितों के काम 16:9

एक बार जब पौलुस को बाहर से बुलाहट मिल गयी, वह सुसामाचार को एशिया से यूरोप में ले आया, और बाद में हम देखते हैं कि सुसमाचार यूरोप से उत्तरी अमरीका और तब समूचे संसार में फैल गया।

कहें: "हमें सुसमाचार सुनाने के लिए क्या विवश करता है? चार बुलाहट:

1. ऊपर	मरकुस 16:15, यशा 6:8
2. नीचे	लूका 16:27–28
3. अन्दर	1 कुरिन्थियों 9:16–17
4. बाहर	प्रेरितों के काम 16:9

"अत: हम में से प्रत्येक को ये चार बुलाहट सुनने के योग्य होना चाहिए जो हमें जाकर सुसमाचार सुनाने का निवेदन करती हैं।"

आपके लिए परमेश्वर की योजना– परिवारों को बचाना (20 मिनट):

कहें: "यीशु ने आपको किसी उददेश्य के साथ उद्धार दिया है।" यदि समूह बड़ा हो तो उन्हें सात समूह में बॉट दें; यदि नहीं तो सभी लोगों को इन परिच्छेदों को पढ़ने को कहें और तब समूह से बताएं क्या हुआ।

उत्पत्ति 6:11–7:1
उत्पत्ति 19:12–23
यहोशु 2:17–20; 6:15–17
मरकुस 5:1–20
प्ररितों के काम 10:9–48
प्ररितों के काम 16:11–15
प्ररितों के काम 16:25–31

कहें: "परमेश्वर आपको उद्धार देना चाहता है और आपके द्वारा आपके परिवार को बचाना चाहता है।" प्रत्येक परिच्छेद को निम्नलिखित की तरह समझाएं:

1. परमेश्वर ने **नूह** के लिए चिन्ता की और उसके द्वारा उसके पूरे परिवार को बचाया (उत्पत्ति 6:11–7:1)
परमेश्वर चाहता था कि नूह एक जहाज बनाए और यह चेतावनी दे कि बचने का बस एक ही उपाय है, जहाज के अन्दर आना। बहरहाल, नूह के 120 वर्ष तक चेतावनी देने के बावजूद एक भी व्यक्ति ने उसकी बात नहीं मानी। इसके बावजूद उसकी पत्नी, बेटे और बहुओं ने उसके बातों पर विश्वास किया और वे बच गए।

2. परमेश्वर ने **लूत** के लिए चिन्ता की और उसके पूरे परिवार को बचाया (उत्पत्ति 19:12–23) जब परमेश्वर सोदोम और अमोरा को नाश करना चाहा तो उसने अब्राहम के कारण लूत और उसके परिवार को बचाया। दुःख की बात है कि उसके दामादों ने उसकी बात न मानी और वे बच नहीं पाए (हो सकता है कि लूत ने अपनी गवाही अच्छी न रखी हो, अतः आपातकाल में वह अपने परिवार को नहीं बचा पाया)। अन्त में, केवल लूत और उसकी दो बेटियां बचे परन्तु यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी– परमेश्वर उसके समूचे परिवार को बचाना चाहता था।

3. परमेश्वर ने **राहाब** के लिए चिन्ता की और उसके द्वारा समूचे घराने को बचाया (यहोशु 2:17–20) राहाब ने इस्राएल के दो भेदियों की जान बचायी और उनसे इस्राएल द्वारा यरीहो पर आक्रमण के समय उसके परिवार की सुरक्षा के लिए निवेदन किया।

4. परमेश्वर ने **गिरासेनियों के दुष्टात्माग्रस्त** के लिए चिन्ता की और उसके द्वारा उसके सम्पूर्ण परिवार को बचाया (मरकुस 5:12–20) जब इस दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति से दुष्टात्मा निकली, उसने यीशु के साथ जाना चाहा परन्तु यीशु चाहता था कि वह घर जाए और जाकर अपने सम्पूर्ण परिवार को सुसमाचार सुनाए। इस तरह से, पूरा परिवार बच गया।

5. परमेश्वर ने **कुरनेलियुस** के लिए चिन्ता की और उसके द्वारा उसके सम्पूर्ण परिवार को बचाया (प्रेरितों के काम 10:23–25) कुरनेलियुस ने अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को निमंत्रण दिया जब पतरस को उसने अपने घर बुलाया ताकि जब पतरस आए और सुसमाचार सुनाए, तो कुरनेलियुस का पूरा घराना बच जाए।

6. परमेश्वर ने **लुदिया** के लिए चिन्ता की और उसके द्वारा उसके सारे परिवार को बचा लिया (प्रेरितों के काम 16:14–15) जैसे ही लुदिया ने उद्धार पाया, वह अपने समूचे परिवार को मसीह के पास लाई।

7. परमेश्वर ने **फिलिप्पी के दारोगा** के लिए चिन्ता की और उसके द्वारा उसका सारा परिवार को बच गया (प्रेरितों के काम 16:31) जब दारोगा ने परमेश्वर को जाना, वह तुरन्त उसी रात पौलुस और सीलास को अपने घर ले गया ताकि उसका सम्पूर्ण घराना बच जाए।

कहें: "परमेश्वर आपके लिए भी चिन्ता करता है और आपके परिवार को भी बचाना चाहता है।

"बारम्बार परमेश्वर ने दिखाया है कि जब वह किसी को उद्धार देता है, तो वह उसके सम्पूर्ण परिवार को बचाना चाहता है। आप में से कितने लोगों के परिवार में ऐसे लोग पाए जाते हैं जिन्होंने अभी तक यीशु को नहीं स्वीकार किया है?"

खोए लोग / जिन्हें प्रशिक्षण देना है की सूची बानाएं (15 मिनट):

प्रत्येक व्यक्ति को एक पेन और पेपर दे दें। और उन्हें उन व्यक्तियों के नाम लिखने को कहें जिन्हें वे जानते हैं और जो विश्वासी नहीं हैं। इसके लिए आप प्रश्न पूछकर उनकी सहायता कर सकते हैं। यदि प्रतिभागी लम्बे समय से विश्वासी हैं, और उनकी सूची छोटी है तो उन्हें विश्वासियों के नाम लिखने को कहें जिन्हें वे उन बातों को सिखा सकते हैं जो उन्होंने सीखा है। जब वे लिख लें तो उन्हें समूह मे बॉटकर उनके लिए प्रार्थना करें।

कहें: "लोग बाईबल से विवाद कर सकते हैं, परन्तु जो परमेश्वर ने आपके जीवन में किया है आप उससे विवाद नहीं कर सकते। हम प्रत्येक के पास एक गवाही है जो यीशु ने हमारे साथ किया है। सभी गवाही के तीन भाग होते हैं:

1. यीशु को जानने से पहले का जीवन
2. आप यीशु से कैसे मिले
3. कैसे यीशु के कारण आपके जीवन में परिवर्तन आया

कहें: "एक वाक्य के साथ शुरू करें ताकि उनकी रूचि जगे और एक प्रश्न के साथ अन्त करें ताकि आपने जो कहा है उसके प्रति वे प्रत्युत्तर दें।"

अपनी गवाही को बताएं और उन्हें इन बातों को सुनने दें। तब उन्हें दो दो में बॉट दें और गवाही सुनाने का अभ्यास करने को कहें।

समूह को फिर वापस बुला लें। किसी एक व्यक्ति को अपनी गवाही सुनाने को कहें। समूह को गवाही के तीन भाग पहचानने को कहें। पूछें: "क्या यहां एक शुरूआत थी? क्या यहां अन्त में एक प्रश्न था ताकि जो उसने सुनाया उसका प्रत्युत्तर देने का अवसर सुनने वाले को मिलने पाए?"

कहें: "अपनी गवाही कहने के लिए हमें अनुमति लेने की आवश्यक्ता नहीं है। जब यीशु खोई हुई भेड़ को खोजने के लिए गया, क्या उसने यह कहा, 'छोटे मेम्ने, तुम खो गए हो, क्या तुम घर जाना चाहते हो?' नहीं यीशु ने उसे उठाया और घर वापस लाया। ये लोग खोए लोग हैं; हमें बस उन्हें यह बताना है कि घर कैसे वापस पहुँचा जा सकता है।"

सुसमाचार प्रस्तुतिकरण (25 मिनट):

एक आसान पुनरूत्पादन करने वाले सुसमाचार प्रस्तुतिकरण सिखाएं (रोमी मार्ग, ईवैन्ग–कार्ड, इत्यादि), तब उन्हें दो दो में बॉटकर इसे अभ्यास करने को कहें। (जॉन चेन इस बिन्दु पर "पाठ 1" सिखाते हैं, परन्तु हम इस पाठ को टी 4 टी के अपने दूसरे सत्र में सोमवार को देखेगें। हम चाहते हैं कि लोग अपने सुसमाचार प्रस्तुतिकरण के साथ तैयार रहें ताकि इस सप्ताहांत यदि उन्हें अवसर मिले तो वे सुसमाचार बॉट पाएं।)

पॉच का समूह (5 मिनट):

कहें: "अब लोगों के नामों की सूची को लें। इन लोगों को पॉच के समूह में विभाजित कर दें– ऐसा विभाजन जो स्वाभाविक हो। इनमें से एक समूह को चुनें जिसे आप इस सप्ताह गवाही सुनाएगें। किसी को लेकर इन नामों का आप उसे बताएं। और इस सप्ताह एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने का समर्पण करें।"

सारांश (5 मिनट):

कहें: "जब अगली बार हम मिलें, तो हम प्रत्येक लोगों को अपने समूह को यह बताने को कहेगें कि जब आपने अपने सूची के पॉच लोगों को सुसमाचार सुनाया तो क्या हुआ। आप प्रशिक्षण के लिए प्रति सप्ताह जमा होगें। प्रत्येक सप्ताह के प्रशिक्षण सत्र तीन भागों में विभाजित किए जाएगें (जवाबदेही, नए संसाधन और संसाधनों को फिर से सिखाना)। हम क्यों आपको उत्तरदायी ठहराते हैं? क्योंकि यदि हम ऐसा नहीं करें, तो आप भी कुछ नहीं करेगें।"

याद रखें आपका गृह कार्य है कि अगले सत्र से पहले आपको अपनी कहानी अपने सूची के पॉच लोगों को सुनाना है (सोमवार जब हम मिले तो कम से कम एक व्यक्ति को)।"

समूह के लिए प्रार्थना के साथ समाप्त करें।

चौथे दिन की सूचना प्राप्त करना

(45 मिनट)

एक बार जब स्थानीय **टी 4 टी** प्रतिभागी चले जाएं, आपको चाहिए कि आप उस प्रशिक्षण सत्र की सूचना प्राप्त करें।

पूछें: "वे कौन सी बातें हैं जिन्हे आपने इस **टी 4 टी** के प्रथम सत्र में ध्यान दिया? क्या आपने प्रशिक्षक को कुछ ऐसा करते देखा जिससे आप चकित हुए? क्या ऐसा कुछ था जो आपके समझ में नहीं आया?" प्रतिभागियों को इसके उत्तर देने को कहें।

प्रतिभागियों को यह बताएं कि **टी 4 टी** में जिन्हें वे प्रशिक्षण दे रहें हैं उन्हें दर्शन प्रदान करने के लिए अपने अन्तदर्शन का इस्तेमाल करना है।

पूछें: "प्रथम **टी 4 टी** पाठ की मौलिक बातें क्या हैं?" (चार बुलाहट, गवाही, परमेश्वर आपके परिवार को बचाना चाहता है, सूची तैयार करना)।

पूछें: "क्या यहां किसी बात ने आप चुनौती दी?" उन्हें इसे बताने दें। उनके लिए प्रार्थना करें कि वे इन चुनौतियों के सामने खड़ें हो पाएं और अपने जीवन एवं सेवकाई में आवश्यक बदलाव लाएं।

पूछें: "क्या किसी के परिवार में ऐसा कोई व्यक्ति है जिसे आपको अपनी गवाही और सुसमाचार सुनाना है?" रूककर उनके लिए प्रार्थना करें।

गृहकार्य:

अपने अध्ययन पुस्तिका में से प्रभु भोज के परिच्छेदों को पढ़ें और प्रकरण अध्ययन 5 एवं 6 का अध्ययन करें।

कहें: "याद रखें कि आपको भी अपनी कहानी आज और सोमवार के बीच सुनानी है!"

दिन 5 के लिए एच सी बाईबल परिच्छेद

मत्ती 13:44–46

दिन 5 का अवलोकन (शुरूआत)

(15 मिनट)

दिन के लिए जो सूचनाएं देनी हैं उसे बताएं। प्रार्थना निवेदन पूछकर, उनके लिए प्रार्थना करें और सत्र की शुरूआत करें।

इस सत्र में प्रतिभागी गृहकार्य परिच्छेदों का सार देखेगें और प्रभु भोज से संबंधित धर्मविज्ञानी समस्याओं पर विचार करेगें

पूछें: "आपमें से कितने लोगों ने प्रभु भोज के परिच्छेदों को पिछली रात गृह कार्य में पढ़ा?"

स्वयंसेवकों को इन परिच्छेदों के महत्व को समझाने को कहें। एक परिच्छेद बताएं और किसी को उसे समझाने को कहें कि यह प्रभु भोज के विषय में क्या कहता है।

- निर्गमन 12:1–13 (फसह की उत्पत्ति, इस भोज के दौरान ही यीशु ने प्रभु भोज की शुरूआत की)
- मत्ती 26:17–30 (यीशु ने फसह को लेकर उसे एक नया अर्थ दिया, और अपने शिष्यों को यह आदेश दिया कि उसके स्मरण में वे हमेशा ऐसा करें)
- 1 कुरिन्थियों 11:17–18, 23–26 (प्रभु भोज में शामिल होने के सही तरीकों का निर्देश)
- इफिसियों 4:4–6 (एक देह और आत्मा, एकता)
- 1 कुरिन्थियों 10:17 (लहू एवं देह का स्मरण, यीशु की उपस्थिति, हमारी एकता)

पूछें: "प्रभु भोज से जुड़ी कौन सी धर्मविज्ञानी समस्या खड़ी हो सकती है?" संक्षिप्त तौर पर विवेचना करें।

प्रेरितों के काम में कलीसिया स्थापना के तरीके
बी पी आई 5–1

(30 मिनट)

विषय और लक्ष्य:
इस सत्र में प्रतिभागी प्रेरितों के काम पुस्तक के उन परिच्छेदों का अध्ययन यह देखेने के लिए करेगें कि किस तरह शिष्य किसी क्षेत्र में गए और कैसे सुसमाचार सुनाया। वे एक सामान्य प्रक्रिया को भी पहचानेगें कि लोगों ने सुसमाचार के प्रति जो भावना दिखाई– सताव।

आवश्यक संसाधन:
- श्वेत पट एवं मार्कर्स

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
पॉच पोस्टर पेपर को निम्नलिखित तरीके से तैयार करें। ऊपरी भाग पर एक पवित्र शास्त्र परिच्छेद लिख दें। उसके नीचे निम्नलिखित प्रश्न लिखें (उत्तर के लिए स्थान छोड़ें):

प्रेरितों के काम 3:1–4:31
प्रेरितों के काम 5:12–42
प्रेरितों के काम 6:8–8:4
प्रेरितों के काम 13:13–52
प्रेरितों के काम 14:1–7

1. वे कैसे "प्रवेश" किए या कैसे वे यीशु के विषय में बताने लगे?

2. उन्होंने किस प्रकार सुसमाचार सुनाया?

3. उसके बाद क्या हुआ?

4. तब उसके बाद फिर क्या हुआ?

5. और तब फिर उसके बाद क्या हुआ?

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):
पूछें: "टी4टी सत्र के बाद कितनों को यह अवसर मिला कि वे प्रवेश नीति का उपयोग करके अपनी गवाही बताएं? क्या आपमें से कोई सुसमाचार प्रस्तुतिकरण, जो आपने सीखा है इस्तेमाल किया? आपने किस प्रकार के प्रत्युत्तर को देखा?"

कहें: "स्मरण रखें कि सी पी एम के 5 भाग के प्रत्येक भाग पुनरूत्पादन करने वाली कलीसियाओं की स्थापना के लिए है। अब हम प्रेरितों के काम पुस्तक की ओर देखेगें और कलीसिया स्थापना के कुछ तरीकों को पहचानेगें या 5 भाग के योजना और उसके परिणाम को।"

मुख्य सत्र (20 मिनट) :

प्रतिभागियों को पॉच समूह में बॉट दें। प्रत्येक समूह को एक पोस्टर दें और उन्हें 15 मिनट का समय दें ताकि वे परिच्छेद को पढ़कर उसके पॉच प्रश्नों का उत्तर दें।

सभी समूहों को रिर्पोट देने को कहें:

1.प्रेरितों के काम 3:1–4:31	पतरस एक भिखमंगे को चंगा करता है– उसके बाद स्तुति / गीत गाना वह स्थान हिल गया साहस के साथ बोलना
2.प्रेरितों के काम 5:12–42	बहुतों को चंगा करता है, गिरफ्तार, और स्वर्गदूतों ने आजाद कराया पद 41 उसके नाम के लिए अपमानित होने के योग्य ठहरने के लिए आनन्दित
3.प्रेरितों के काम 6:8–8:4	स्तिफनुस का पत्थवाह। कलीसिया का बिखरना 8:4 वे जहां गए उन्होंने वचन का प्रचार किया (घर खोने के बावजूद उनका गवाही रूकी नहीं)
4.प्रेरितों के काम 13:13–52	बरनबास और पौलुस को बाहर निकाल दिया गया आनन्द और पवित्र आत्मा से भर गए
5.प्रेरितों के काम 14:1–7	पौलुस और बरनबास ने साहस के साथ प्रभु के बारे में बताया। यहूदी उन्हें मारना चाहते थे परन्तु वे बच निकले। प्रचार करते रहे

पूछें: "क्या आप इन परिच्छेदों में एक प्रक्रिया देख सकते हैं?"

- शिष्यों ने बताया और सुसमाचार बताने के अवसर को पकड़ा
- उन्होंने सामान्यतः संसार में परमेश्वर के कार्य को कहानी के द्वारा सुसमाचार सुनाना शुरू किया और मसीह के पुनरूत्थान पर समाप्त किया और अभी मसीह का प्रचार किया (सी बी एस)
- वहां कुछ या बहुत विश्वासी पाए जाते थे
- कुछ सताव या विरोध हुआ

• जब भी सताव हुआ तो और अधिक नए विश्वासी आए और उनका आनन्द और साहस अधिक हुआ या उन्होंने मसीह के लिए सताए जाने को अपने लिए सैभाग्य माना।

सारांश (5 मिनट):

किसी को 1 पतरस 4:19 वहां पाए जाने वाली सभी भाषाओं में पढ़ने को कहें।

कहें: "तो, जो परमेश्वर की इच्छा अनुसार दुःख उठाते हैं उन्हें अपने आपको अपने विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता के हाथ में सौंप देना चाहिए और भला करते रहना चाहिए।" यह संदेश 1 पतरस में तीन बार दिया गया है।

कहें: "जब हम अपने 5 भाग वाली **सी पी एम** योजना को लागू करना चाहते हैं तो हमें अपनी सेवा में उन प्रक्रियाओं की अपेक्षा रखनी होगी जो हम प्रेरितों के काम में देखते हैं, तभी उस प्रकार का परिणाम भी हम देख पाएगें– ऐसा परिणाम जो यीशु के लिए संसार उलट पुलट कर देगा।"

किसी को 1 पतरस 4:16 वहां पाए जाने वाली सभी भाषाओं में पढ़ने को कहें।

कहें: "बहरहाल, यदि आप एक मसीही के रूप में दुःख उठाते हैं, तो लज्जित न हों, परन्तु परमेश्वर की स्तुति करें कि आप उसके नाम से दुःख उठा रहें हैं।"

5 भाग– लधु अवधि शिष्यता
बी पी आई 5–2

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी अल्प अवधि के शिष्यता को देखेगें। शिष्यता में इस्तेमाल करने के लिए कई टन संसाधन पाए जाते हैं। पवित्र शास्त्र ही हमारा अधिकार है। यदि एक नए विश्वासी के पाए एक बाईबल है और वह उसे पढ़ सकता है, तो उनकी स्थिति अच्छी है। प्रतिभागी इन संसाधनों में से कुछ संसाधनों का मूल्यांकन करेगें और चुनाव करेगें कि वे अपनी 5 भाग वाली सी पी एम योजना में क्या इस्तेमाल करेगें।

आवश्यक वस्तुएंः
- श्वेत पट
- आधे पन्ने वाले पोस्टर पेपर और मार्कर्स

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
अपनी अल्प अवधि शिष्यता योजना को बताने के लिए तैयार रहेंः इसमें कितने पाठ पाए जाते हैं, इसकी विषय वस्तु क्या है और यह कैसे कार्य करता है। पुनरूत्पादन करना कितना आसान है? क्या इसके साथ कोई समस्या है? क्या यहां कोई बदलाव की आवश्यक्ता है?

प्रत्येक 5 भाग वाली सी पी एम के लिए *"पुनरूत्पादन"* शब्द पर जोर देना न भूलें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):
पूछेंः "क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ कि आप अपने मसीही जीवन में घटित कोई अच्छी बात को बॉटना चाहते थे परन्तु नए विश्वासी उसे बस समझ ही नहीं पाएं?"

कहेंः "जब बच्चे का जन्म होता है, हम उन्हें क्या खिलाते हैं? हम उन्हें दूध पिलाते हैं क्यों? क्योंकि दूध ही में बच्चे के लिए महत्वपूर्ण गुण पाए जाते हैं। नए विश्वासियों के साथ भी ऐसा ही होता है; उन्हें कुछ महत्वपूर्ण बातों को सीखना आवश्यक है ताकि वे विश्वास में बढ़ें।"

इब्रानियो 5:11–14

कहेंः "हम 'दूध' को अल्प अवधि शिष्यता कहते हैं। हम 'भोजन' को लम्बी अवधि शिष्यता कहते हैं। नए जन्मे बच्चों को दूध देना अनिवार्य है, परन्तु यदि एक बड़ा व्यक्ति सिर्फ दूध ही पाए तो यह पर्याप्त नहीं। जो अब बच्चे नहीं रह गए उन्हें भोजन देना भी आवश्यक है।

"हम चाहते हैं कि आप जानबुझकर अपने लोगों को 'भोजन' देने की प्रक्रिया आरम्भ करें। इससे पहले कि हम 'भोजन' की ओर बढ़ें, हमें 'दूध' शिष्यता से आरम्भ करना है और कैसे स्वयं से भोजन लेना है यह भी सीखना है। बाईबल में ये प्रत्येक बातें पाई जाती हैं– और हम बाईबल को हमारे अधिकार के रूप में इस्तेमाल करना चाहते हैं।"

मुख्य सत्र (45 मिनट) :

कहें: "हम आपसे पूछना चाहते हैं, 'आप नए विश्वासियों को कौन सा दूध देगें? और तब अधिक परिपक्व विश्वासियों को भोजन देने की क्या योजना आपके पास है?"

कहें: "अभी हम *पुनरूत्पादन* करने वाली लघु अवधि शिष्यता के बारे में बात करेगें।

प्रतिभागियों को गृह कलीसिया समूह में विभाजित कर दें (पोस्टर पेपर और मार्कर दे दें)। उन्हें यह सूची बनाने के लिए 10 मिनट का समय दें कि एक नया विश्वासी जब यीशु को ग्रहण करता है तो उसे क्या जानना आवश्यक है (15–20 बातें) – साधारण 'दूध' शिष्यता। जिन विषयों को उन्होंने लिखा है उन प्रत्येक के लिए बाईबल पदों को लिखें।

जब समूह मिल कर कार्य कर रहें हों, श्वेत पट पर मौलिक शिष्यता लिखें। यदि सम्भव हो तो वहां मौजूद सभी भाषाओं में लिखें। (दो खण्ड)

एक लिखने वाले (हरेक भाषा के एक) को सामने बुलाएं ताकि वह समूह के द्वारा सूची प्रस्तुत करते समय लिखें। यदि किसी बात को एक से अधिक बार बताया गया तो उसके बगल में एक निशान बना दें।

उन्हें गिनें। तब पूछें, "हमने लघु अवधि शिष्यता के लिए पाठों की किस संभव संख्या के बारे में विचार किए हैं?" (6–18 पाठ)

समूह में सूची को देखें, और उन बातों पर निशान लगाएं जो आप नए विश्वासी को नहीं सिखाना चाहेगें।

लघु अवधि शिष्यता संसाधन के कुछ उदाहरण बताएं, जैसे "मसीह के सात आदेश" या **टी4टी** के छह पाठ।

बताएं कि आपने क्या इस्तेमाल किया और यह कैसे कार्य किया।

कहें: "पॉच मिनट का समय लेकर जो हमने बोर्ड पर लिखा और विचार विमर्श किया उसके आधार पर लिखें कि आप एक नए विश्वासी को क्या सिखाना चाहेगें।"

सारांश (5 मिनट):

कहें: "पहले पहल आपको नए विश्वासियों को सबकुछ नहीं सिखाना चाहिए। आपका लघु अवधि शिष्यता आसान होना चाहिए ताकि लोग और कलीसियाएं इसे पीढ़ी दर पीढ़ी इस्तेमाल कर सकें। यदि सूची बहुत लम्बी या कठिन हो तो इसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाना कठिन होगा। इसे **फिर से उत्पन्न किया जा सके।"**

स्थानीय लोगों के लिए बताने का सत्र
बी पी आई 5–3

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी उन विषयों के बारे बात करेगें जो वे सीख रहें हैं और जिन्हें समझने में कठिनाई आ रही है।

आवश्यक संसाधनः
- समय सारिणी
- बने हुए पोस्टर्स और मार्कर्स
- नोट कॉपी / कागज और कलम

प्रशिक्षक की तैयारी :
निम्नलिखित को अलग अलग पोस्टर पेपर पर लिखेंः

सहायक बातें
स्पष्टता आवश्यक
चुनौतीपूर्ण बातें / कुछ तनाव पैदा करना

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):
प्रत्येक प्रतिभागी को अपना नोट कॉपी या कागज का टुकड़ा निकालने को कहें और उन्हें दिन 5 तक की समय सारिणी को देखने को कहें। उन्हें निम्नलिखित बातों की सूची बनाने को कहेंः

1. उन तीन बातों को लिखें जो आपके लिए लाभदायक हैं।
2. उन तीन बातों को लिखें जो आपको स्पष्ट समझ में नहीं आयी।
3. उन तीन बातों को लिखें जो आपने सुनी और इससे आप कुछ परेशान हैं।

पॉच मिनट के बाद, प्रतिभागियों को तीन के समूह में बॉट दें और उन्हें अपना उत्तर एक दूसरे से बताने को कहें। प्रत्येक समूह को पोस्टर पेपर का आधा टुकड़ा दें और उन्हें उन बातों को लिखने को कहें जो उनके समूह में समान हैं।

मुख्य सत्र (45 मिनट) :
प्रत्येक प्रश्न (एक बार में एक प्रश्न) को पूछें और प्रतिभागियों को इसके उत्तर बताने को कहे (किसी से भी पूछें)। किसी से सामने आकर संबंधित पोस्टर पर उन्हें लिखने को कहें।

बाकि बचा समय प्रश्न दो और तीन के लिए उपयोग करें।

1. जो बातें स्पष्ट होनी चाहिए: प्रत्येक विषय लें और समूह से पूछें कि वे क्या समझे और क्या अस्पष्ट है। जहां तक संभव हो समूह को अवसर दें कि वे भाषण देने के बजाए संसाधन को फिर से सिखाए। जब वे फंस जाएं तो सहायता करें।

2. वे बातें जो परेशान करती हैं (ऐसे विषय जिनके साथ वे युद्ध करते हैं) : इसे समूह के समक्ष लाएं और देखें कि अन्य लोगों ने इन विषयों में क्या किया है या क्या कोशिश की गई है। समाधान देने से बचें परन्तु बताने को कहें और एक दूसरे को उत्साहित करने को कहें।

सारांश (5 मिनट):

कहें: "जब भी हम सेवकाई के किसी नए तरीके को देखते हैं, तो आप वहां कुछ लाभदायक बातों को पाएगें, बातें जो हम समझ नहीं पाते, ऐसी बातें जो हमें चुनौती देती हैं या परेशान करती हैं। मसीह की देह हाने के नाते यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम इन बातों को बताएं और एक दूसरे के बगल में आकर सहायता करें ताकि हम एक दूसरे को उत्साहित कर सकें और हम एक साथ बढ़ें।"

एक सी पी एम योजना के 5 भाग– दीर्घ अवधि शिष्यत्व
बी पी आई 5–4

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्य:
इस सत्र में प्रतिभागी दीर्घ अवधि शिष्यता की विवेचना और उसक कुछ संसाधनों का मूल्यांकन करेगें जो इसके लिए तैयार की गई है। वे चुनाव करेगें कि वे अपनी 5 भाग वाली सी पी एम योजना में क्या इस्तेमाल करेगें।

आवश्यक संसाधन:
- पोस्टर पेपर एवं मार्कर्स
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- बाईबल अध्ययन पुस्तक परमेश्वर और मनुष्य
- एक्टस 29 विधार्थियों की पुस्तक, उसमें जहां कहानी बताने द्वारा शिष्यत्व का भाग है वहां निशान
- सेवकाई के लिए आदर्श पुस्तक (अंग्रेजी और हिन्दी में उपलब्ध)
- इन तीन प्रश्नों के द्वारा 40 भाग वाले अध्ययन जो मरकुस के स्वाभाविक विराम पर आधारित हैः मैं परमेश्वर के विषय में क्या सीखा हूँ? मैं लोगों के विषय में क्या सीखा हूँ? मुझे किसी दूसरे को सिखाने के लिए क्या करना चाहिए?
- एस पी पी ई सी के ए से ए सी पी एम(प्रेरितों के काम, कुलुस्सियों, फिलिप्पियों, और मत्ती) इस्तेमाल करते हुए बाईबल अध्ययन।

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
तीन से छह दीर्घ अवधि शिष्यत्व संसाधनों को चुन लें (परमेश्वर और मनुष्य अध्ययन, सेवकाई के लिए आदर्श, विधार्थी पुस्तक एक्टस 29 में कहानी बताने द्वारा शिष्यत्व, मरकुस की पुस्तक से 40 भाग ले सकने वाले बाईबल अध्ययनों को लें, भाग लिया जा सकने वाला अध्ययन ए सी पी एम– प्रेरितों के काम, कुलुस्सियों, फिलिप्पियों और मत्ती) ताकि प्रतिभागी इनका मूल्यांकन कर सकें।

यदि आप "मरकुस के 40 भाग ले सकने वाले बाईबल अध्ययन" का इस्तेमाल करते है, तो इन तीन प्रश्नों को पोस्टर पेपर पर लिखें या एक हेन्डआउट बना लें: मैंने परमेश्वर के विषय में क्या सीखा? मैंने मनुष्य के विषय में क्या सीखा? मुझे क्या करना चाहिए या दूसरों को क्या सिखाना चाहिए? यदि आप "एक सी पी एम के माध्यम से एस पी पी पी ई सी के ए" का उपयोग करना चाहते हैं, तो इसे पोस्टर पेपर पर लिख लें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):

प्रतिभागियों से **सी पी एम** के 5 भागों को बताने को कहें। जिन तीन को अब तक देख चुके हैं उन्हें इसे बताने को कहें: प्रवेश नीति, सुसमाचार प्रस्तुतिकरण, और लघु अवधि शिष्यत्व।

पूछें: "लघु और दीर्घ अवधि शिष्यत्व के मध्य क्या भिन्नता पाई जाती हैं?" (उत्तर बोर्ड पर लिखें– कोई इसमें समय, विषय जो पढ़ा जा चुका है, विषय की गहराई को सम्मिलित कर सकता है)

मुख्य सत्र (30 मिनट) :

किसी को मत्ती 28:18–20 को पढ़ने को कहें, सभी भाषओं में। इस परिच्छेद के द्वारा उनसे बात करें (यदि आप सहायता चाहते हैं तो निम्नलिखित अनुच्छेद को देखें)।

कहें: "इस परिच्छेद में कौन बात कर रहा है?" (यीशु) "वह यहॉ किनसे बात कर रहा है? (शिष्यों) "उसने क्या आज्ञा दी?" (जाओ और सभी जातियों को चेला बनाओ, बपतिस्मा दो) "उसने उन्हें चेले को क्या सिखाने को कहा?" (जो आज्ञा मैंने दी है उन्हें मानना सिखाओ) "अब, यह तो इस परिच्छेद में नहीं है, परन्तु यीशु ने शिष्यों को किस प्रकार सिखाया?" (उनके साथ समय बिताकर, कहानी द्वारा, करते हुए वे सीखे– कक्षा में बैठकर नहीं) "यीशु को उन्हें शिष्यत्व सिखाने में कितना वर्ष लगा?" (तीन वर्ष– यहॉ ध्यान रखें कि आप तीन वर्ष के शिष्यत्व कार्यक्रम को अनिवार्य न बना दें) "क्या आप कोई ऐसा उदाहरण बता सकते हैं जहॉ शिष्यता के लिए कम समय लगा?" (पौलुस प्रेरित)

पूछें: "जो हम देख चुके हैं और जो हमने बात की हैं उसके आधार पर, आपके दीर्घ अवधि शिष्यत्व योजना की औसत लम्बाई क्या होगी?" (एक से तीन वर्ष) श्वेत पट पर उत्तर लिखें।

पूछें: "दीर्घ अवधि शिष्यत्व का लक्ष्य क्या है?" श्वेत पट पर उत्तर लिखें। कहें: "लक्ष्य है कि उन्हें उन सारी आज्ञाओं को मानना सिखाएं जो मसीह ने सिखाई और **आज्ञाकारी** होने के द्वारा परमेश्वर के वचन में मजबूत बनाना।"

यह अच्छा समय होगा जब आप श्वेत पट पर आज्ञाकारिता आधारित बनाम ज्ञान आधारित ग्राफ बनाएं। समझाएं कि अधिकतर विश्वासियों के पास बहुत ज्ञान है (इसके लिए एक रेखा बनाएं) परन्तु केवल कुछ ही आज्ञाकारी हैं (पहली रेखा एक छोटी रेखा बनाएं)। परन्तु हमारा लक्ष्य है कि थोड़ा ज्ञान सिखाएं ताकि वे आज्ञा मानना सीखें और ज्ञान के साथ साथ आज्ञाकारिता में भी बढ़ें। इन दोनों रेखाओं को बराबर बना दें। तब यह दिखाएं कि जैसे जैसे आप ज्ञान में बढ़ें वैसे वैसे आप आज्ञाकारिता में भी बढ़ें।

चार से छह छोटे समूहों में विभाजित कर दें। प्रत्येक समूह को दीर्घ अवधि शिष्यत्व का एक उदाहरण, पोस्टर पेपर, और एक मार्कर दें। तब उन्हें अपने उदाहरण का मूल्यांकन करने के लिए 10 मिनट का समय दें।

- शिष्यता कैसे की जाती है?
- कैसे शिष्यता आज्ञाकारिता को बढ़ावा देती है?
- शिष्यता को समाप्त होने में कितना समय लगेगा?
- शक्ति एवं कमजोरी क्या हैं?

सभी समूह को वापस आकर रिर्पोट देने को कहें (एक या दो मिनट)।

पुनः समूह में चले जाएं। अब उन बदलावों पर चर्चा करें जिनके करने से यह आपके कार्य के अधिक उपयोगी होगा। बड़े समूह को सम्बोधित करने के लिए एक मिनट का समय लें।

सारांश (5 मिनट):

किसी को सभी भाषाओं में याकूब 4:17 पढ़ने को कहें।

पूछें: "यह हमें ज्ञान और पाप के विषय में क्या बताता है?" (यदि हमारा लक्ष्य है बिना आज्ञाकारिता के हम केवल ज्ञान बढ़ाएं तो हम केवल पाप को ही बढ़ावा दे रहें हैं।)

कहें: "दीर्घ अवधि शिष्यत्व का यह लक्ष्य नहीं कि केवल बाईबल ज्ञान को बढ़ाना। हमें विश्वासियों को उन बातों को मानना सिखाना होगा जो उन्होंने सीखीं ताकि वे परिपक्व हों ऐसा तभी होगा हम उन बातों को अपने जीवन में दिखाएगें और उनके साथ समय बिताएगें।"

प्रभावी कलीसिया संरचना का प्रकरण अध्ययन
बी पी आई 5–5

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र मे प्रतिभागी दक्षिण एशिया के कुछ प्रकरण अध्ययनों को पढ़ेगें और विचार विमर्श करेगें। वे **सी पी एम** के विषय में उसी प्रकार सीखेगें जैसे हमने जो सी पी एम सीखें थे– **सी पी एम** के अध्ययन द्वारा। वे इन प्रकरण अध्ययनों से सीखेगें ताकि वे इन्हीं कार्यों को कर पाएं।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- चारों सी पी एम प्रकरण अध्ययनों (1,2,3,4) की दो दो प्रतिलिपियॉ
- प्रत्येक प्रतिभागी के लिए "मध्य भारत में जनजातीय कलीसिया स्थापना आन्दोलन" की प्रतिलिपी

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
सी पी एम प्रकरण अध्ययन (1,2,3,4) की दो दो प्रतिलिपी बना लें। प्रत्येक प्रकरण अध्ययन को पढ़ें ताकि आप उन प्रमुख बिन्दुओ को जान लें जो कलीसिया संरचना से सम्बंधित है।

श्वेत पट पर निम्नलिखित प्रश्नों को लिखें:

1. क्या ये कलीसिया स्थापना आन्दोलन हैं? क्या हमारी "हैन्डी गाईड" के अनुसार कलीसियाएं स्वस्थ हैं? क्यों या क्यों नहीं?
2. इस उन्नति की कुंजी क्या है?
3. उनकी प्रमुख बाधाएं क्या थीं?

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):
पूछें: "**सी पी एम** क्या है?" ("कलीसिया द्वारा कलीसिया स्थापना " के लिए हाथ के इशारे का उपयोग करें।) एक अंगुली ऊपर उठाएं। पूछें: "हम क्यों सी पी एम देखना चाहते हैं? हमारा उददेश्य क्या है? (परमेश्वर की महिमा)

कहें: "मान लें आप एक डाक्टर हैं। आपका मरीज आपका प्रकरण अध्ययन है। आपको अपने मरीज को जॉचना होगा ताकि आप उसे दवा बता पाएं जिससे वह स्वस्थ हो सकता है। यही कार्य हम अभी प्रकरण अध्ययन के साथ करने वाले हैं।" (आप यू पी जी को एक "मरीज" के रूप में देख सकते हैं और एक "इलाज" बता सकते हैं जो आवश्यक है)।

मुख्य सत्र (35 मिनट) :

चार या पॉच लोगों का पॉच या छह छोटे समूह बना लें। उन्हें प्रकरण अध्ययन दें ताकि वे अगले 15 मिनट तक इस पर विचार कर सकें। प्रत्येक समूह का एक व्यक्ति इसे पढ़े और समझाए (जो संक्षेपण हैं उन्हें समझाया जाए)। तब समूह मिलकर श्वेत पट पर लिखे तीनों प्रश्नों पर विचार करेगा (जल्दी से प्रश्नों पर जाएं)।
इस सत्र का प्रथम भाग प्रकरण अध्ययन के विषय में विचार विमर्श में व्यतीत किया जाएगा। और दूसरे भाग का उपयोग वापस आकर रिर्पोट देने के लिए किया जाएगा।

समूह यदि चाहें तो दूर फैल जाएं क्योंकि यहॉ काफी विचार विमर्श होगा। जब पॉच मिनट बच जाएं तो समूह से समाप्त करने की प्रक्रिया आरम्भ करने को कहें और उन्हें बता दें कि कितना समय बचा है।

इससे पहले कि समूह रिर्पोट प्रस्तुत करें, पूछें: "क्या यह लाभदायक था? जो आप पढ़ रहे थे, क्या आप उसे समझ पाएं ?"

कहें: "आईए अब हम एक दूसरे से सीखें।"
प्रत्येक समूह से रिर्पोट देने वाले को एक एक कर के आने को कहें। जिस जन समूह के विषय में वह प्रकरण अध्ययन था उसे बताएं, प्रकरण अध्ययन का एक मिनट में सारांश दें, और तब बोर्ड पर लिखे प्रश्नों का दो मिनट में उत्तर दें।

जब सभी समूह रिर्पोट दे दें तो पूछें: "आपका मरीज कैसा है? आपने क्या पाया? आपने मरीज को क्या दवा खाने को दी? तब उस प्रकरण अध्ययन से उन प्रमुख बिन्दुओं को बताएं जो समूह नहीं बता पाया। तब प्रतिभागियों के लिए उनके सेवकाई में इसके लागूकरण को दिखाएं। प्रतिभागियों को अवसर दें कि वे इस प्रकरण अध्ययन के विषय में या जो इलाज बताया गया उसके विषय में प्रश्न पूछें।

सारांश (5 मिनट):

कहें: "जब कभी आपको प्रकरण अध्ययन या इन दिखाई देने वाले **सी पी एम** से सीखने का अवसर मिले तो जरूर सीखें।"

सी पी एम विचार *"मध्य भारत में जनजातीय कलीसिया स्थापना आन्दोलन"* की प्रतिलिपी को बॉट दें।

पूछें: "कौन सी प्रक्रिया उन्नति की ओर ले जाते हैं?" (प्रशिक्षण, जवाबदेही, अन्त दर्शन, दूसरों को उत्साहित करना, पूराने तरीको को पीछे छोड़ना)

कहें: "हम सभी बढ़ने वाली कलीसिया देखना चाहते हैं, हम में से किसी के पास सारे उत्तर नहीं पाए जाते। यदि हमारे पाए ए से जेड तक अक्षर पाए जाते हैं, और हम ए में हैं परन्तु हम जेड तक देखते हैं जो **सी पी एम** है, हम वहां तक कैसे पहुॅचेगें? बी, सी , डी ..... क्या है?"

कहें: "समय के साथ साथ हम वहॉ पहुॅचने के कदम को सीख रहें हैं– ये सर्वोत्तम अभ्यास हैं। परन्तु हम सभी कदम नहीं जानते। (इन्हें प्रकरण अध्ययनों से सीखे कदम से जोड़ दें– विश्वासियों को प्रशिक्षण देना एक कदम है, अन्त दर्शन एक कदम है)। इसलिए हमें जीवन पर्यन्त विधार्थी बनना अवश्यक है। यह दर्शन हमारा नहीं परन्तु मसीह का है।"

एम ए डब्ल्यु एल
बी पी आई 5–6

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्य:
इस सत्र में प्रतिभागी देखेगें कि कैसे शुरू में **मॉल** (आदर्श, सहायता, देखना और छोड़ना) तरीके का उपयोग धीमा प्रतीत हो सकता है परन्तु अन्त में यह शिष्य उत्पन्न करता है जो सही सही उन बातों को सिखा पाएं जो उन्होंनें सीखा है।

आवश्यक संसाधन:
- दो स्वयंसेवक जो सत्र से पहले आपके साथ इशारे को सीखें और "प्रशिक्षक" की भूमिका निभाएं।
- श्वेत पट एवं मार्कर्स

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
सी पी एम के दस वैश्विक चरित्रों के लिए हाथ के इशारे का पुर्न अवलोकन करें:

1. परमेश्वर के वचन पर आधारित– हाथों को खुली पुस्तक के समान मिलाएं
2. अत्यधिक प्रार्थना– प्रार्थना की दशा में दोनों हाथ (जन समूह के आधार पर)
3. बहुतायत से सुसमाचार के बीज बोना– हाथ द्वारा बीज छींटने का इशारा
4. साभिप्राय कलीसियाओं की स्थापना– दिशा दिखाने वाली अंगुली को दूसरे हाथ की खुले हथेली में धकेलना मानो बीज को भूमि पर चिपकाया जा रहा हो
5. घरों में मिलने वाली कलीसिया– दोनों हाथों से एक त्रिकोण बनाएं मानो वह छत हो
6. कलीसिया द्वारा कलीसिया स्थापन– एक खुला और बन्द त्रिकोण बनाएं
7. स्थानीय अगुवा (कलीसिया में से अगुवा)– खुली हथेली में दिशा सूचक अंगुली द्वारा एक गोलाकार यह दर्शाने के लिए बनाएं कि अगुवा समूह के भीतर से ही आ रहा है
8. जन साधारण अगुवाई– कल्पना के समान अपने आस्तीन को ऊपर खीचें मानो आप कार्य कर रहें हैं
9. तीव्र गति से कलीसिया का जन्म– मुटठी बंधे दोनों हाथ एक दुसरे के ऊपर अपने सामने घुमाएं जाएं
10. स्वस्थ कलीसियाएं (पॉच उददेश्यों का अभ्यास करें– अपनी मॉसपेशी को दिखाने के लिए अपने हाथ ऊपर करें

इस चार्ट को श्वेत पट पर बनाएं:

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):

पूछें: "आप में से कितने लोग **एम ए डब्ल्यू एल** आदिवर्णिक शब्द से परिचित हैं? यह क्या दर्शाता है?" यदि वे नहीं जानते हैं तो बताएं।

पूछें: "'आदर्श' का अर्थ क्या होता है? 'सहायता देना' का अर्थ क्या होता है? 'छोड़ने' का अर्थ क्या होता है? प्रत्येक को संक्षिप्त तौर पर समझाएं।

मुख्य सत्र (10 मिनट) :

समूह को आधे में बॉट दें। इस कार्य के लिए अपने दो 'प्रशिक्षकों' का परिचय कराएं।

पहला प्रशिक्षक अपने समूह के प्रत्येक जन को **सी पी एम** के 10 वैश्विक तत्वों के हाथ के इशारे को सिखाए। एक जन को सिखाने के बाद वह दूसरे को सिखाए। प्रशिक्षक एक बार सिर्फ एक ही व्यक्ति को सिखाए। एक बार जब कोई सीख गया तो उसे जाकर अपने स्थान पर बैठ जाना चाहिए। जब सभी जन सीख जाएं तो समूह जोर से "पूरा हो गया" पुकारेगा।

दूसरे प्रशिक्षक को चाहिए को वह अपने समूह को **सी पी एम** के 10 वैश्विक तत्वों के हाथ के इशारे को सिखाए। वह और वे सभी जिसे उसने सिखाया, जरूर **एम ए डब्ल्यू एल** प्रक्रिया का प्रयोग करें। जब सभी लोग हाथ के इशारे को सीख जाए तो सभी जोर से चिल्लाएं "पूरा हो गया"।

जब दोनो समूह सीख जाएं, उनके मेहनत के फल को जांचें। दोनों समूह में सीखने वाले अन्तिम व्यक्ति से हाथ के इशारे को बताने को कहें। देखें कि क्या दोनों सटीक हैं। तब दोनों समूह के आरम्भ और मध्य में सीखने वाले को बताने को कहें।

पूछें: "इस अभ्यास को करते समय आपने किन बातों को देखा?"

पूछें: "अन्त में, कौन सा तरीका ऐसे शिष्य उत्पन्न करने का सर्वोत्तम तरीका प्रतीत हुआ जो संसाधनों को सही जाननेवाले हों? आरम्भ में अतिरिक्त समय लेना अन्त परिणाम के हिसाब से क्या सही था?"

सारांश (5 मिनट):

कहें: "एक गलत धारणा जो लोगों के अन्दर पाई जाती है वह है कि अत्यधिक तेजी से बढ़ती कलीसिया में गलत सिद्धान्त फैलने का डर।

"प्रशिक्षण एवं शिष्यत्व के लिए **मॉल** तरीके का इस्तेमाल, **एस सी** और **सी पी** दो से तीन पीढ़ी के पुनरूत्पादन करने वाली कलीसिया में सम्मिलित होता है ताकि नए विश्वासी नए लोगों के लिए आदर्श बनें।

"सी पी एम में जैसे जैसे नई कलीसिया तेजी से नई कलीसियाएं स्थापित करती है तो मॉल ही सर्वोत्तम अभ्यास है उस सच्चाई का बदलने से बचाने का जो पीढ़ी से पीढ़ी को हस्तांतरित किया जा रहा है। यह ऐसे शिष्यों के विकास के लिए भी सर्वोत्तम अभ्यास है जो वचन के केवल सुनने वाले नहीं परन्तु करने वाले भी हैं।"

सी पी एम योजना कार्यशाला 2
बी पी आई 5–7

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी अपने 5 भाग वाले **सी पी एम** के शिष्यत्व (लघु एवं दीर्घ अवधि) और कलीसिया संरचना भागों पर कार्य करेगें।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट, पोस्टर पेपर एवं मार्कर्स

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
निम्नलिखित को पोस्टर पेपर या श्वेत पट पर लिखें (रेखा युक्त शब्द शीर्षक है जो वे इस्तेमाल करेगें और काले अक्षर आपके लिए उदाहरण है):

अन्त दर्शन

शिष्यत्व	*लघु एवं दीर्घ*	*कलीसिया संरचना*
छह टी4टी पाठ	मरकुस की पुस्तक	POUCH एवं बी पी आई पाठों की मार्गदर्शिका
तीन महीनों का लक्ष्यः सभी स्थानीय सहयोगियों को टी4टी पाठों में प्रशिक्षण देना		मौजूद समूह के साथ इसे पूरा करना
6 महीनों का लक्ष्यः मरकुस की पुस्तक शुरूआत करना		ध्यान दें कि नए समूह इस तरीके का अनुसरण कर रहें हों

प्रार्थनाः

अन्दर–

बाहर–

संसाधन / सहयोगीः

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):
सी पी एम के 5 भागों को पुर्न अवलोकन। प्रत्येक भाग के लिए "जन्माने वाली" पर जोर देना न भूलें।

मुख्य सत्र (50 मिनट) :

"शिष्यत्व" और "कलीसिया संरचना" पर संक्षिप्त तौर पर प्रकाश डालें। हो सकता है पहले दिन कलीसिया संरचना के विषय पर सीखे गए बातों का पुर्न अवलोकन करना होगा और उन्हें लघु एवं दीर्घ अवधि शिष्यत्व की संभावनाओं को बता दें।

शिष्यत्व और कलीसिया संरचना के लिए उन्हें 5 भागों पर कार्य करने के लिए समय दें। सलाह देने के लिए कमरे में चक्कर लगाएं।

सारांश (5 मिनट):

अन्तिम पॉच मिनट में उन्हें दो दो में बॉट दें और उन्हें यह बात करने को कहें कि कैसे पिता उन्हें शिष्यत्व और कलीसिया संरचना के विषय में अगुवाई कर रहा है।

समूह के लिए प्रार्थना के साथ समाप्त करें।

पॉचवे दिन की सूचना प्राप्त करना

(15 मिनट)

प्रतिभागियों को चार के समूह में बॉट दें और उन्हें उन बातों पर विचार विमर्श करने को कहें जो उन्होंने सीखी या जिससे उन्हें चुनौती मिली। वापस बड़े समूह में बुला लें और पूछें कि जो बातें उन्होंने सीखी या जिन बातों से उन्हें चुनौती मिली, क्या कोई उन बातों को बताना चाहते हैं।

एस सी भूमिका, केमल तरीका और टी4टी सिद्धान्त का पुर्न अवलोकन करें।

चुटकी बजाना शुरू करें और पूछें इसका अर्थ क्या है।

गृहकार्य:

सोमवार से पहले अपनी कहानी को किसी के साथ जरूर बॉटें। कल गृह कलीसिया के लिए मिलें। एक कलीसिया के रूप में प्रार्थना करना शुरू करें कि जो दान आपने जमा किया उसे किस प्रकार इस्तेमाल करें। कलीसिया के पॉच उददेश्यों का अभ्यास करते रहें।

दिन 6 और 7 के लिए एच सी बाईबल परिच्छेदः

रविवारः यूहन्ना 12:25
सोमवारः मरकुस 4:26–29

दिन 7 का अवलोकन (शुरूआत)

(10 मिनट)

पूछें: "आप सभों का सप्ताहांत कैसा बीता?
"क्या कोई अपने सप्ताहांत में घटी किसी घटना को समूह के सामने बताना चाहता है?

"क्या कोई प्रार्थना का निवेदन है?

प्रार्थना करें।

चुटकी बजाना आरम्भ करें, और पूछें: "इसका अर्थ क्या होता है?

"इस सप्ताहांत आपमें से कितने लोगों ने अपनी कहानी बताई?"

सी पी एम योजना के 5 भागों का पुर्न अवलोकन।

दिन के लिए धोषणा करने के बाद शुरूआत करें।

सी पी एम के लिए 10 वैश्विक प्रकरण अध्ययन
बी पी आई 7–1

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी प्रकरण अध्ययनों का मूल्यांकन करने के लिए उन्हें पढ़ेगें ताकि यह देख पाएं कि सी पी एम के दस वैश्विक तत्वों में से क्या उनमें पाए जाते हैं।

आवश्यक संसाधनः
- छोटे समूह के संचालक के लिए प्रश्न युक्त नोट कार्ड और चार्ट (नीचे दिया)
- प्रत्येक समूह के लिए प्रकरण अध्ययन (कम से कम चार)। आप अपने प्रशिक्षण पूर्व गाईड से कोई प्रकरण अध्ययन चुन लें।

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
नीचे लिखे प्रश्न युक्त नोट कार्ड तैयार करें, छोटे समूह के प्रत्येक संचालक के लिएः

छोटा समूह विचार विमर्श

1. क्या इस प्रकरण अध्ययन में प्रार्थना संघटन का कोई साक्ष्य है?
2. सुसमाचार किस प्रकार सुनाया गया?
3. क्या साभिप्राय कलीसिया स्थापना का कोई साक्ष्य मौजूद है?
4. अगुवे कहॉ से आए?
5. कलीसिया सदस्यों के लिए अपेक्षाएं क्या थीं?
6. क्या चर्च भवन नीति का प्रमुख भाग था?
7. जब नई कलीसिया स्थापित हुई तो उसके लिए जिम्मेवार कौन था?
8. पवित्र शास्त्र की भूमिका क्या थी?
9. पुनरूत्पादन कब हुआ?
10. क्या वहॉ इ वरीय चिन्ह एवं चमत्कार के प्रमाण थे?
11. आराधना के लिए कौन सी भाषा का प्रयोग हुआ?
12. क्या वहॉ सताव पाया गया? यदि हॉ, तो सताव क्या था?
13. कलीसिया के कितने अगुवों को प्रशिक्षण दिया गया?
14. पास्टरों की सहायता कैसे हुई?

सी पी एम के 10 वैश्विक तत्व	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
अदभुत प्रार्थना										
अत्यधिक सुसमाचार प्रचार										
साभिप्राय कलीसिया स्थापना										
परमेश्वर के वचन का अधिकार										
स्थानीय अगुवे										
सदस्य अगुवे										
गृह कलीसिया										
कलीसिया द्वारा कलीसिया स्थापना										
अत्यधिक बढ़ोत्तरी										
स्वस्थ कलीसियाएं										

मॉल सत्र मे सिखाए गए सी पी एम के 10 वैश्विक चरित्रों के हाथ के इशारे से संचालक अवश्य अभ्यस्त हों:

1. परमेश्वर के वचन पर आधारित– हाथों को खुले पुस्तक के समान मिलाएं
2. अत्यधिक प्रार्थना– प्रार्थना की दशा में दोनों हाथ (जन समूह के आधार पर)
3. बहुतायत से सुसमाचार के बीज बोना– हाथ द्वारा बीज छींटने का इशारा
4. साभिप्राय कलीसियाओं की स्थापना– दिशा दिखाने वाली अंगुली को दूसरे हाथ के खुले हथेली में धकेलना मानो बीज को भूमि पर चिपकाया जा रहा हो
5. घरों में मिलने वाली कलीसिया– दोनों हाथों से एक त्रिकोण बनाएं मानो वह छत हो

6. कलीसिया द्वारा कलीसिया स्थापन– एक खुला और बन्द त्रिकोण बनाएं
7. स्थानीय अगुवा (कलीसिया में से अगुवा)– खुले हथेली में दिशा सूचक अंगुली द्वारा एक गोलाकार यह दर्शाने के लिए बनाएं कि अगुवा समूह के भीतर से ही आ रहा है
8. जन साधारण अगुवाई– कल्पना के समान अपने आस्तीन को ऊपर खीचें मानो आप कार्य कर रहें हैं
9. तीव्र गति से कलीसिया का जन्म– मुटठी बंधे दोनों हाथ एक दूसरे के ऊपर अपने सामने घुमाएं जाएं
10. स्वस्थ कलीसियाएं (पॉच उददेश्यों का अभ्यास करें– अपने मॉसपेशी को दिखाने के लिए अपने हाथ ऊपर करें

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):

पूछें: "क्या आपको सीखाई गई **सी पी एम** के 10 वैश्विक तत्व और उनके हाथ के इशारे याद हैं?"

यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिभागियों को सी पी एम के 10 वैश्विक तत्व याद हैं या नहीं, इनका पुर्न अवलोकन करें।

मुख्य सत्र (350 मिनट) :

बड़े समूह को चार या छह छोटे समूहों में विभाजित कर दें। यह अच्छा होगा कि अंग्रेजी नहीं बोलने वालों को एक या दो समूह में कर दें जिसमें अनुवादक पाया जाता है। छोटे समूह को उत्तर देने और प्रकरण अध्ययन में **सी पी एम** के 10 तत्वों के मूल्यांकन करने के लिए 15 मिनट का समय दें।

प्रत्येक छोटे समूह से एक व्यक्ति को चुनें जो प्रकरण अध्ययन का एक या दो मिनट का सारांश तैयार करे ताकि छोटे समूह को इसे कहानी के रूप में बता सके और उसका संचालन भी करे (अब तक सभी जन प्रकरण अध्ययन जान चुके होगे)। अंग्रेजी नहीं बोलने वालों के लिए प्रत्येक सारांश अनुवाद किए जाएं। प्रस्तुत करने वाले को उन सूचनाओं का सारांश बना लेना चाहिए जो उन प्रश्नों से सम्बद्ध है जिस पर छोटे समूह में विचार विमर्श किया जाएगा। ध्यान दें कि यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक प्रकरण अध्ययन में सभी प्रश्नों का उत्तर हो।

बड़े समूह में रिर्पोट प्रस्तुत करने के लिए 20 मिनट का समय दें।

प्रत्येक समूह से पूछें: "प्रकरण अध्ययन में जो हुआ उसका सारांश प्रस्तुत करें और प्रश्नों का उत्तर दें।

"मरकुस की पुस्तक से एक प्रमुख बिन्दु बताएं जो प्रकरण अध्ययन को **सी पी एम** के सिद्धान्तों से जोड़ता है।"

सारांश (5 मिनट):

कहें: "सी पी एम के 10 वैश्विक तत्वों के चार्ट को इन प्रकरण अध्ययनों के मूल्यांकन के लिए नहीं बनाया गया था। इसे बनाया गया था ताकि एस सी अपने सेवकाई एवं कार्यकलापों का मूल्यांकन कर सकें।

"कुछ मिनट लेकर अपने कार्य को इस चार्ट के द्वारा मूल्यांकन करें।" (2 से 3 तीन मिनट तक रूकें)

पूछें: "क्या आप अपनी सेवकाई में इन सभी 10 तत्वों को देखना चाहते हैं? आपको किन बदलावों को लाना आवश्यक है?"

छह प्रकार के लोग
बी पी आई 7–2

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः

इस सत्र में प्रतिभागी देखेगें कि एक खोए हुए समुदाय में विभिन्न प्रकार के लोग पाए जाते हैं। वे छह प्रकार के लोगों के विषय में सीखेगें जिन से उनकी मुलाकात तब होगी जब वे यीशु के सन्देश को सुना रहें होंगें या शान्ति के लोग को खोज रहे होंगे। प्रतिभागी इस बात को भी सीखेगें कि यदि वे एक नई कलीसिया और एक **सी पी एम** आरम्भ करने की कोशिश कर रहें हैं तो उन्हें किस तरह के लोगों को ढूंढ़ना है।

आवश्यक संसाधनः

- पोस्टर्स और मार्कर
- स्किट के लिए प्रत्येक भूमिका के लिए टाईप किया आलेख

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):

पोस्टर पेपर के आधे भागों को लेकर प्रत्येक भाग में निम्नलिखित बातों में से एक लिखेंः

सदभावना का पुरूष

यह व्यक्ति मित्रवत् और सहायता करने वाला होगा परन्तु आत्मिक बातों में कोई रूचि नहीं। वह सुशिष्ट होगा और सत्य के लिए कोई व्यक्तिगत जिज्ञासा के कारण नहीं परन्तु आपके आदर करने के कारण वह आपको सुसमाचार बताने या प्रार्थना करने देगा।

प्रभाव का पुरूष

यह व्यक्ति प्रभावी होगा और कोई भी काम करा देगा। उसके अन्दर आपके लिए और आपके कार्य के लिए बड़ा आदर होगा परन्तु परमेश्वर में उसकी कोई रूचि नहीं होगी। वह आपको सुरक्षा देगा और आपको सुसमाचार बताने एवं अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा करने में सहायता करेगा।

ग्रहणशील पुरूष

यह व्यक्ति सुसमाचार को ग्रहण करेगा परन्तु भय के कारण अपने परिवार या अन्यों को नहीं बताएगा। वह स्वयं तो अनुसरण करेगा परन्तु अन्यों को इस डर के कारण अनुसरण करने का मौका नहीं देगा कि यदि अन्य लोग उसके विश्वास के बारे जान गए तो उसे क्या कीमत चुकाना पड़ेगी।

शान्ति का पुरूष

यह व्यक्ति सुसमाचार ग्रहण करता है और तब अपने परिवार एवं मित्रों को इसे सुनने का अवसर देता है। समुदाय में यह पुरूष साधारणतः ख्याति प्राप्त (भला चाहे

बुरा) होता है। यह पुरूष अपने समुदाय में रहकर सुसमाचार फैलाता है। अक्सर शान्ति के पुरूषों के द्वारा ही सी पी एम शुरू होता है।

विरोधी पुरूष

यह व्यक्ति सुसमाचार का और सुसमाचार सुनाने वाले का विरोध करता है। जब उन्हें यह पता चलता है कि आप यीशु के शिष्य हैं तो वे उन सभी कार्यों को करेगें जिससे आप परेशान हों या आप की क्षति हो और इस प्रकार आपको सुसमाचार सुनाने से रोक कर वे सोचेगें कि उन्होंने कोई भला काम किया है।

प्रतिक्रिया नहीं दिखाने वाला पुरूष

यह व्यक्ति आपको सुसमाचार सुनाने तो देगा परन्तु उसके प्रति न तो सकारात्मक और न ही नकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाएगा। यदि आप चाहें तो वह सम्बन्ध बनाएं रखना भी चाहेगा।

इस सत्र में एक स्किट है। इस सत्र से पहले स्किट (पाठ के अन्त में) की प्रतिलिपी बना लें और प्रत्येक भूमिका के अनुसार काट लें। सत्र से पहले सात प्रतिभागियों से कहें कि वे इस स्किट में आपकी सहायता करें। उन्हें उनकी भूमिका वाले टुकड़ों को दे दें और संक्षिप्त तौर पर समझाएं। ध्यान रहे कि एक अनुवादक तैयार रहे और उसे सत्र के पहले स्किट दिखा दें ताकि वह विभिन्न भूमिका और उनके नामों के बारे जानता हो।

प्रवेश स्तरों को जाचें (5–10 मिनट):

प्रतिभागियों को छह समूह में बॉट दें (ध्यान दें कि स्कीट के स्वयंसेवक एक ही समूह से न हों)। प्रत्येक समूह को एक तैयार पोस्टर दे दें जिसमें एक तरह के व्यक्ति के विषय में लिखा है। विधार्थियों को विवरण पढ़कर बाईबल से और जीवन के अनुभवों से इस प्रकार के व्यक्ति का उदाहरण देने को कहें। पॉच मिनट का समय देने के बाद उन्हें वापस बड़े समूह में बुला लें, परन्तु उन्हें रिर्पोट देने को **न** कहें।

मुख्य सत्र (45 मिनट) :

कहें: "हमारे कुछ सहपाठी हमारे लिए एक स्किट दिखाएगें। जब आप इस स्किट को देखें, तो उस व्यक्ति को पहचानने की कोशिश करें जिस के विषय में अपने अपने समूह में अध्ययन किया।"

स्किट करने वालों को इसे शुरू करने को कहें। (इसमें 10 मिनट का समय लगेगा)।

स्किट के बाद, कहें: "क्या आपने प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका को पहचाना?"

एक एक कर के अभिनेताओं को बुलाएं। समूह से पूछें: "यह व्यक्ति कौन है?"

जब व्यक्ति को पहचान लिया जाए, तो उस व्यक्ति का अध्ययन किए समूह को पोस्टर दे देने को कहें। परिभाषा को पढ़ें और समूह के द्वारा बताए उदाहरणों को बताएं। तब वह अभिनेता पोस्टर को टॉग कर बैठ जाए। तब अगले अभिनेता को बुलाएं।

सारांश (5 मिनट):

कहें: "इस स्किट में दो लोगों ने सुसमाचार को स्वीकार किया परन्तु परिणाम अलग था।"

पूछें: "यदि हम **सी पी एम** चलाना चाहते हैं, तो हमें किस प्रकार के लोगों में अपना अधिक समय देना चाहिए?"

कहें: "शान्ति का पुरूष– जो प्रत्युत्तर देते और दूसरों को सुसमाचार सुनने के निकट लाते हैं।"

पी ओ पी (शान्ति का पुरूष) को ढूंढ़ने के लिए 0 से 1 योजना
बी पी आई 7–3

(1घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी उन बातों का पुर्न अवलोकन करेगें जो वे शान्ति के पुरूष के बारे में जान गए हैं, कलीसिया स्थापना के इस प्रारूप के लिए बाईबल से उदाहदण पहचानेगें, और कक्षा में मिशनरी दल "बाहर भेजेगें" जो इन सिद्धान्तों का अभ्यास करे।

आवश्यक संसाधनः
- पी ओ पी छोटे समूह विवेचना के लिए श्वेत पट पर लिखा प्रश्न
- पी ओ पी अभ्यास से पहले जल्दी से पुर्न अवलोकन करने के लिए पोस्टर पेपर पर लिखा विशेषता

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
निम्नलिखित को पोस्टर पेपर या श्वेत पट पर लिखें (इतना बड़ा हो कि सभी इसे देख पाए):
- शान्ति का पुरूष (पी ओ पी) क्या है?
- क्या इस नाम के लिए कोई बाईबल आधार है?
- एक शान्ति के पुरूष का बाईबल में से उदाहरण दें? इस कहानी में, जो सुसमाचार सुनाने वाला था उसने क्या किया? पी ओ पी की कुछ विशेषता क्या हैं?
- हम कैसे पी ओ पी को पहचान सकते हैं?
- यदि हमें एक पी ओ पी मिल जाए तो हमें क्या करना चाहिए?
- यदि हमें एक पी ओ पी न मिले तो हमें क्या करना चाहिए

निम्नलिखित सूची को पोस्टर पेपर के चार टुकड़ों में लिख दें (प्रत्येक टुकड़े पर एक)। आप चाहें तो उन दोनों को मिला सकते हैं जो दोनों सूची में समान हैं और उसके साथ पद संख्या भी दें:

<u>शान्ति के पुरूष की विशेषताएं</u>

<u>लूका 10:</u>
पद.5– वह अपने द्वार को आपके लिए खोलेगा
पद.6– वह आपकी आशीष को ग्रहण करेगा और रूचि दिखाएगा
पद.7– अपने घर को आपके लिए खोलेगा / सत्कारशील
पद.7– वह आपके लिए उपाय करेगा

<u>मत्ती 10:</u>
पद.13– वह योग्य है
पद.13– अपने घर में उसका प्रभाव है

पद.14– आपको ग्रहण करेगा
पद.14– आपकी बातों को सुनेगा

चेले (जिन्हें भेजा गया) ने क्या किया:
लूका 10:
पद.2– मजदूर के लिए प्रार्थना की
पद.3– खतरे के मध्य भी वह गया
पद.4– अपनी झोली छोड़ कर गया
पद.4– समय व्यर्थ नहीं गवांया
पद.5– अभिनन्दन किया
पद.6– यदि प्रतिक्रिया सकारात्मक, तो अशीष दिया
पद.7– उनके साथ संगति किया
पद.9– जहां जरूरत थी चंगाई के लिए प्रार्थना किया
पद.9– उन्हें परमेश्वर का वचन सुनाया
पद.9– परमेश्वर के राज्य के विषय में बताया

मत्ती 10:
पद.5–6– परमेश्वर ने जहॉ भेजा वहॉ गया
पद.11– पता लगाया / खोजा / पहचाना
पद.11– उस व्यक्ति के साथ समय बिताया
पद.12– नमस्कार किया
पद.13– आशीष दिया
पद.14– राज्य के वचन का प्रचार किया
पद.14– साहसी और सत्य बना

प्रवेश स्तरों को जाचें (20 मिनट):
प्रतिभागियों को छोटे समूहों में विभाजित कर दें। श्वेत पट पर लिखे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए समूह को 15 मिनट का समय दें।

समूह को वापस बुला लें और श्वेत पट के प्रश्नों को पूछें। समूह से न पूछें परन्तु प्रतिभागियों को व्यक्तिगत तौर पर जवाब देने को कहें, जो उन्होंने समूह में सीखा।

मुख्य सत्र (35 मिनट) :
श्वेत पट पर "शान्ति का पुरूष" और "शिष्यों का भेजा जाना" व्याख्या करने वाले पोस्टर पेपर को लटका दें। सीच का संक्षिप्त रूप में पुर्न अवलोकन करें।

कहें: "अब जब हम शान्ति के पुरूष की अवधारणा और उसे कैसे खोजना है और उसे पा लेने के बाद क्या करना है, का पुर्न अवलोकन कर चुके हैं तो आईए इसका अभ्यास करें।

पहिली मिशनरी यात्रा – दल 1:
कहें: "हमें मिशनरी यात्रा में "बाहर भेजने" के लिए दो स्वयंसेवक चाहिए।"

1. कहें: "कमरे में पुनः प्रवेश करने पर वे अभिनय करेगें कि मानो वे एक नए क्षेत्र में प्रवेश किए हैं और शान्ति के पुरूष को खोज रहें हैं और ठीक उन्हीं कार्यों को करेगें जो वे एक क्षेत्र में प्रवेश करके शान्ति के पुरूष को ढूढ़ने के लिए करेगें।"

दल नम्बर 1 को कमरे से बाहर भेज दें।

:: बचे प्रतिभागियों को बताएं कि जब पहला समूह कमरे में वापस आएगा तो उन्हें कैसी प्रतिक्रिया करनी है।
1. दो या तीन लोगों को चुन लें जो शान्ति के पुरूष होंगे।
2. बाकि बचे लोगों में से कोई उदासीन, कोई बन्द, कोई विरोधी, कोई ध्यान नहीं देगा, कोई रोकेगा इत्यादि।

2. पहला दल कमरे में प्रवेश करने के बाद शान्ति के पुरूष के खोज के लिए तब तक पूछताछ करेगें और आत्मिक रूचि के प्रश्नों को पूछेगें जब तक उन्हें ऐसा पुरूष मिल न जाए। दल 1 उस व्यक्ति को प्रभु के पास लाएगें।

3. दल नम्बर 1 तब बैठ जाएगा, यह सोचकर की उसका कार्य पूरा हो गया।

<u>सूचना प्राप्त करने का समय</u>:

1) पूछें: "क्या शान्ति के सभी पुरूषों की पहचान हो गई?"

2) कहें: "हमारा कार्य सिर्फ इतना नहीं कि शान्ति के पुरूष को पहचाना जाए और उन्हें यीशु मसीह के विश्वास में लाया जाए, परन्तु हमारी यह भी जिम्मेवारी है कि हम इन शान्ति के पुरूषों को प्रशिक्षित करें ताकि वे अपने सभी "ओइकोस" मित्रों एवं परिवारों को मिलाकर एक गृह कलीसिया बनाए।

दूसरी मिशनरी यात्रा – दल 2:

कहें: "हमें अपनी दूसरे मिशनरी यात्रा के लिए दो और स्वयंसेवक चाहिए।"

1. कहें: "कमरे में पुनः प्रवेश करने पर वे अभिनय करेगें कि मानो वे एक नए क्षेत्र में प्रवेश किए हैं और शान्ति के पुरूष को खोज रहें हैं और ठीक उन्हीं कार्यों को करेगें जो वे एक क्षेत्र में प्रवेश करके शान्ति के पुरूष को ढूंढ़ने के लिए करेगें।"

   दल नम्बर 2 को कमरे से बाहर भेज दें।

:: बचे प्रतिभागियों को बताएं कि जब पहला समूह कमरे में वापस आएगा तो उन्हें कैसी प्रतिक्रिया करनी है।
   1. दो या तीन अलग लोगों को चुन लें जो शान्ति के पुरूष होंगे।
   2. बाकि बचे लोगों में से कोई उदासीन, कोई बन्द, कोई विरोधी, कोई ध्यान नहीं देगा, कोई रोकेगा इत्यादि।

2. दल 2 कमरे में प्रवेश करने के बाद शान्ति के पुरूष की खोज के लिए तब तक पूछताछ करेगें और आत्मिक रूचि के प्रश्नों को पूछेगें जब तक उन्हें ऐसा पुरूष मिल न जाए। दल 2 निम्न कार्यों को करेगें:

– शान्ति के पुरूष को मसीह के विश्वास में लाएगें।
– इनका प्रशिक्षण शुरू करेगें ताकि वे अपने "ओइकोस" को मसीह के पास लाएं।
– अपने घरों में गृह कलीसिया या नए सुसमाचार सुनने वाला समूह बनाएं

3. दल नम्बर 2 तब बैठ जाएगा, यह सोचकर की उसका कार्य पूरा हो गया।

सूचना प्राप्त करने का समयः

1) पूछेंः "क्या शान्ति के सभी पुरूषों की पहचान हो गई?"

2) कहेंः "हमारा कार्य सिर्फ इतना नहीं कि शान्ति के पुरूष की पहचाना जाए और उन्हें यीशु मसीह के विश्वास में लाया जाए, परन्तु हमारी यह भी जिम्मेवारी है कि हम इन शान्ति के पुरूषों को प्रशिक्षित करें ताकि वे अपने सभी "ओइकोस" मित्रों एवं परिवारों को मिलाकर एक गृह कलीसिया बनाए।

3) कहेंः "परन्तु, इससे हम सी पी एम तक नहीं पहुँच सकते!! आपको अपने प्रत्येक शान्ति के पुरूष को अन्य शान्ति के पुरूष खोजने का प्रशिक्षण देना होगा।"

तीसरी मिशनरी यात्रा – दल 3ः

कहेंः "हमें मिशनरी यात्रा में "बाहर भेजने" के लिए दो और स्वयंसेवक चाहिए।"

1. कहेंः "कमरे में पुनः प्रवेश करने पर वे अभिनय करेगें कि मानो वे एक नए क्षेत्र में प्रवेश किए हैं और शान्ति के पुरूष को खोज रहें हैं और ठीक उन्हीं कार्यों को करेगें जो वे एक क्षेत्र में प्रवेश करके शान्ति के पुरूष को ढूंढ़ने के लिए करेगें।"

दल नम्बर 3 को कमरे से बाहर भेज दें।

:: बचे प्रतिभागियों को बताएं कि जब पहला समूह कमरे में वापस आएगा तो उन्हें कैसी प्रतिक्रिया करनी है।
1. दो या तीन अलग लोगों को चुन लें जो शान्ति के पुरूष होंगे।
2. बाकि बचे लोगों में से कोई उदासीन, कोई बन्द, कोई विरोधी, कोई ध्यान नहीं देगा, कोई रोकेगा इत्यादि।

2. दल 3 कमरे में प्रवेश करने के बाद शान्ति के पुरूष के खोज के लिए पूछताछ करेगें और आत्मिक रूचि के प्रश्नों को पूछेगें।

सूचना प्राप्त करने का समयः
बड़े समूह के द्वारा दल 3 के कार्य की आलोचना होगी।

पूछेंः "आपके अनुसार दल 3 ने कैसा कार्य किया?"

यदि दल 3 ने निम्नलिखित कार्यों को नहीं किया तो उनका कार्य पूरा नहीं हुआः
1) कमरे में मौजूद सभी शान्ति के पुरूष को पहचानना।
2) उन्हें यीशु मसीह के विश्वास में लाना
3) उन्हें प्रशिक्षण दें ताकि वे एक गृह कलीसिया स्थापित कर सकें।

4) उन्हें यह प्रशिक्षण दें कि दूसरों को कैसे प्रशिक्षण देना है। (इसके लिए क्या चाहिए? एक साहसपूर्ण गवाह और विश्वास को बॉटना)।

चौथी मिशनरी यात्रा – दल 4:

कहें: "हमें चौथे मिशनरी यात्रा में "बाहर भेजने" के लिए दो स्वयंसेवक चाहिए।"

1. कहें: "कमरे में पुनः प्रवेश करने पर वे अभिनय करेगें कि मानो वे एक नए क्षेत्र में प्रवेश किए हैं और शान्ति के पुरूष को खोज रहें हैं और ठीक उन्हीं कार्यों को करेगें जो वे एक क्षेत्र में प्रवेश करके शान्ति के पुरूष को ढूंढ़ने के लिए करेगें।"

दल नम्बर 4 को कमरे से बाहर भेज दें।

:: बचे प्रतिभागियों को बताएं कि जब पहला समूह कमरे में वापस आएगा तो उन्हें कैसी प्रतिक्रिया करनी है। उन्हें शान्ति के पुरूष का कोई भी विशेषता नहीं दिखाना है।

2. दल 4 कमरे में प्रवेश करने के बाद शान्ति के पुरूष के खोज के लिए पूछताछ करेगें और आत्मिक रूचि के प्रश्नों को पूछेगें। जब उन्हें कोई नहीं मिलेगा, तो उन्हें अपने पैर से धुल झाड़ लेना चाहिए और अपने आप कमरे से बाहर चले जाना चाहिए।

<u>सूचना प्राप्त करने का समय:</u>

1) पूछें: "क्या शान्ति के सभी पुरूषों की पहचान हो गई?"

2) कहें: "क्या दल ने उचित प्रतिक्रिया दिखाई?

3) कहें: "क्या ऐसा करना कठिन था?"

सारांश (5 मिनट):

पूछें: "इस सत्र कौन सी बात ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया? इसके कारण आप क्या अलग करेगें?

कहें: "स्मरण रखें कि शान्ति के पुरूष को खोजने का लक्ष्य है कि वे अपने "ओइकोस" को यीशु के पास लाएं, एक गृह कलीसिया स्थापित करें, और अन्य लोगों को एक **सी पी एम** आरम्भ करने के लिए प्रशिक्षण दें।"

टी4टी दिन 2
बी पी आई 7–4

(3 घण्टा)

विषय और लक्ष्य:
इस सत्र में प्रतिभागी और स्थानीय विश्वासी एक आदर्श **टी4टी** प्रशिक्षण समूह में भाग लेगें। उन्हें "1/3,1/3,1/3 सिद्धान्त" करके दिखाया जाएगा। वे **टी4टी** "उद्धार का आश्वासन" पाठ को सीखेगें।

आवश्यक संसाधन:
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- प्रत्येक प्रतिभागी के लिए टी4टी पाठ की प्रतिलिपी

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
प्रत्येक प्रतिभागी के लिए टी4टी से 'पाठ 1' की प्रतिलिपी बना लें।

श्वेत पट पर लिखें:

टी4टी प्रशिक्षण में लोगों की संख्या	कितने लोगों के साथ बॉटा गया	
	(एक एक करके सुनाना)	(समूह में सुनाना)
अपनी कहानी सुनाने की कोशिश (असफल)		
अपनी कहानी सुनाई		
सुसमाचार प्रस्तुतिकरण सुनाने की कोशशि (असफल)		
सुसमाचार प्रस्तुतिकरण सुनाना		
अनुसरण करने के कार्य		
पर्चा या बाईबल देना		
मसीह को स्वीकारना		

यदि आपके पास बहुत बड़ा समूह हो तो आप ऊपर दिए चार्ट को नोट कार्ड पर बना कर प्रतिभागियों को छोटे समूह में जवाबदेही करने दें और तब अपने समूह से संख्या को बड़े समूह को बताने कहें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):
उन प्रतिभागियों का स्वागत करें जो बी पी आई के नहीं हैं।

कहें: आज हम एक टी4टी प्रशिक्षण सत्र का आदर्श प्रस्तुत करेगें। प्रत्येक सत्र 1/3,1/3,1/3 सिद्धान्त पर आधारित है। एक तिहाई समय जवाबदेही में लगाया

जाएगा, एक तिहाई नए संसाधनों को सीखने में, और एक तिहाई नए संसाधनों के अभ्यास में।

मुख्य सत्र (3 घण्टा) :

उत्तरदायी (1 घण्टा):

आराधना के साथ शुरू करें। तब उत्तरदायी भाग की शुरूआत करें। यदि आपके पास छोटा समूह है, तो प्रत्येक व्यक्ति से जवाबदेही के प्रश्न पूछें और श्वेत पट पर आपने जो चार्ट लिखा है उस पर अंक लिखें। (यदि आपके पास बड़ा समूह है तो आप प्रतिभागियों को हाथ उठाने को कह सकते हैं ताकि वे आपको अंक बता सके। आप उन्हें छोटे समूह में भी विभाजित कर सकते हैं और उस समूह में जवाबदेही करा सकते हैं और तब उन्हें वापस आकर बड़े समूह में रिर्पोट देने को कह सकते हैं ताकि आप चार्ट पर अंक लिख सकें।)

निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

1. "अपनी कहानी को आपने कितनी बार बताया?"
2. "कितनी बार आपने अपनी कहानी बताने की कोशिश की पर नहीं बता पाए?"
3. "कितनी बार आपने सुसमाचार प्रस्तुतिकरण बताया?"
4. "कितनी बार आपने फिर से मिलने का समय लिया?"
5. "कितनी बार आपने पर्चा या बाईबल बॉटी?"
6. "कितने लोगों ने यीशु को ग्रहण किया?"
7. "क्या आपने एक– एक लोग या समूह को सुसमाचार सुनाया?"

सभी उत्तरों के लिए अंक लिखें। उस व्यक्ति के लिए सही प्रत्युत्तर का आदर्श प्रस्तुत करें जिसने सुसमाचार नहीं सुनाया (या समूह में नए विश्वासियों को नहीं लाया)। समस्या– समाधान और प्रत्येक के साथ प्रार्थना करें।

कहें: "यहॉ हम ––––– व्यक्ति थे। अब देखिए कि बस ––––– दिनों में कितने सारे लोगों ने सुसमाचार सुन लिया!"

पूछें: "जवाबदेह– क्या यह कार्य करता है? **हॉ!** मैंने लोगों को सुसमाचार सुनाया यह सुनिश्चित्त करने के लिए मुझे जानबूझकर कर कार्य करना पड़ता है। मुझे मालूम है कि मैं समूह के प्रति जवाबदेह हूॅ।

"क्या आप देख सकते हैं कि यदि हम प्रति सप्ताह एक समूह के रूप में मिलें और पॉच लोगों को सुसमाचार सुनाने का वचन दें तो यह कितना शक्तिशाली हो सकता है?"

प्रतिभागियों को स्मरण दिलाएं कि **टी4टी** सत्र का यह प्रथम 1/3 है। प्रत्येक **टी4टी** सत्र में तीन भागों वाली जवाबदेही, नए संसाधन / पाठ, और नए पाठ का अभ्यास पाया जाता है।

नए संसाधन (1घण्टा):

कहें: "अब, आईए हम इस बात पर विचार करें कि जो लोग मसीह के बारे सुन रहें हैं या मसीह को ग्रहण कर रहें हैं उनके साथ क्या किया जाए।"

टी 4टी से पाठ 1 सिखाएं जैसा आप एक **टी4टी** समूह में सिखाएगें

प्रतिभागियों को यह जानने दें कि यह **टी4टी** सत्र के 1/3 का दूसरा भाग है

नए संसाधन की शिक्षा पुनः दें (1 घण्टा):

प्रतिभागियों को दो दो के समूह में बॉट दें और एक दूसरे को पाठ पुनः सिखाने को कहें। प्रत्येक प्रतिभागी को सिखाना अनिवार्य है। जब वे एक दूसरे को पाठ सिखा चुके तो उन्हें खोए हुए लोगों की सूची निकालने को कहें और उन अगले पॉच लोगों के नाम पर गोलाकार करने को कहें जिन्हें वे अपनी गवाही सुनाएगें।

कहें: "यदि कोई नया (प्रतिभागी के द्वारा सुसमाचार बताने से बचा है) है तो वह भी अपने खोए "ओइकोस" की सूची बनाए और उन सारे कार्यों को करे जो हमने पिछले पाठ एक में किए।

सारांश (5 मिनट):

पूछें: " 'एक **सी पी एम** योजना के पुनरूत्पादन करने वाले 5 भागों' में **टी4टी** कहॉ उचित बैठता है?"

दिन 7 की सूचना प्राप्त करना

(45 मिनट)

टी4टी प्रतिभागियों के जाने के बाद, **बी पी आई** समूह से सूचना प्राप्त करें।

कहें: "आज के **टी4टी** सत्र में किन बातों पर आपने गौर किया?"

"क्या आपने कुछ ऐसा देखा जिसे देखकर आप चकित हुए?"

"क्या आपने देखा कि जवाबदेह कितना शक्तिशाली है?"

कहें: "**टी4टी** करते समय आपको समय बनाना होगा ताकि जब परमेश्वर आपको सुनाने का अवसर दें तो आप सुना पाएं– तब भी जब आपको किसी के पूरे परिवार को जाकर सुनाना हो।

"इस सप्ताह के दृष्टांत में, व्यवसायी ने गलती से राज्य को पाया, अच्छे सामरी ने बिना ढूंढें परमेश्वर को पाया, खोजा ने उसे पाया क्योंकि वह ढूंढ रहा था।

"जब आप अपनी कहानी बताने को जाएं, इनमें से कुछ लोगों से आप मिलेगें। स्किट में देखे कुछ लोगों से भी आपकी मुलाकात होगी। गृह कलीसिया छोटे शुरूआत से आरम्भ होती है– एक विश्वासी अपने आस पास के लोगों को तब तक जमा करे जब तक यह दूसरे परिवारों को जन्म न दे और अन्य समूह / कलीसिया न स्थापित हो जाए।"

गृह कार्य:

कहें: "पूर्व–प्रशिक्षण पैकेट में 'विश्वासियों का याजकपन' परिच्छेद पढ़ें।"

पूछें: "प्राचीन / पास्टर्स कौन हैं?"

कहें: "आपको अपने एच सी से मिलना होगा यह सुनिश्चित्त करने के लिए कि आपके पास कल से पहले एक कलीसिया के पॉच उददेश्यों को पूरा करने की एक योजना हो। यह भी निणर्य करना न भूलें कि आपकी कलीसिया ने जो दान इस सप्ताह जमा किया उसका उपयोग कैसे किया जाएगा।"

दिन 8 के लिए एच सी बाईबल परिच्छेद:

मत्ती 6:24–34

दिन 8 का अवलोकन (आरम्भ)

(10 मिनट)

आज के लिए घोषणा करें। प्रार्थना निवेदन पूछें। प्रार्थना करके सत्र आरम्भ करें।

पूछें: "आपका उददेश्य क्या है? (एक अंगुली ऊपर उठाएं।) हमारे अधिकार की दो पटरियॉं क्या हैं? (दो अंगुली ऊपर उठाएं)" "हैन्डी गाईड" का पुर्न अवलोकन करें।

एस सी भूमिका को पुर्न अवलोकन करें।

चुटकी बजाना आरम्भ करें और पूछें इसका अर्थ क्या होता है।

पूछें: "किसने पूर्व–प्रशिक्षण पैकेट में 'विश्वासियों का याजकपन' पढ़ा था?"

5 भाग– अगुवों की बढ़ोत्तरी
बी पी आई 8–1

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी सीखेगें कि कैसे विश्वासियों को **सी पी एम** योजना के प्रथम चार भागों में प्रशिक्षण देने और उन्हें दूसरों को प्रशिक्षित करने के प्रति जवाबदेह बनाने से वे अगुवे के रूप में विकसित होंगें और जिससे अगुओं की संख्या तेजी से बढ़ेगी।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- पोस्टर पेपर और मार्कर्स

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
हेडर तरीके से श्वेत पट पर एक सी पी एम योजना के पॉच भागों को लिखें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):
कहें: "यदि आप एक **सी पी एम** को मसीह के लिए होते देखना चाहते हैं तो सबसे प्रमुख बात है **अगुवों की तेज गति से वृद्धि**। अतः हम तेज गति से आत्मिक अगुवों को विकसित होते देखना चाहते हैं। कुछ लोग यहॉ रूक जाते हैं क्योंकि वे केवल विश्वासियों को देखते हैं और वहॉ मौजूद महान क्षमता को नहीं देख पाते।"

प्रतिभागियों को बाईबल और जीवन के अनुभवों से कुछ महान आत्मिक अगुवों के बारे में बताने को कहें। पूछें: "उनमें से कितने लोग आत्मिक तौर पर महान थे जब वे यीशु के पास आए? उनमें से कितनो का पूर्व अस्तव्यस्त और साफसुथरा नहीं था?"

मुख्य सत्र (45 मिनट) :
जो श्वेतपट पर लिखा है उसके उपयोग से **सी पी एम** योजना के 5 भागों का पुर्न अवलोकन करें। कहें: "हम प्रथम चार भाग का उपयोग कर के अपने अगुवे विकसित करना चाहते हैं।

प्रवेश के समय कौन सी बातें होतीं हैं?	*खोए हुओं के साथ बातचीत, कहानी बताना*
सुसमाचार प्रस्तुतिकरण में क्या होता है?	*यीशु के सुसमाचार को सुनाना*

लघु अवधि शिष्यत्व में क्या होता है? *निश्चय, किस प्रकार प्रभु के साथ समय बिताएं, प्रार्थना कैसे करें, सुसमाचार कैसे सुनाएं, कलीसिया क्या है– विश्वास के आधार*

कलीसिया संरचना में क्या सिखाया गया? *5 उददेश्य, भाग लेने वाली बाईबल अध्ययन*

"ये सारी बातें दोहरायी जाती हैं। आत्मिक अगुवे वे लोग नहीं होते जिन्हें सबसे अधिक मालूम होता है। ऐसे लोग अगुवे होते हैं जो जैसे ही यह सीखते हैं कि क्या सही है उसे करते जाते हैं।

"यदि आपके पास ऐसे विश्वासियों का समूह है जिन्हें आप अगुवे के योग्य नहीं पाते, तो उन्हें अपनी प्रवेश नीति और सुसमाचार प्रस्तुतिकरण सिखाएं। यदि वे अपनी कहानी बताना शुरू करें और खोए लोगों को यीशु के बारे बताना शुरू करें तो वे बढ़ेगें। जब वे लोगों को यीशु के पास आते हुए देखेगें, तब उन्हें सिखाएं कि कैसे इन नए लोगों को शिष्य बनाना है और कैसे एक बाईबल अध्ययन समूह को गृह कलीसिया बनाना है। तब वे जंगली लोग नहीं रह जाएगें; वे जो सीखते हैं उसे मानकर अगुवे बन जाएगें। जैसे जैसे वे सीखते और दूसरों को सिखाते हैं, वे अगुवे के रूप में विकसित होगें।"

पूछें: "यीशु ने अपने शिष्यों को किस प्रकार सिखाया? क्या कक्षा में कुर्सियों पर बैठाकर?" (यह काम के साथ साथ प्रशिक्षण था।)

चार के समूह में विभाजित हों जाएं। किसी एक सुसमाचार को चुन लें और उसमें से ऐसे तरीकों को देखें जिसके द्वारा यीशु अपने शिष्यों को बढ़ाया और उन्हें अगुवे के रूप में विकसित किया। 10 मिनट तक विचार विमर्श करें और ऐसे पदों को लिखें जो इसे स्पष्ट करती है।

सभी को वापस बुलाएं। समूह से पूछें कि वे उन कुछ तरीकों को बताएं जिसके द्वारा यीशु ने अगुवे तैयार किए। किसी एक को उन बातों को पोस्टर पेपर पर लिखने के लिए बुला लें जो समूह बता रहें हैं।

सारांश (5 मिनट):

कहें: "अगुवे बनाने के लिए, हमें उन्हें थोड़ा सिखाना है, उन्हें आज्ञा मानने का अवसर देना है और दूसरों को सिखाने के लिए उन्हें प्रेरित करना है। आज्ञाकारिता के द्वारा, परमेश्वर किसी भी व्यक्ति को लेकर एक समूचे जन समूह या क्षेत्र को अपने पास ला सकता है। यह सत्य है यह जानने के लिए हमें केवल प्रारम्भिक शिष्यों को ही देखना होगा।"

विश्वासियों का याजकीय पद एवं बाईबल संबन्धी अधिकार
बी पी आई 8–2

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागियों को यह मूल्यांकन करने की चुनौती दी जाएगी कि एक विश्वासी कलीसिया के अन्तर्गत क्या कर सकता है और क्या नहीं और यह भी कि क्या दोनों विधी, बपतिस्मा एवं प्रभु भोज को पूरा करने के लिए क्या विशेष लोगों की ही आवश्यक्ता है। प्रतिभागियों को उन तरीकों के बारे में सोचना होगा जिससे वे विश्वासियों को मसीह में अपनी स्थिति के विषय में आत्मविश्वास से भरने के लिए उत्साहित कर सकें। ताकि सभी विश्वासी परमेश्वर से प्राप्त अधिकार का उपयोग करके कलीसिया के कार्यों और विधी को पूरा कर सकें।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- पोस्टर पेपर और मार्कर्स

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
पोस्टर पेपर पर इन चार जानवरों के समूह को बनाएंः

घोड़ा–खच्चर खरगोश–हाथी छिपकली–मेढक स्टारफिश–ऑक्टोपस

सत्र शुरू होने से पहले निम्नलिखित पद संख्या को अलग अलग आधे पोस्टर पेपर पर लिखें (एक टुकड़े पर एक): निर्गमन 19:6; 1पतरस 2:9–10; प्रकाशितवाक्य 1:5–6; प्रकाशितवाक्य 5:9–10

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):
चुपचाप समूह के समक्ष खड़े रहें। चुटकी बजाना शुरू करें और प्रतिभागियों को यह स्मरण दिलाएं कि प्रत्येक चुटकी में कोई यीशु के बगैर मर रहा है (यह प्रथम दिन में अन्तदर्शन में बताया गया था)।

पूछेंः "हम कैसे यह सुनिश्चित्त कर सकते हैं कि अनन्तकाल में प्रवेश करने से पहले प्रत्येक जन सुसमाचार सुन ले?"

"सुसमाचार फैलाने का सबसे तेज तरीका है सी पी एम। सी पी एम की परिभाषा किसे याद है?"

"सी पी एम पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित एक प्रक्रिया है जिसमें एक जन समूह में या शहर में देशी कलीसिया तेजी के साथ पुनरूत्पादित होती है ताकि प्रत्येक व्यक्ति

को सुसमाचार सुनकर प्रत्युत्तर करने का और स्थानीय कलीसिया में भागीदार होने का अवसर मिले।

"आज हम अपने सी पी एम योजना में अगुवों की संख्या तेजी से बढ़ाने के विषय में देख रहें हैं। किस तरह की कलीसिया हम स्थापित कर रहें हैं, उस पर यह निर्भर करेगा कि अगुवों की संख्या कितनी तेजी से बढेगी। श्वेत पट / पोस्टर पेपर को देखें। यहॉ चार जानवरों के समूह हैं जो हमें यह याद रखने में सहायता करेगें कि हम किस तरह की कलीसिया चाहते हैं–हमें इसे अपने कलीसिया के विश्वासियों / अगुवों को शुरू से ही सिखाना चाहिए ताकि यह कलीसिया के डी एन ए का एक भाग बन जाए।

"नीचे दिए जोड़ों में क्या भिन्नता है?"

घोड़ा–खच्चर

(दोनों उपयोगी हैं, परन्तु खच्चर पुररूत्पादन नहीं कर सकते–वे केवल अपने जीवन काल तक उपयोगी हैं)

खरगोश–हाथी

(हाथिनी दो साल में केवल एक बच्चे को जन्म देती है और बच्चे के बड़े होने और बच्चा देने में कई वर्ष निकल जाते हैं। खरगोश प्रत्येक कुछ महिनों में कई सारे बच्चे देते हैं। जन्म लेने के कुछ समय बाद ही खरगोश बच्चा देने शुरू कर देता है)

छिपकली–मेढक

(मेढक भोजन को अपने पास आने के लिए इन्तजार करता है और तब वह उसे निगलता है। छिपकली दरारों में अपने भोजन को ढूंढ़ती है। हम खोए हुओं को ढूंढ़ना चाहते हैं, हम यह इन्तजार नहीं करते कि वे हमारे पास आएगें।)

स्टारफिश–ऑक्टोपस

(ऑक्टोपस विस्मयकारी होते हैं। यदि आप उसके एक पैर को काट दें तो वह फिर बढ़ जाएगा, परन्तु यदि आप उसके सिर काट दें तो वह मर जाएगा। स्टारफिश के पूरे शरीर में एक ही **डी एन ए** पाया जाता है इसलिए यदि आप उसे बीच से भी कई टुकड़ों में विभाजित कर दें तौभी प्रत्येक टुकड़ा एक स्टारफिश का रूप ले लेगा)

पूछें: "इसका कलीसिया स्थापना से क्या सम्बंध है?"
कहें: "हम ऐसी कलीसिया चाहते हैं जो खच्चर के बजाए घोड़े हों: ऐसी कलीसिया जो कलीसिया उत्पन्न कर सके। ऐसी कलीसिया जो हाथी के बजाए खरगोश हों: नई स्थापित कलीसिया भी कलीसिया को जन्म दे, और वर्ष में कई बार कई सारे बच्चों को जन्म दे। ऐसी कलीसिया जो मेढक की बजाए छिपकली हो: ऐसी कलीसिया जो खोए लोगों के पास जाए न कि उनके आने का इन्तजार करे। ऐसी कलीसिया जो ऑक्टोपस के बजाए स्टारफिश हों: जब कलीसिया को काट डाला जाए या सताव के कारण वह विभक्त हो जाए तो उसके सारे विश्वास यह सीखे हुए हों कि नई कलीसिया कैसे स्थापित की जा सकती है।"

मुख्य सत्र (40 मिनट) :

कहें: "अधिकतर धर्मों में धार्मिक विधियों को करने के लिए लोग अलग किए हुए होते है। जब हम पुनरूत्पादन करने वाली गृह कलीसिया की बात कर रहें हैं,तो यह महत्वपूर्ण है कि इन बातों को हम संदर्भ में विचार करें।"

जब समूह उत्तर दे रहें हों तो आप किसी से कहें कोई आकर श्वेत पट पर इन्हें लिखे।

पूछें: "वे कौन सी बातें हैं जो विश्वासियों द्वारा / के लिए की जाती हैं?" (उदाहरण हो सकता है: बपतिस्मा, विवाह, प्रभु भोज, मरे को गाड़ना, इत्यादि)

कहें: "जब हम पुनरूत्पादन करने वाली कलीसिया आरम्भ करने की सोच रहें हैं, तो ये सारी बातें विश्वासियों के जीवन को प्रभावित करती हैं। उन्हें यह जानना चाहिए कि उन्हें या नए विश्वासियों को कौन बपतिस्मा दे सकता है। यदि कोई मर जाता है तो हमें क्या करना है? विश्वासी बनने से पूर्व उनके पास संस्कृतिक उत्तर थे। जो कलीसिया हम शुरू कर रहें हैं उसके लिए बाईबल के उत्तर चाहिए।" (आप अपनी दो अंगुलियों को ऊपर उठाएं ताकि आप उन्हें हमारे अधिकार की दो पटरियों को स्मरण दिलाएं ।)

जब आपके पास सूची तैयार हो तो उन्हें चार छोटे समूह में बॉट दें। प्रत्येक समूह को एक एक पोस्टर पेपर का टुकड़ा दें जिन पर निम्नलिखित पद संख्या लिखी हों: निर्गमन 19:6; 1पतरस 2:9–10; प्रकाशितवाक्य 1:5–6; प्रकाशितवाक्य 5:9–10। उन्हें यह खोजने के लिए पॉच मिनट का समय दें कि यह पद किसे सम्बोधित कर रहा है और यहॉ क्या कहा गया है। फिर समूह को आकर एक मिनट में अपने अपने उत्तर देने को कहें।

पूछें: "एक याजक का कार्य क्या है? दूसरे धर्मों में, किसके पास उस धर्म की धार्मिक विधियों को करने का अधिकार है? किसी भी धर्म के याजक के पास धर्म की सारी विधियों को पूरा करने का अधिकार होता है।

"यह आज हमारे ऊपर कैसे लागू होता है? इन पदों के अनुसार याजक कौन है? हम सभी जो यीशु मसीह के शिष्य और विश्वासी हैं।

"हमारा महायाजक कौन है?" पढ़ें इब्रानी 2:17–18; 3:1; 4:14–15; 5:8–10; 10:21–22

किसी को सभी भाषाओं में मत्ती 20:25–28 और 1पतरस 2:9 पढ़ने को कहें।

पूछें: "इन पदों में कौन कौन सी बातें अन्य धर्मों के अगुवों और पहले से पाई जाने वाली कलीसियाओं से भिन्न है?"

"विश्वासियों के याजकपन का अर्थ क्या है? धर्मविज्ञानी सिद्धान्त क्या हैं?" गृहकार्य से "विश्वासियों के याजकपन" प्रश्न के उन्हीं चार समूहों में विवेचना करें।

- एक याजक पहले परमेश्वर का सेवक है तब लोगों का
- परमेश्वर और मनुष्य के मध्य यीशु ही मध्यस्थ था। यह एक याजक के रूप में हमारी भूमिका को समझने में सहायता करता है।
- सभी विश्वासी याजक हैं–यह भूमिका हम सभी के पास है।
- हम सीधे परमेश्वर के पास पहुॅच सकते हैं।
- हमें यीशु ने परमेश्वर के लिए याजक होने के लिए नियुक्त किया है– वह हमारा महा याजक है।

पूछें: "विश्वासियों का याजकपन" का अर्थ व्यवहारिकता में क्या होता है? हमें अपने सी पी एम कार्य के व्यवहारिक पहलू पर ध्यान देना होगा। अपने व्यवहारिक पहलू के विषय में उत्तर देने को तैयार रहें क्योंकि आपसे प्रश्न पूछा जाएगा (विशेषकर स्थापित कलीसियाओं द्वारा)।"

- हमें इस बात में आश्वस्त होना है कि हमारे पास बाईबल का अधिकार है।
- पवित्र आत्मा *सभी* विश्वासियों में पाया जाता है।
- *सभी* विश्वासियों को आत्मिक वरदान मिले हैं।
- हमारे अन्दर सेवक–अगुवे की भावना होनी चाहिए – मत्ती 20:25–28
- *सभी* को सुसमाचार सुनाना चाहिए
- इफिसियों 4:11–13– अगुवे का कार्य है कि वह विश्वासियों को तैयार करे और प्रशिक्षण दे ताकि वे सेवकाई का काम कर सकें। विश्वासी मसीह की कलीसिया को **निर्माण** करने का कार्य करते हैं।

सभी भाषाओं में मत्ती 28:18–20 पढ़ें।

निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें:

- "इस परिच्छेद में अधिकार किसके पास है? यीशु
- "यीशु ने अपना अधिकार किसे दिया? अपने शिष्यों को
- "एक शिष्य कौन है? एक विश्वासी–हरेक जो यीशु का अनुयायी है
- "सभी विश्वासियों को क्या अधिकार दिया गया है? जाओ और चेला बनाओ, उन्हें पिता,पुत्र,पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन्हें यीशु की आज्ञाओं को मानना सिखाओ।"

कहें: "यीशु ने अपने कलीसिया के सारे कार्यों को करने का अधिकार सभी को दिया है (उदाहरण: बपतिस्मा, प्रभु भोज इत्यादि) (कुछ लोग इससे सहमत नहीं होगें) यीशु ने मत्ती 28:28–20 में यह अधिकार दिया है।"

सभी उपस्थित भाषाओं में 1पतरस 2:9 पढ़ें।

- दूसरे धर्मों में, धर्म की विधी करने का अधिकार किसके पास है? किसी भी धर्म के सभी धार्मिक कार्यो का अधिकार उस धर्म के याजक के पास है।
- परमेश्वर के कहे अनुसार मसीही धर्म के लिए याजक कौन है? मसीह के सभी विश्वासी।
- तो कौन नए शिष्य बना सकता है? आप बना सकते हैं!
- कौन बपतिस्मा दे सकता है? आप दे सकते हैं!
- कौन दूसरों को यीशु की आज्ञा मानना सिखा सकता है? आप सिखा सकते है!
- यहॉ कितने लोग यह वास्तव में विश्वास करते हैं कि आपक पास बपतिस्मा देने और शिष्य बनाने का अधिकार है?
- अपने हाथ को उठाएं यदि आप यह सोचते हैं कि आपके पास यह अधिकार है।

सारांश (5 मिनट):

कहें: "जबकि हम **सी पी एम** चलाने की कोशिश कर रहें हैं ताकि हमारे जन समूह के सभी लोगों को सुसमाचार सुनने और अपना प्रत्युत्तर देने का अवसर मिले और वे एक पुनरूत्पादन करने वाली गृह कलीसिया में सम्मिलित हों जाएं, इसके लिए आवश्यक है कि हम ऐसी कलीसिया की स्थापना करें जो पवित्र शास्त्र पर आधारित हैं। हमें ध्यान देना है कि जो एक विश्वासी कलीसिया के अन्दर कर सकता है उसे न हम घटाएं और न बढ़ाएं। हम एक दूसरे की सहायता करें और उत्साहित करें ताकि परमेश्वर ने जो उन्हें मसीह में अधिकार दिया है वे उसका उपयोग कर सकें।

"बाईबल में, हम लोगों को आशीष देने और सुसज्जित करने के लिए हाथ रखने की विधी को देखते हैं। अभी मैं चाहता हूँ कि अपने पास खड़े व्यक्ति के सिर पर हाथ रखें और कहें "यीशु मसीह के अधिकार द्वारा, आपको यह अधिकार है कि आप जाकर चेला बनाए, उन्हें पिता,पुत्र,और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दें और उन्हें यीशु की आज्ञाओं को मानना सिखाएं।" **आपके पास यह अधिकार है!**

"अब जबकि हम यह स्थापित कर चुके हैं कि आपके और सभी विश्वासियों के पास चेला बनाने का अधिकार है तो आप जाएं और चेला बनाएं। यीशु को शर्मिन्दा न करें। प्रभु के योग्य चाल चलें। आज्ञाकारी बनें। परमेश्वर इससे कम कुछ अपेक्षा नहीं करता। परमेश्वर इस जगह को बदलना चाहता है और सभी को सुसमाचार सुनने का अवसर देना चाहता है। यदि आप यह नहीं करेगें, तो कौन करेगा? यीशु जगत के अन्त तक आपके साथ है। हम भी आपका प्रशिक्षण देने और उत्साहित करने के लिए आपके साथ हैं।

"अभी दो मिनट लेकर विचार करें कि कलीसिया में क्या कोई ऐसा कार्य है जिसे आप वर्तमान में परम्परा, डर या अन्य किसी कारण से नहीं कर पा रहें हैं , जिसके लिए प्रभु ने आपको अधिकार दिया है? प्रभु से पूछें कि आपकी कलीसिया में क्या ऐसे लोग हैं जिन्हें आपने अभी तक उन कार्यों के लिए स्वतंत्र नहीं किया है जो कार्य प्रभु ने उन्हें सौंपा है? यदि परमेश्वर आपको कुछ प्रकट करता है, इसे स्वीकार करें और बदलाव के लिए समर्पित हों। मैं चुनौति देता हूँ कि आप इसे अपने किसी भाई या बहन को बताएं ताकि आप उन बदलावों को अपने जीवन में लाने के लिए जवाबदेह हों।"

जवाबदेही एवं विवरण देना
बी पी आई 8–3

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी अपनी सेवकाई की व्याख्या और सूचना ईमानदारी से देने की महत्ता को सीखेगें। उन्हें कुछ सहायक तरीकों को सिखाया जाएगा ताकि जब नई कलीसिया शुरू हो, कलीसिया पुनरूत्पादित हो या बढ़े तो वे उन्हें सही सूचना भेजने और जवाबदेह होने में सहायता हो।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- पोस्टर पेपर और स्थाई मार्कर्स
- सूचना देने वाला फार्म और प्रेरितों के कार्य के परिच्छेद वाला पोस्टर्स
- "ट्री ऑफ लाइफ" की सूचना देने वाला फार्म (प्रत्येक प्रतिभागी के लिए)

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
पोस्टर पेपर के टुकड़े में सूचना देने वाला फार्म के उदाहरण बना लें। उदाहरण के लिएः

तारीख

न.	प्रशिक्षक का नाम	प्रशिक्षण का स्थान	जिला	संस्थाओं की संख्या	टी4टी	पीछा करना न. 1	पीछा करना न. 2	पीछा करना न. 3	उपस्थित संख्या	सुनाने वालों की संख्या	सुनने वालों की संख्या	ग्रहण करने वालों की संख्या	विश्वासी समूह	बपतिस्मा	गृह कलीसियाएं
1															
2															
3															
4															
5															
6															
7															
योग															

"ट्री ऑफ लाइफ" का सूचना देने वाला फार्म की प्रतिलिपी प्रत्येक प्रतिभागी के लिए बना लें।

निम्नलिखित को कागज के एक टुकड़े पर लिखें:

प्रेरितों के काम

1:15
2:41
2:47
4:4
5:14
6:1
6:7
9:31
16:5
21:20

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):

कहें: "हम जो इवैन्जेलिकल लोग हैं सूचना देने में दक्ष नहीं हैं। यदि सभा में 50 लोग थे तो हम कहेगें कि 100 लोग थे। एक बाईबल कॉलेज ने अपने विधार्थियों को प्रचार करने के लिए भेजा। जब वे वापस आकर सूचना देने लगे तो पहले विधार्थी ने कहा, 'मेरी सभा में 100 लोग थे।' दूसरे विधार्थी ने कहा, 'मेरी सभा में 200 लोग थे', तीसरे विधार्थी ने कहा 'मेरी सभा में 500 लोग थे'। अगले विधार्थी ने कहा, 'मेरी सभा में बहुत लोग थे। वे बस आते गए, एक के बाद एक, एक के बाद एक, एक के बाद एक, एक के बाद एक। वे बस आते गए।' सभी लोग चकित हो गए। "कितने लोग आए? उसने कहा, 'छह लोग।'

प्रेरितों के काम 5:1–11 को पढ़े या कहानी द्वारा बताएं। कहें: "यह पवित्र शास्त्र का एक गम्भीर परिच्छेद है। यह कैसे जवाबदेही और सूचना भेजने से सम्बंधित है?" (हनन्याह और सफीरा ने झूठ बोला कि उन्हें अपनी भूमी बेचने पर कितना धन मिला। उन्हें पूरा धन तो देना भी नहीं था, परन्तु उन्होंने इसलिए झूठ बोला ताकि यह प्रदर्शित कर सके कि उन्होंने सब कलीसिया को दे दिया। इसके लिए परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया। इससे हमें अपनी सूचना बढ़ा चढ़ा कर बताने से पहले रूकना चाहिए।)

कहें: "हमें अपने उददेश्य को जानना जरूरी है (एक अंगुली ऊपर उठाएं)– हम यह सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करते हैं! यह सेवकाई परमेश्वर की सेवकाई है, हमारी नहीं। यह सब उसकी महिमा के लिए है।

मुख्य सत्र (30 मिनट) :

पूछें: "क्यों जवाबदेही और सूचना देना आवश्यक है?"

कहें: "मान लें कि आप तीन या चार समूह को एक महिने में प्रशिक्षण दे रहें हैं और वे लोग दूसरों को प्रशिक्षण देना शुरू कर रहें हैं। तो तीन वर्ष में आपको इस बात का अन्दाजा भी नहीं रहेगा कि कितने लोग इस आन्दोलन में शामिल हैं।

"आईए हम प्रेरितों के काम को देखें कि प्रारम्भिक कलीसिया ने क्या किया।" प्रेरितों के काम पोस्टर को लटका दें और एक एक पद को देखें। परिणाम को पद संख्या के बगल में लिख दें (नीचे देखें):

प्रेरितों के काम

1:15	120
2:41	3000
2:47	प्रतिदिन कलीसिया बढ़ती गई
4:4	5000
5:14	पुरूषों और महिलाओं की भीड़
6:1	बहुत तेजी से बढ़ोत्तरी
6:7	गुणन संख्या में तेजी से बढ़ना
9:31	कलीसिया बढ़ रही थी
16:5	प्रतिदिन बढ़ रही थी
21:20	हजारों यहूदी कलीसिया में जुड़ गए

कहें: "यदि हम प्रेरितों के काम पुस्तक को क्रमानुसार देखेगें, तो हम कुछ सामान्य विषय देख पाएगें कि सी पी एम कैसे चला। "जब आप इसे संक्षिप्त रूप में समझाएं तो श्वेत पट पर लिखें (ऊपरी भाग में बाद में लिखने के लिए स्थान छोड़ दें):

बड़ी सामर्थ	2:1–4
बड़ा अनुग्रह	4:33
बड़ा डर	5:517
बड़ा सताव	8:1
बड़ा आनन्द	8:8
कलीसिया की बड़ी बढ़ोत्तरी	

पूछें: "क्या हुआ जब सताव शुरू हुआ और विश्वासी तितर बितर हो गए?" (कलीसिया उस क्षेत्र में फैल गई और तेजी से बढ़ती गई। सूची के ऊपर लिखें "बड़ा परिणाम"। हम इन्हीं बातों को अपने सेवकाई में देख सकते हैं: बड़ी सामर्थ, अनुग्रह, डर, सताव, आनन्द, बढ़ोत्तरी और परिणाम!)

कहें: "जब तक हमारे पास कार्य का लेखा जोखा नहीं होगा तब तब हमें यह नहीं पता चल पाएगा कि कार्य कैसा चल रहा है।"

उन्हें छह या सात के समूह में बॉट दें। इस परिच्छेद को पढ़ने के लिए उन्हें पॉच मिनट का समय दें (श्वेत पट पर पद संख्या लिख दें) : लूका 10:17; प्ररितों के काम 14:23–27; 15:3–4

कहें: "इन परिच्छेदों में आपने जवाबदेही और सूचना देने के संबंध में क्या देखा, उसे लिखें।" समूह को प्रत्येक परिच्छेद के उत्तर देने को कहें। उनके उत्तर को श्वेत पट पर लिख दें। (भेजा जाना, सूचना देना, आनन्द, जवाबदेही)

कहें: "तो जब हम सेवकाई करते हैं तो हमें सूचना देना आवश्यक है।
"तो आईए सूचना देने के उदाहरण को देखें। (श्वेत पट पर उस पोस्टर को लटका दें जिस पर टी4टी समूह चार्ट बना हुआ है)। यह भारत मे कार्यरत एक संस्था का उदाहरण है। उनके पास एक बड़ा लक्ष्य है– कि 2025 तक वे 50000 कलीसियाओं को स्थापित होते हुए देखे! इस दिशा में बढ़ने के लिए वे टी4टी समूहों का सहारा

ले रहें हैं, और वार्षिक लक्ष्य रखते हैं ताकि वे पटरी पर रहें। (उस स्थान को दर्शाएं जहां तिथी लिखा है)। वे चार विभिन्न प्रशिक्षण सत्र चलाते हैं। प्रथम टी4टी सत्र दो दिनों का होता है। प्रथम अनुसरण करने वाला सत्र एक दिन का होता है। दूसरा अनुसरण करने वाला सत्र दो दिन का होता है जिसमें अगुवाई प्रशिक्षण और शिष्यत्व सम्मिलित है। तीसरा अनुसरण करने वाला सत्र एक दिन का होता है। (चार्ट में जाएं और प्रत्येक को संक्षिप्त रूप से समझाएं। ये उदाहरण दें: *उपस्थित लोगों की संख्या–18; सुसमाचार सुनाने वालों की संख्या (अन्तिम सभा के बाद)–15; सुनने वाले लोगों की संख्या–75; मसीह को स्वीकार करने वालों की संख्या–20; कितने विश्वासी समूह–2; कितनों का बपतिस्मा हुआ–5; कितनी गृह कलीसिया स्थापित हुई–1)* इस संस्था में वे कहते हैं कि एक विश्वासियों का समूह तब गृह कलीसिया बन जाएगा जब चार या पॉच लोग बपतिस्मा ले लेगें।"

"ट्री आफ लाइफ" सूचना पत्र की प्रतिलिपी सभी को बॉट दें। कहें: "यह दूसरा उदाहरण है कि दक्षिण एशिया में किस प्रकार सूचना दी जाता है।" यदि आपके पास समय हो, उन्हें उनके गृह कलीसिया समूह में बॉट दें ताकि वे इस फार्म को देख सकें। पूछें: "क्या यहॉ कुछ जिसे आप उपयोग कर सकते हैं?" उन्हें विचार विमर्श करने के लिए पॉच से दस मिनट का समय दें। तब फिर समूह को वापस बुला लें।

पूछें: "क्या आपके पास कोई प्रश्न है?"

सारांश (5 मिनट):

कहें: "सूचना देने से आप अपने मजबूती और अपने कमजोरी को समझ सकते हैं। हम जो बड़े कार्य हो रहें हैं उन्हें देख सकते हैं और उनके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे "सर्वोत्तम अभ्यास" लागू कर सकते हैं। उदाहरण स्वरूप: एक टी4टी प्रशिक्षण में छह लोग प्रतिभागी थे और 300 लोगों ने सुसमाचार सुना। एस सी ने पूछा, "क्या उन छह लोगों में से प्रत्येक ने 50 लोगों को सुसमाचार सुनाया?" उसने पाया, नहीं, उन्होंने दूसरों को बताने के लिए प्रशिक्षण दिया, तो वहॉ पीढ़ियॉ थी। उसने सूचना को व्यवस्थित किया इसे समझाने के लिए और उसने यह सीखा कि अपने समूह के साथ "222" को कैसे बेहतर तरीके से कर सकते हैं।

"जैसे जैसे आप सीखते हैं आप सूचना देने को व्यवस्थित करते हैं। आप जो कर रहें हैं उसे सुधारने के लिए आप सर्वोत्तम अभ्यास भी सीख सकते हैं।"

कठिन प्रश्नः वर्तमान व्यवधानों के कारण लड़खड़ाने से कैसे बचें
बी पी आई 8–4

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी उन व्यवधानों को पहचानने की कोशिश करेगें जिन्हें वे अपनी 5 भाग वाली सी पी एम योजना को शुरू करने से पहले देखते हैं।

आवश्यक संसाधनः
- पोस्टर पेपर और स्थाई मार्कर्स

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
इस पाठ को अच्छे तरीके से पढ़ लें ताकि आप समूह तन्त्र से अभ्यस्त हों और यह भी जाने की इसे कैसे इस्तेमाल करना है।

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):
तीन से छह लोगों के समूह में प्रतिभागियों को विभाजित कर दें। पोस्टर पेपर और मार्कर दे दें। समूह को पॉच मिनट का समय दें ताकि वे उन व्यवधानों या समस्याओं को लिखें जिनका सामना वे अपने कार्यों में कर रहें हैं या एक **सी पी एम** योजना को लागू करने में पहले से देखते हैं।

प्रत्येक समूह को बताने का अवसर दें। ऐसे विषय को गोलाकार से घेर दें जो कई समूह ने बताया।

मुख्य सत्र (30 मिनट) :
प्रतिभागियों को छोटे समूह में बॉट दें। सबसे सामान्य समस्या से शुरू कर के, उन्हें विचार विमर्श कर के सभी समस्याओं का सम्भावित समाधान ढूंढ़ने को कहें। संचालक इसमें सहायता कर सकता है कि वह पहले एक विषय बताए और फिर पॉच मिनट के बाद दूसरा विषय बताए।

अन्तिम 20 मिनट का इस्तेमाल बड़े समूह में समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने में लगाएं।

सारांश (5 मिनट):
जब आवश्यकता एवं व्यवधान सुलझा लिया जाए तो इन आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करने का समय दें ताकि परमेश्वर इन व्यवधानों को सुलझाने का ज्ञान दे।

पौलुस का नमूना (0 से 1 और आगे)
बी पी आई 8–5

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी प्रेरितों के काम के एक परिच्छेद का अध्ययन करेगें जिसमें पौलुस ने एक नए क्षेत्र में प्रवेश किया। यह सत्र उन्हें यह देखने में सहायता करेगा कि कैसे एक नया काम जहॉ कोई विश्वासी नहीं था से कैसे एक समूह बना और फिर एक कलीसिया। वे अपने कार्य का भी मूल्यांकन करेगें ताकि वे यह देख पाएं कि अपने नीति को आगे बढ़ाने के लिए उनका अगला कदम क्या होगा।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
इस पाठ और प्रेरितो के काम के परिच्छेद को पढ़ें ताकि आप उसे अच्छे से जानें।

प्रतिभागियों से कहें कि क्या उनमें से किसी की **सी पी एम** योजना को समूह के साथ मूल्यांकन करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। आपको चाहिए कि आप उसकी सी पी एम योजना को पहले से ही देख लें। समूह के लिए आप इस व्यक्ति के साथ एक **सी पी एम** योजना को चलाने का तरीका दिखाएगें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):
कहें: "कल हमने शान्ति के पुरूष के विषय में पढ़ा। शान्ति के पुरूष को खोजने की आवश्यक्ता कब है?"

"भारत में कई लोग बताएगें कि उनकी सेवा बहुत अच्छी है, परन्तु वे न ही नई कलीसिया स्थापित कर रहें हैं और न नए विश्वासियों को बपतिस्मा दे रहें हैं। 'बहुत अच्छा' क्या है? कुछ लोग कुछ नहीं करने के कारण व्यस्त हैं। हम कैसे जान पाएगें कि हम राज्य को आगे बढ़ा रहें हैं?

"एक **सी पी एम** योजना के 5 भाग क्या क्या हैं? उन्हें बोर्ड पर लिख दें (उन दोनों के बीच पर्याप्त स्थान छोड़ें ताकि बाद में उनमें कुछ जोड़ा जा सके।) एक बार इस बात पर जोर दें कि प्रत्येक भाग को पुनरूत्पादन करना है।

मुख्य सत्र (45 मिनट) :

कहें: "आईए अब हम पौलुस की सेवकाई और उसके कार्य की प्रगति को देखें। यह प्रगति किस प्रकार दिखाई देती थी? क्या उसके कार्य में 5 भाग वाली **सी पी एम** योजना पायी जाती थी, या वह केवल बहुत व्यस्त था? तब हम यहॉ मौजूद किसी व्यक्ति के सेवकाई को 5 भाग वाली **सी पी एम** योजना के आधार पर मूल्यांकन करेगें।
"तीन या चार के समूह में हो जाएं। प्रेरितों के काम 14:1–23 और 16:1–5 पढ़ने के लिए 20 मिनट का समय लें। पौलुस के तरीके की विवेचना करें और देखें कि क्या आप एक **सी पी एम** योजना के 5 भाग वहॉ पहचान पातें हैं।"

जब समूह वापस बड़े समूह में आ जाएं, तो किसी को लिखने के लिए सामने आने को कहें। पौलुस की 5 भाग वाले **सी पी एम** योजना को पहचानने के लिए उन्हें कहकर इस विवेचना की शुरूआत करें । पद संख्या लिखें।

पुनरूत्पादन वाली प्रवेश नीतिः	14:1	आराधनालय में सुनाना
	14:3	साहस के साथ सुनाना और चिन्ह और चमत्कार दिखाना
	14:10	एक व्यक्ति को चंगा करना
पुनरूत्पादन करने वाला सुसमाचार प्रस्तुतिकरणः	14:1	सुनाया ताकि लोग विश्वास कर सके
	14:15–17	परमेश्वर की योजना को बताया
	14:21	सुसमाचार प्रचार किया
पुनरूत्पादन करने वाली शिष्यत्वः	14:3	पौलुस ने केवल शब्दों द्वारा ही विश्वासियों को समर्थ नहीं किया परन्तु परमेश्वर को आदर देने वाला स्वभाव दिखलाया।
	14:19–22	उदाहरण द्वारा प्रशिक्षण
पुनरूत्पादन करने वाली कलीसिया संरचनाः	14:23	
पुनरूत्पादन करने वाले अगुवों की बढ़ोत्तरीः	16:1–5	में सभी 'वे' संदर्भ पौलुस ने समूह में कार्य किया अतः लोग निरन्तर प्रशिक्षण पा रहे थे एक विश्वासयोग्य शिष्य को देखा और उसे प्रशिक्षण देने के लिए लाया और अगुवों की संख्या तेजी के साथ बढ़ी

अब समूह विचार विमर्श को निम्नलिखित प्रश्नों द्वारा शुरू करें:

1. "जब पौलुस नए क्षेत्र में गया, तो वह 0 से 1 कैसे पहुँचा?"
2. "जब उसके पास एक या अधिक विश्वासी हो गए तो उसने क्या किया?"
3. "कलीसिया संरचना के लिए उसने क्या सहायता की?"
4. "क्या आपको अंदाजा है कि इसमें कितना समय लगा होगा? (एस एस के अनुसार: तीन से चार महीने, हम बस बताना चाहते हैं इसमें वर्षों का समय नहीं लगा)"

यदि आपके पास समय हो, अपने स्वयंसेवक की **सी पी एम** योजना को देखें और मूल्यांकन करें कि उसमें 5 भाग हैं या नहीं। समूह को इसमें सहायता करने को कहें।

सारांश (5 मिनट):

पूछें: "पौलुस के आदर्श के अनुसार, यह संभव है कि नए क्षेत्र में जाकर जल्दी से शून्य विश्वासी से एक विश्वासी और फिर एक समूह और फिर एक कलीसिया में हम पहुँच सकते हैं जो शिष्य बनाने में सक्षम है?

"अपनी सेवकाई में आप कहाँ हैं? क्या आप शून्य में हैं? आपको क्या करना चाहिए?

"क्या आप एक या अधिक समूह बनाने के कगार पर हैं? आप कैसे उनको कलीसिया संरचना के ओर बढ़ने में सहायता कर सकते हैं?

"क्या आपके पास तिमुथियुस के समान लोग हैं जिन्हें आप अपने संग लेकर स्वयं का और अगुवों का विस्तार कर सकते हैं?

"इसे होते हुए देखने के लिए क्या आपको कुछ रोकने करने की आवश्यक है?"

एक सी पी एम को रोकना / जो कर रहें हैं उसे बन्द करना
बी पी आई 8–6

(45 मिनट)

विषय और लक्ष्यः
यह सत्र वास्तव में दो लघु सत्र है। प्रथम छोटे सत्र में प्रतिभागी उन खतरों को पहचानना सीखेगें जो तब आते हैं जब कार्य तेजी से बढ़ती है और **सी पी एम** को कायम रखने का प्रयास करते हैं। दूसरे छोटे सत्र में प्रतिभागियों को उन कार्यों को बन्द करने की चुनौती दी जाएगी जो वे अपनी सेवकाई में कर रहें हैं जब वे 5 भाग वाले **सी पी एम** योजना को लागू करें।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट एवं मार्कर्स
- पोस्टर पेपर और मार्कर्स

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
सी पी एम के व्यवधानों को पोस्टर पेपर पर लिख लें (यह ब्रूस कार्लटन की पुस्तक एक्टस 29 के पृष्ठ संख्या 243 में है):

- नए विश्वासियों को "कलीसिया" के रूप में पहचान बनाने के लिए उनपर अतिरिक्त दबाव डाला जाता है।
- मसीही बनने से एक विश्वासी की सांस्कृतिक पहचान खत्म हो जाती है।
- नई कलीसिया, पहले से पाई जाने वाली कलीसिया को लांध नहीं पाती
- एक संस्था के अर्न्तगत कलीसिया स्थापना आन्दोलन को सीमित रखने की कोशिश करने से आन्दोलन रूक जाता है।
- ऐसी कलीसिया की स्थापना करने से बढ़ोत्तरी थम जाती है जो कलीसियाएं पुनरूत्पादित नहीं कर सकतीं।
- जो धन परिदान होता है वह निर्भरता बढ़ता है।
- कलीसिया को ऐसे अगुवे चाहिए जिनके पास बाईबल में दी योग्यताओं से अतिरिक्त योग्यता भी होने चाहिए।

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):
सी पी एम के वैश्विक तत्वों का पुर्न अवलोकन करें (यदि आपको हाथ के इशारे नहीं मालूम हैं तो मॉल सत्र देखें– बी पी आई 5–6)।

मुख्य सत्र (35 मिनट) :

कहें: "इन सारे सप्ताहों में हम देख रहें थे कि **सी पी एम** तक कैसे पहुँचा जाए, परन्तु हम ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहते जो इसे रोके। समूहों में विभाजित होकर, 10 मिनट का समय लेकर उन रूकावटों को लिखें जो एक **सी पी एम** को रोकती है।"

समूहों को रिर्पोट देने को कहें। किसी से कहें कि वह सामने आकर उन रूकावटों को बोर्ड पर लिखे। व्यवधानों के चार्ट को निकालें। संक्षिप्त तौर पर इसे समझाएं।

कहें: "इन बातों की सूची आपने बनाई है– ये मनुष्य द्वारा बनाए गए हैं। यदि आप इन मनुष्य द्वारा बनाए रूकावटों को अपने सी पी एम में देखते हैं तो इन्हें निकाल सकते हैं।

"यदि आपकी समय सारिणी खाली नहीं है, तो आप बहुत व्यस्त हैं और आप सुसमाचार नहीं सुना रहें हैं, ***आप उसे बदल सकते हैं*** (संक्रान्ति वाक्य है)।

"अब हम चार या छह लोगों के समूह में हो जाना चाहते हैं। बाकि बचे समय को एक दूसरे को यह बताने मे व्यतीत करें कि वे कौन से कार्य हैं जिन्हें आप कर रहें हैं जो एक **सी पी एम** को रोक सकता है और आप कैसे इन कार्यों को करना बन्द कर सकते हैं। तब उच्च महत्व क्रियाकलापों के सत्र के बारे में सोचें। क्या आप कुछ अच्छे कार्य कर रहें हैं जो आपको अपने 5 भाग वाले **सी पी एम** योजना लागू करने से रोक रहा है? कौन से कार्यों को आपको बन्द करना चाहिए ताकि आप सर्वोत्तम कार्य को कर सके?

"जब आपके समूह सारे लोग सुना दें, तो समूह मे प्रार्थना करें। परमेश्वर से सहायता मांगें कि वह आपको उन कार्यों को करने से रोके।"

सारांश (5 मिनट):

कहें: "जब हम एक **सी पी एम** का संचालन करते हैं तो बहुत से ऐसे कार्य हैं जो हम कर सकते हैं, परन्तु याद रखें कि पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित प्रक्रिया है। यदि सही कार्य कर रहे हैं, तो हमें समय समय पर अपने कार्य का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है ताकि हम यह देख पाएं कि ऐसे कौन से कार्य हैं जिन्हें करना हमें बन्द करना चाहिए– चाहे वे सर्वोत्तम कार्य नहीं या वे ऐसे कार्य हैं जिनसे एक **सी पी एम** की गति धीमी पड़ जाती है।"

सी पी एम योजना कार्यशाला 3
बी पी आई 8–7

(1घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी अपनी 5 भाग वाली **सी पी एम** योजना के अगुवों की तेजी से बढ़ोत्तरी भाग में कार्य करेगें।

आवश्यक संसाधनः
- श्वेत पट , पोस्टर पेपर एवं मार्कर्स
- सी पी एम के रिक्त पन्ने उनके लिए जिन्हें अधिक चाहिए

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
श्वेत पट या पोस्टर पेपर पर लिखें (**रेखांकित शब्द** उनके उपयोग के लिए शीर्षक रहेगें जो काले में हैं वो आपके लिए उदाहरण है):

अन्त दर्शनः

अगुवों की बढ़ोत्तरी

प्रशिक्षण प्रशिक्षक (टी4टी)

करने वाले पर ध्यान

3 महिने का लक्ष्यः *मॉल और 9 शिष्यों को प्रशिक्षक होने के लिए प्रशिक्षण देना*
एक्स वाई जेड कलीसियाओं में नए विश्वासियों के साथ आदर्श सभा

6 महिने का लक्ष्यः *एक शिष्यत्व पाठ को दिखाने द्वारा नए विश्वासियों को सिखाएं कि कैसे जमा होना है।*

प्रार्थनाः

बाहर–
अन्दर–

संसाधन / सहयोगीः

प्रवेश स्तरों को जाचें (10 मिनट):
प्रतिभागियों से एक पृष्ठ निकालने को कहें। उन्हें अपने क्षेत्र में पाए जाने वाले विश्वासियों की एक सूचि बनाने को कहें। उन व्यक्तिओं के नाम को गोल घेरने को

कहें जो उनकी सी पी एम योजना के प्रथम चार भाग में प्रशिक्षण पाने को इच्छुक होंगें।

तब नए विश्वासियों की एक सूची बनाने को कहें। कहें: "आप इन नए विश्वासियों को अपने सी पी एम योजना के प्रथम चार भाग में प्रशिक्षित कर सकते हैं या आप किसी अगुवे को इस प्रशिक्षण को देने के लिए प्रशिक्षण दे सकते हैं और उन्हें प्रशिक्षण देने की इजाजत दे सकते हैं। इसे करने के लिए आप मॉल का भी प्रयोग कर सकते हैं।"

मुख्य सत्र (45 मिनट) :

बाकि बचे समय को अपने सी पी एम योजना में पाए जाने वाले अगुवों की बढ़ोत्तरी पर कार्य करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

सारांश (5 मिनट):

अन्तिम पॉच मिनट में उन्हें चार चार के समूह होकर प्रार्थना करने को कहें।

दिन 8 की सूचना प्राप्त करना

(15 मिनट)

प्रतिभागियों को चार के समूह में होकर उन बातों पर चर्चा करने को कहें जो उन्होंने आज सीखीं या जिससे उन्हें चुनौती मिली। बड़े समूह में वापस आने के बाद उनसे पूछें कि क्या कोई कुछ बताना चाहता है जो उन्होंने सीखा है।

एस सी भूमिका का पुर्न अवलोकन करें

चुटकी बजाना प्रारम्भ करें और पूछें कि इसका अर्थ क्या होता है।

गृह कार्य:

कल **आई ओ आई** समूहों में बताने के लिए 5 भाग वाली **सी पी एम** योजना को पूरा कर लें।

दिन 9 के लिए एच सी परिच्छेद:

मत्ती 6:9–13

गृह आराधना की सूचना प्राप्त करना
बी पी आई 9–1

(1घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी अपने गृह कलीसिया प्रणाली की प्रक्रिया को देखेगें और साथ ही साथ निरीक्षकों को उनक अगुवाई भूमिका के लिए उत्तरदायी ठहराऐगें।

आवश्यक संसाधनः
- कुछ भी नहीं

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
पाठ योजना को अच्छे ढंग से पढ़ लें और स्वयं को सूचना प्राप्त करने वाले प्रश्नों से अच्छी तरह अवगत करा लें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):
गृह कलीसिया निरीक्षक को खड़े हाने के लिए कहें। उनसे पूछें,"एक अगुवे होने के नाते, क्या आपके अन्दर अपनी गृह कलीसिया के लिए उत्तरदायित्व की भावना है?" इस प्रशिक्षण के दौरान तो हम बस गृह कलीसिया के आदर्श को दिखा रहे थे, परन्तु आप जो निरीक्षक हैं आपके ऊपर उस समूह का एक बड़ा उत्तरदायित्व है, जिस समूह का निरीक्षण आपने इस सप्ताह किया। अतः अब हम आपको उस समूह के लिए उत्तरदायी बनाना चाहते हैं।"

मुख्य सत्र (50 मिनट) :
सभी गृह कलीसिया के प्राचीन / पास्टर / निरीक्षक को कमरे के सामने भाग में कुर्सियों पर बैठने को कहें।

कहें: "हम सभी परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं। वह हमें छोटी भेड़ देगा जिसकी रखवाली हमें करनी है। वह चाहता है कि हम उन भेड़ों को पालें, उनकी देखरेख करें, और उन्हें प्रभु में बढ़ाएं। हमने इन अगुवों को यहॉ सामने आने को कहा ताकि हम प्रत्येक के ऊपर अगुवे हाने के कारण जो दायित्व है उसे हमें पुनः स्मरण करें। परमेश्वर अपने लोगों की सेवा के लिए अगुवों को नियुक्त करता है।"

निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें, प्रत्येक जन को उत्तर देने का अवसर देने के बाद ही अगले प्रश्न पर जाएं:

1. "क्या आपकी गृह कलीसिया बाईबल अध्ययन और आराधना के लिए प्रतिदिन मिलती है? क्या आपने दिए गए परिच्छेद का अध्ययन किया? क्या आपने अध्ययन

के लिए उस भाग लेने वाले बाईबल अध्ययन प्रणाली का उपयोग किया जिसे आपने यहॉ सीखा?

2. "इस सप्ताह कलीसिया के पॉच उददेश्यों को पूरा करने के लिए आपकी कलीसिया ने किन कार्यों को किया?
3. "क्या आपकी गृह कलीसिया में इस सप्ताह दान उठाया गया? कितना जमा हुआ और आप इसे कैसे उपयोग करेगें?
4. "क्या आपकी कलीसिया के दूसरे अगुवों ने अपनी भूमिका निभाई? कलीसिया के विशेष उददेश्य के लिए, क्या डीकनों को नियुक्त करना लाभप्रद था (आराधना, सुसमाचार प्रचार, संगति इत्यादि के डीकन)"

उन्हें धन्यवाद दें और वापस बैठने को कहें।

बड़े समूह से निम्नलिखित प्रश्नों में से एक एक प्रश्न को बारी बारी से पूछें और अगले प्रश्न पर जाने से पहले सभी को उत्तर देने का अवसर दें:

1. "आप में से कितने लोगों ने पहले कभी गृह कलीसिया का अभ्यास नहीं किया था (यह आपके लिए पहला अवसर था)? क्या इसे करना आरम्भ में कठिन था? अभी आप इसके विषय में कैसा महसूस करते हैं?
2. "आप में से कितने लोगों ने पहले तो गृह कलीसिया का अभ्यास किया था परन्तु आपने पहली बार इसे व्यवस्थित किया, अगुवे चुने, और दान उठाया? क्या इससे आपके गृह कलीसिया के अनुभव में अन्तर आया? कैसे?
3. "इस सप्ताह गृह कलीसिया अभ्यास में आपने क्या नया सीखा?
4. "यहॉ से आप अपनी कलीसिया में किन बातों को लेकर जाएगें?
5. "जब आप नई कलीसिया की शुरूआत करेगें तो अब आप क्या अलग करेगें?

सारांश (5 मिनट):

पूछें: "क्या आपको ऐसा लगता है कि घर वापस जाकर आप इस सिद्धान्त को प्रयोग में ला पाएगें? आइए ऐसा करें!"

प्रार्थना के साथ समाप्त करें।

लोहे पर लोहा
बी पी आई 9–2

(3:30 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागी प्रतिपुष्टि पाने के लिए अपने 5 भाग वाले सी पी एम योजना को अपने पर्यवेक्षक या एक प्रशिक्षक के साथ बाटेगें। उनके पास अवसर होगा कि वे "लोहे पर लोहा" को देखें।

आवश्यक संसाधनः
- पोस्टर पेपर और मार्कर

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
प्रत्येक प्रतिभागी को "**सी पी एम** योजना लोहे पर लोहा" के लिए एक प्रशिक्षक के साथ कर दें।

पोस्टर पेपर पर एक चार्ट बनाएं जिसमें सी पी एम योजना आई ओ आई के लिए प्रशिक्षकों एवं प्रतिभागियों की समय सारिणी हो। उदाहरण स्वरूपः

	समयावधि (10:15–11:30)	समयावधि	समयावधि	समयावधि
निरीक्षक / प्रशिक्षक न.1	जैक एस सी	सारै एस सी	जॉन एवं जेन एस सी	पीयर आई ओ आई
निरीक्षक / प्रशिक्षक न.2	एलन एस सी	स्थानीय एस सी	स्थानीय एस सी	पीयर आई ओ आई
निरीक्षक / प्रशिक्षक न.3	स्थानीय एस सी दल	————	—————	—————
निरीक्षक / प्रशिक्षक न.4	स्थानीय एस सी दल	————	—————	—————
निरीक्षक / प्रशिक्षक न.5	सी पी एम योजना पर कार्य	जो एस सी	मैरी एस सी	पीयर आई ओ आई

"लोहे पर लोहा" निर्देश को कई पोस्टर पेपर के टुकड़ों पर लिख लें ताकि उन्हें कमरे के विभिन्न स्थानों पर लटकाया जा सके। इसे अन्य उपस्थित भाषाओं में अनुवाद करके पोस्टर पेपर पर लिखें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):

पूछें: "यहॉ कौन ऐसा है जिसने पहले "लोहे पर लोहा" में भाग लिया है? "लोहे पर लोहा" का अर्थ क्या होता है? पढ़ें नीतिवचन 27:17– *"जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।"*

कहें: "लोहे पर लोहा एक परस्पर सीखने वाली प्रक्रिया है जिसमें चार या पॉच नीति संयोजक खुले हृदय से अपनी सी पी एम योजना को तथा अपनी सफलता एवं असफलता को इसलिए उददेश्य के साथ बॉटतें हैं ताकि एक दूसरे को रचनात्मक प्रतिपुष्टि प्रदान करें और उददेश्यों को पूरा करने के लिए दर्शन को बड़ा करें।"

"लोहे पर लोहा" निर्देशों के पोस्टर की ओर इशारा करें जिन्हें कमरे में लटकाया गया हैं

मुख्य सत्र (3:30 घण्टा) :

ध्यान रखें कि सभी प्रतिभागी यह जानें कि उन्हें एक प्रशिक्षक से कब मिलना है।

उन्हें स्मरण दिलाएं कि दूसरे समय अवधि में वे अन्य प्रतिभागियों से मिलें और "लोहे पर लोहा" को उनके साथ पूरा करें।

सारांश (5 मिनट):

प्रार्थना के साथ समाप्त करें।

बी पी आई की सूचना प्राप्त करना और मूल्यांकन
बी पी आई 9–3

(1 घण्टा)

विषय और लक्ष्यः
इस सत्र में प्रतिभागियों को बाहर जाकर अपने **सी पी एम** योजनाओं पर **कार्य** करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा! **बी पी आई** प्रशिक्षण का मूल्यांकन करने का भी अवसर उन्हें प्राप्त होगा।

आवश्यक संसाधनः
- प्रत्येक प्रतिभागी के लिए प्रमाण पत्र
- इस सप्ताह के पहले के एस सी व्यक्ति का पोस्टर

प्रशिक्षक की तैयारी (सत्र आरम्भ होने से पहले इसे करना है):
पाठ को अच्छे ढंग से पढ़ें और सूचना प्राप्त करने के प्रश्नों से अवगत रहें।

प्रत्येक प्रतिभागी के लिए प्रमाणपत्र तैयार करें– ध्यान रखें कि उनके नाम के हिज्जे सही हों। प्रशिक्षकों से प्रमाणपत्र पर हस्ताक्षर करा लें।

सत्र से पहले ***एस सी*** व्यक्ति के पोस्टर को श्वेत पट पर लटका दें।

प्रवेश स्तरों को जाचें (5 मिनट):
कहें: "पिछले आठ दिनों में आपने जो कठिन परिश्रम किया, उसके लिए धन्यवाद। आपने बहुत लम्बे समय तक कार्य किया और बहुत कुछ सीखा।

"आपने इस प्रशिक्षण में जो समय दिया और परमेश्वर जो कार्य आपमें और आपके द्वारा करने जा रहा है उसके लिए अभी हम आपको मान्यता देना चाहते हैं। एस सी व्यक्ति के पोस्टर को दिखाकर कहें, क्योंकि यह आप हैं!"

एस सी भूमिका को संक्षेप में पुर्न अवलोकन करें।

पूछें: "इन कार्यों को हम क्यों करते हैं? चुटकी बजाते हुए कहें, "उनके लिए जो मर रहे हैं और उन्हें यीशु को जानना है।"

मुख्य सत्र (30 मिनट) :
कहें: "मुझे पवित्र शास्त्र से एक अन्तिम चुनौती देने दें। उपस्थित सभी भाषाओं में याकूब 1:22–25 पढ़ें।

"आज सुबह हमने इसी कार्य को किया– उठने के पश्चात हमने आईने में खुद को देखा। हमने यह देखा कि दिन के लिए तैयार होने के वास्ते हमें क्या करना है। आशा है हमने उन कार्यें को किया!

"याकूब यहॉ एक ऐसे व्यक्ति के बारे बता रहा है जो उन बातों को देखता तो है पर उसका कुछ करता नहीं।

"अभी मैं उन बातों के विषय में बात कर रहा हूँ जो हम बी पी आई में देख चुके हैं। हो सकता है कि आपने कुछ ऐसी बातों को सुना जिसके विषय में आप सोच रहें हों कि ये गलत हैं या सही। मैं उन बातों के बारे बात नहीं कर रहा। मैं उन बातों के विषय में बात कर रहा हूँ जो आपके हृदय में समा गयीं और अब आप यह कह रहे हों, "मैं वापस जाकर अपनी सेवकाई को बदल दूँगा।" यदि आपका हृदय ऐसा कह रहा है तो आप जाकर इसे करें। वापस जाकर उन बातों को नहीं करने के कारण अपनी आशिष के लिए बाधा न बनें। वापस जाकर इसे करें! **यही एक चुनौती आपके लिए है। जाएं और करें।**

"अब, हम आपके कठिन परिश्रम के लिए आपका आभार प्रकट करना चाहते हैं। इस बी पी आई प्रशिक्षण के लिए आपको प्रमाणपत्र देते हुए हमें गर्व हो रहा है।"

सभी प्रतिभागियों को सामने बुलाकर उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान करें।

प्रत्येक प्रशिक्षक को उनकी सेवा के लिए धन्यवाद दें। अनुवादकों को भी धन्यवाद दें।

सारांश (5 मिनट):

कहें: "हम निरन्तर यह सुनना चाहते हैं परमेश्वर आपकी सेवा को किस प्रकार आशीषित कर रहा है। यदि यह बी पी आई आपकी सेवा में आपको आशीष दिया तो हम समझेगें कि आपके आशीष के सहभागी हम भी है।"

हरेक को खड़ा होने को कहें और प्रार्थना के साथ समाप्त करें।

अध्याय– 1 पश्चाताप और विश्वास

सच्चाई :– जब हम यीशु को ग्रहण करते हैं तो हमे अपने पापों से मुड़कर ठीक उसी रीति से जीना है जैसा मसीहा हमसे चाहते हैं।
वचन :– लूका 19:1–10
याद करना :– युहन्ना 1:12
पढ़िये लूका:– 19:1–10

1. जक्कई क्या कार्य करता था? आप के अनुसार लोग उसके विषय में क्या सोचते होंगें? (वचन 2)

_____

_____

2. वह यीशु को क्यों नहीं देख सका? (वचन 3)

_____

_____

3. यीशु को देखने के लिये उसने क्या किया?

_____

_____

4. यीशु ने जक्कई को पेड़ पर देखकर उसने क्या कहा? (वचन 5)

_____

_____

5. जक्कई ने यीशु के आमंत्रण पर क्या प्रतिक्रिया दिखाई? (वचन 6)

_____

_____

6. लोगों ने क्या प्रतिक्रिया दिखाई जब यीशु जक्कई के घर क्यों गया? (वचन 7)

_____

_____

7. जक्कई ने यीशु को क्या कहा कि वे क्या करने जा रहा हैं?

_____

_____

8. जब जक्कई ने वो बात कही तो यीशु ने जक्कई के विषय मे क्या कहा?
(वचन 9–10)

_____

_____

9. हमने इस कहानी में सीखा कि जब कोई यीशु मसीह को अपने जीवन में ग्रहण कर लेता है तो उसके जीवन में बदलाव कहा जाता है,। वह अपने पुराने जीवन और व्यवहारो को छोड कर, जो परमेश्वर को प्रसन्न है, उस प्रकार का जीवन जीने लगते है जैसा यीशु हमसे कहता है।

याद करने का पद :– ''परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हे परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया।'' युहन्ना 1:12

आज्ञा पालन :– क्या आप के जीवन में कोई ऐसी बात है जिसको बदलने में यीशु आपकी सहायता करना चाहता है। इस सप्ताह गलातियो कि पत्री 5:19–26 पढिये और परमेश्वर से कहे कि वो बाते.जिन्हे मेरे जीवन मे बदलने की जरूरत है दिखा दे।

गहराई से अध्ययन :– अध्याय 1(अ) उद्धार की निश्चियतता

जब आप ने परमेश्वर के राज्य में नया जन्म, पाया, तब आप को उसकी सारी (प्रतिज्ञाऐं) मिल गई है।

आईये देखें हम कैसे यीशु के द्वारा अनन्त जीवन पाते हैं।

1. पाप का परिणाम क्या है? (यशायाह 59:2)

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

2. जब लोग अपनी रीति से या कार्य के द्वारा परमेश्वर के पास आने की कोशिश करते है तो वो असफल क्यो हो जाते है? (इफिसियो 2:8–9)

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

3. परमेश्वर हमें स्वयं पास कैसे लाता है? (1पत. 3:18)

———————————————————————————————————————

——————————————————————————

उद्धार का मार्ग

4. यीशु का मुक्ति कार्य +आपका विश्वास +आपका पश्चाताप = आपका उद्धार
   यीशु की सलीब + हदय का विश्वास +पापों के मन फिराना = उद्धार,

क्या परमेश्वर ने वो कार्य किया है जो उद्धार के लिये आवश्यक था?(यहुन्ना 3:16)
————जी हॉ —————जी नही

क्या आपने वो किया जो आपको करना है? ————जी हॉ —————जी नही

(विश्वास में भरोसा कीजिए और उद्धार का मुफ्त वरदान पाईए)
यदि आपने विश्वास किया है तो आप बचा लिए गये है।
(रोमियो 10:9–10) (प्रेरितों के काम 16:31)

5. रूकिये! क्या आप निश्चित है कि आप बचा लिये गये है ? यदि अभी आपकी मृत्यु होती है तो क्या आप विश्वास करते हैं कि आप यीशु के साथ स्वर्ग जायेगे।
   —————————जी हाँ ——————————जी नहीं
6. यीशु ने उनसे क्या वायदा किया है जो उसके पीछे चलते हैं ?(युहन्ना 10:28)

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

7. अनन्त जीवन का मतलब सिर्फ यह नहीं कि आप हमेशा जिन्दा रहेंगे। लेकिन यह कि एक नया पवित्र, धार्मिक और सामर्थी जीवन अभी से हमेशा तक जी पायेंगे । हम अनन्तकाल के लिए परमेश्वर की आशीष प्राप्त करेंगे।

आपकी (प्रतिक्रिया)
क्या आप जानते हैं कि आप बचा लिये गये हैं? ———————जी हाँ—————————जी नहीं
क्या आप जानते हैं आपने अनन्त जीवन पा लिया है? ——————— हाँ—————नहीं

निष्कर्ष :—
———मैं बचा लिया गया ——— मै बचाया नहीं गया ———मै अभी भी नहीं जानता

यदि कोई मसीह मे है तो वह ——————————————————पुरानी ——————————————
देखो सब बाते नई हो गईं हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)

- बचाने गये लोग बदले जायेंगे— क्या आपने निम्न बदलावों का अनुभव किया है?
- क्या आपने अपने अन्दर एक नयी आन्तरिक शांति का अनुभव किया है ?
- क्या आपके पास ऐसी शांति है जो आपके पापों के क्षमा हो जाने से होती है ?
- क्या पाप के विषय में नई जागरूकता आपके जीवन में आयी है?
- क्या आप पाप को हराने की एक नयी क्षमता को समझ सकते हैं ?
- क्या आप परमेश्वर के प्रेम का महसूस करते हैं ?
- क्या आपके मन में बाईबल पढ़ने की इच्छा है ?
- क्या आपमे दूसरों की चिन्ता करने वाला एक नया हृदय है?

यदि आप दुबारा पाप करते हैं, क्या तब भी आप बचे हुए हैं?(1 युहन्ना 1:9)
——
——

कृपया अत्यन्त आनन्द के साथ अपने नये जन्म के प्रमाण —पत्र को भरिये ।

————————————महीना ———————————— तारीख———————————————— वर्ष
मैने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप मे ग्रहण किया। उसने मेरे पापों को क्षमा किया, मेरा प्रभु बना और मेरे जीवन पर अपना नियत्रंण बनाया, अब मै परमेश्वर की सन्तान बन चूका हूँ , और एक नयी सृष्टि में हूँ। मैंने एक नये जीवन की शुरूआत की है।

हस्ताक्षर

याद करने योग्य पद :—। यहुन्ना 5:12
'जिसके पास पुत्र है , उसके पास जीवन है जिसके पास पुत्र नहीं उसके पास जीवन नहीं।'

आज्ञापालन :— जब आपने अपने जीवन में इस महान उद्धार को पाया तब आपका जीवन आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण हो गया है तो जो कार्य सबसे पहले करना है वह यह है कि

आप इस सुसमाचार को अपने आस–पास के पांच (5) लोगों में बांटें । आपने जो कुछ भी आज सुना और पढा है, लोगों को बताएं। आने वाले सप्ताहों मे उन पांच लोगों को ,जो भी अध्याय आपने सीखे हैं, सीखाएं।

यह परमेश्वर का महान समाचार और परमेश्वर की इच्छा है कि वह यह इच्छा रखता है की सभी उद्धार पायें ।

अध्याय 2 – प्रार्थना

सच्चाई : हमें प्रतिदिन प्रार्थना में परमेश्वर से बातें करनी चाहिये
वचन : मत्ती 6.5–8, 9–13 (प्रभु की प्रार्थना)
याद करना : मत्ती 7:7
भण्डारीपन : क्या कोई अपनी या प्रभु यीशु की कहानी को दूसरों के साथ बांट सका? कृपया अपने अनुभव को समूह के साथ बाँटें।

हम अपनी जरूरतों को उसके साथ बांटते हुए उससे बात करने में समय बिताऐं। एक बहुत बड़ी सुविधा जो एक मसीही अनुभव कर सकता है वे है कि वह ब्रहमाण्ड के सृष्टीकर्ता से बात कर सकता है। कल्पना कीजिये, एक सच्चा परमेश्वर जिसने, तारों, अंतरिक्ष के अन्य ग्रहों की रचना की, वो आपसे प्रतिदिन बातें करना चाहता है। ठीक वैसे ही, जैसे आप अपने आस–पास लोगों से बात करते है, जिस प्रकार से आप परिवार व दोस्तों से बात करते है ठीक उसी प्रकार आप परमेश्वर से भी वार्तालाप कर सकते है।

<u>पढ़िये मत्ती 6:5–8</u>

1. प्रभु यीशु उनके विषय में क्या कहते हैं जो सिर्फ लोगों को सुनाने के लिये सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करते हैं ?
   _____
   _____
2. गुप्त में प्रार्थना करने के विषय में यीशु क्या कहते हैं ?
   _____
   _____
3. क्या आप सोचते है कि यीशु का तात्पर्य यह है कि हमें अकेले में ही प्रार्थना करना चाहिये और दूसरों के साथ नहीं ? क्यों, ? और क्यों नही ?
   _____
   _____
4. मत्ती 6:7 में वह कौनसी दूसरी बात है, जिसे यीशु ने हमें प्रार्थना में दूर रखने को कहा?
   _____
   _____
5. हम 8 वें वचन में पिता परमेश्वर के विषय में क्या सीखते हैं ?
   _____
   _____

<u>पढ़िये मत्ती 6:9–15</u> – यीशु ने अपने चेलों को यह प्रार्थना सिखाई। आप भी इसको सीधे इस्तेमाल कर सकते हैं और आप इसको एक नमूने के तौर पर, कि प्रार्थना कैसे करना है। इसमें हम उन बातों के बारे में सिखाते है जिसके लिए हमें प्रार्थना करनी है।

(1) पहली बात कौनसी है जिसके लिए यीशु 9 वें वचन में प्रार्थना करता है ?
   _____
   _____

(2) इसका मतलब यह है कि यीशु प्रार्थना करते है कि परमेश्वर का नाम सब के द्वारा ऊँचे पर उठाया जाए। और ऐसे कौनसे तरीके है जिनके द्वारा आप इस प्रकार की प्रार्थना कर सकते है? आप इस प्रकार की प्रार्थना कर सकते है। आप उनका अभी अभ्यास करे।
   _____
   _____

(3) मत्ती 6:10 में यीशु क्या प्रार्थना करते है ?
   _____
   _____

(4) इसका मतलब यह है कि यीशु प्रार्थना करते है कि परमेश्वर का राज्य सारे जगत में आए और प्रत्येक जन जैसा वो चाहता है उसके अनुरूप जिए। ऐसे ओर कौनसी बाते है, जिन्ह आप प्रार्थना मे कह सकते है? उन प्रार्थनाओं का अभ्यास कीजिए।
   _____
   _____

(5) 11 वें वचन में प्रभु हमसे क्या मांगने के लिए कहते हैं ?

———
———————————————

(6) हमारी प्रतिदिन की और दैनिक ऐसी कौनसी आवश्यकता है जिन्हे हम परमेश्वर से मांग सकते है?
———
———————————————

(7) यदि हम चाहते है कि परमेश्वर हमें माफ करें तो उसके लिए यीशु हमसे क्या कहते है कि हम दूसरों के लिए करें ?
———
———————————————

(8) 13 वें वचन में ऐसी कौनसी दो बाते है, जिसके लिए यीशु हमसे प्रार्थना करने के लिए कहते है ?
1. ——————————————————————————
2. ——————————————————————————

प्रभु की प्रार्थना में हम कई प्रकार की प्रार्थनाओं को देख सकते है।

- उनके लिए प्रार्थना करना जो प्रभु को नहीं जानते है कि वो प्रभु को ग्रहण करें।
- हमारी दैनिक आवश्यकताओं के लिए, कि प्रभु उनको पूरा करें।
- पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करें।
- सामर्थ्य के लिए प्रार्थना करे कि हम पाप न करें।

याद करे – मत्ती 7:7 याकूब 4:2–3

''मांगो तो तुम्हें दिया जायेगा, ढूंढो, तो तुम पाओगे, खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा'' (मत्ती 7:7)

तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि मांगते नहीं ''तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग विलास में उड़ा दो। (याकूब 4:2–3)

आज्ञा पालन –

एक ऐसा स्थान, समय निर्धारित करिये जहाँ पर बैठकर आप परमेश्वर से बातचीत कर सकें। इस पूरे हफ्ते को प्रभु से बात करने में व्यतीत कीजिए। इस हफ्ते प्रतिदिन परमेश्वर से बात करने में समय बिताऐं।

गहराई में अध्ययन : अभ्यास–2 (अ) प्रार्थना

प्रार्थना का अर्थ है परमेश्वर से ''बात करना''। जब आप प्रार्थना करते है तब खुले और गम्भीर रहे जैसे कि यीशु था, और जैसा अपने चेलो को प्रार्थना मे सिखाया।

हमें प्रार्थना करने की जरूरत क्यों है ?

यह परमेश्वर की आज्ञा है।
''आपको ——————प्रार्थना करनी चाहिए'' (लूका 18:1)
''—————————— आत्मा में प्रार्थना करें (इफिसियो 6:18)
यह आपकी जरूरत है :–
आप अपनी सारी चिन्ता उस पर ड़ाल सकते है। (1 पतरस 5:7)
———
———————————————

परमेश्वर के अगुवाई को खोज :
''मुझसे प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी–बड़ी और कठिन बातें बताऊँगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता'' (यिर्मयाह 33:3)

आवश्यकता के समय में दया और अनुग्रह पाये (इब्रानियों 4:16)
———
———————————————

वो क्या चीजें है जिनके लिए आपको प्रार्थना करने की आवश्यकता है ?

''किसी भी बात की चिन्ता मत करो : परन्तु प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शांति, जो समझ से बिल्कुल परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेंगी।''(फिलिप्पियो 4: 6–7)

प्रार्थना की विषय–वस्तु

वचन और प्रार्थना के सही उल्लेख के मध्य एक रेखा खीचें।

विषय–वस्तु	वचन
1. स्तुति–परमेश्वर के स्वभाव की प्रशंसा	भजन 135 : 3
2. धन्यवाद – परमेश्वर के अनुग्रह के लिए	1 थिसि 5 : 18
3. निवेदन – प्रभु से मांगना हमारी अपनी आवश्यकताओं के लिए	फिलिप्पयों 4 : 6 – 7
4. मध्यस्ता – दूसरों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रभु से मांगना	1 तिमों 2 : 1
5. अंगीकार – प्रभु से अपने पापों की क्षमा मांगना।	1 यहुन्ना 1 : 9

प्रार्थनाओं के तीन उत्तर :

1. हाँ (हरी बत्ती) आप आगे बढ़ सकते है।
2. नहीं (लाल बत्ती) आप आगे नहीं बढ़ सकते।
3. प्रतिक्षा करें (पीली बत्ती) प्रभु ने प्रतिक्रिया नहीं दिखाई, धीरज धरें।

नये दृष्टिकोण जो हमें प्रार्थनाओं के परिणामस्वरूप मिलते है ।

	दृष्टिकोण	वचन
1.	विश्वास करें।	पर विश्वास से मांगे और कुछ सन्देह न करे (याकूब 1:6)
2.	सही उद्देश्य	''तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि मांगते नहीं। तुम मांगते हो ओर पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से मांगते है, ताकि अपने भोग विलास में उड़ा दो।'' (याकूब 4 : 2 – 3)
3.	पापों का अंगीकार	यदि मैं मन में अनर्थ बात सोचता तो प्रभु मेरी न सुनता (भजन 66:18)
4.	परमेश्वर की इच्छानुसार मांगना	हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मॉगते है तो हमारी है। (1.यहुन्ना 5:14)
5.	विश्वास योग्य हृदय से मांगना	''नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए'' (लूका 18 : 1)

प्रभावशाली प्रार्थना के लिए कुछ संकेत :

1. लोगों को चाहिए कि ''यीशु के नाम से'' प्रार्थना करें (यहुन्ना 14 : 13) क्योंकि यीशु के द्वारा ही व्यक्ति परमेश्वर के सम्मुख पहुँच सकता है। (यहुन्ना 14:6)
2. हमारी प्रार्थना को 'आमीन' (तथास्तु) कहकर खत्म करें, जिसका मतलब है एक सच्चे हृदय से प्रार्थना करना।
3. प्रार्थना के कई भाग है : स्तुति, धन्यवाद, आवेदन, निवेदन, मध्यस्तता और अंगीकार।
4. प्रार्थना एक उचित और समझ में आने लायक भाषा में कीजिए।
5. प्रार्थना के लिए समय और स्थान की कोई बंदिश नहीं होती। कोई भी व्यक्ति दिन के किसी भी समय और किसी भी स्थान पर प्रार्थना कर सकता है।

अध्याय : 3 परमेश्वर का वचन

सच्चाई : बाईबल को याद करना और समझना हमें परमेश्वर को समझने और उसकी आज्ञा मानने में मदद करता है।
वचन : लूका 4:1–13 (यीशु की परीक्षा)
याद करना : भजन 119 : 11
भण्डारीपन : क्या आपने अपनी पिछली मुलाकात के बाद प्रार्थना में समय बिता सके, क्या आपने अपनी कहानी को किसी के साथ बांटा ?

परमेश्वर ने हमें एक पुस्तक उपलब्ध कराई है जिसका नाम बाईबल है, जो हमें उसके विषय में बताती है। केवल यही पुस्तक हमें परमेश्वर की सच्चाई, और हम कैसे उसको समझ सकते हैं और उसकी आज्ञा मान सकते हैं, इस विषय में बताती है। हमें इसको जरूर से पढ़ना चाहिये और याद करना चाहिये ताकि हम परमेश्वर की सच्चाई को जान सकें और वैसा जीवन जी सकें।

पढ़िये लूका 4:1–13

1. कौन प्रभु यीशु को जंगल में ले गया और क्यों ? (वचन 1)
   ____
   ____

2. यीशु क्यों भूखा था ?
   ____
   ____

3. कौन सी पहली बात थी जो शैतान ने यीशु से करवानी चाही? (वचन 3)
   ____
   ____

4. यीशु ने उसका क्या उत्तर दिया और उसके लिये उसने क्या इस्तेमाल किया ? (वचन 4)
   ____
   ____

5. दूसरी परीक्षा क्या थी ? (वचन 5 से 7)
   ____
   ____

6. यीशु ने उस (शैतान) को कैसे उत्तर दिया, उसने किस अधिकार का इस्तेमाल किया ?
   ____
   ____

7. शैतान ने यीशु की कौनसी तीसरी परीक्षा ली : शैतान ने यीशु की परीक्षा के लिये किस चाल का प्रयोग किया ? (वचन 9–11)
   ____
   ____

8. यीशु ने शैतान को इस बार क्या उत्तर दिया ?
   ____
   ____

9. जब यीशु ने तीसरी बार वचन का इस्तेमाल किया और शैतान को कहा यहाँ से चला जा तब क्या हुआ ?
   ____
   ____

10. कहानी की समीक्षा : जब शैतान ने यीशु की परीक्षा लेनी चाही तब यीशु ने उत्तर के लिये किसका प्रयोग किया ?
    ____
    ____

11. शैतान किस वस्तु का इस्तेमाल करता है कि हम परमेश्वर की आज्ञा का उल्लघंन करें?
    ____
    ____

12. आप क्या सोचते है कि यीशु किस तरह इस बात को जानते थे कि शैतान जो कुछ परीक्षा के द्वारा उनसे करवाना चाहता था वो सही था या गलत ?
    ____
    ____

13. हम कैसे जान सकते है कि जिस चीज की हम इच्छा करते हैं वो सही है या गलत ?
    ____
    ____

14. वह कौनसा तरीका है, जो हम इस घटना में यीशु से सीखते हैं, जिसके द्वारा हम परीक्षाओं का सामना कर सकते हैं और वो कर सकते हैं जो सही है।
    ____
    ____

15. हम बाईबिल को अच्छी रीति से कैसे जान सकते हैं, प्रतिदिन **पढ़ने से**, **याद करने से, सीखाने के द्वारा, सुनने के द्वारा**, जो दूसरे लोग इसके विषय में बात करते हैं।
——
————————————————————

शांत समय व्यतीत करते हुए :

– परमेश्वर से मांगना, कि वो आये और हमसे बात करें, जब हम उस के वचन को पढ़ते हैं।
– परमेश्वर से अपने पापों का अंगीकार करें।
– धर्मशास्त्र का एक लेखांश पढ़ें या कई वचन कई बार पढ़ें।
– सोचे की यह वचन किस तरह आपसे सम्बन्ध रखते हैं।
– परमेश्वर से उन वचनों के विषय में बात करना जो अभी–अभी आपने उन तत्वों को लिखे जो परमेश्वर आपसे कहता है – उदाहरण के लिए –
  क्या कोई पाप है अंगीकार करने के लिए
  कोई वायदा विश्वास करने के लिए
  कोई उदाहरण अनुसरण करने योग्य
– कोई आज्ञा मानने के लिए
– कोई सच्चाई जीवन में लागू करने के लिए

याद करना – भजन 119 : 11, 105
''मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है कि तेरे विरूद्व पाप ना करूं''। तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है।

पालन करें – जिस प्रकार आप प्रतिदिन प्रार्थना में समय बिताते है इनको माने : वैसे ही बाईबल पढ़ने में, याद करने में और उसके विषय में सोचने में हर दिन समय बिताये।

गहराई से खोदना : अध्याय 3(अ) – प्रतिदिन की संगति परमेश्वर के साथ।

किसी व्यक्ति को जानने के लिए उसके साथ लगातार सम्पर्क बनाए रखना आवश्यक है। यह प्रकिया परमेश्वर के लिए भी है, यदि आप परमेश्वर के साथ एक घनिष्ठ सम्बन्ध बनाना चाहते हैं तो आपको उसके लिए प्रतिदिन अलग से समय निकलाने की जरूरत है।

इस संगति में क्या होता है :–

1. परमेश्वर से प्रार्थना के द्वारा बात करना।
2. बाईबल पढ़ने के द्वारा परमेश्वर को हमसे बात करने में मदद करना।

1. परमेश्वर से संगति का कारण –
   (1) परमेश्वर की आराधना – परमेश्वर हमारा स्वागत करता है।
   (2) परमेश्वर से संगति।
   (3) परमेश्वर द्वारा चलाया जाना– मै. परमेश्वर का अपने जीवन में स्वागत करता हूँ।
2. भजनकार का परमेश्वर के प्रति क्या दृष्टिकोण है ?
   भजन 42 : 1 – 2 —————कब———————
   भजन 119 : 147 – 148 ———————————
3. बाईबल में से उदाहरण : चार मनुष्य जिनका परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था।

वचन	चरित्र (पात्र)	समय	स्थान	गतिविधियाँ
उत्पत्ति 19:27	अब्राहम	सुबह		परमेश्वर से मिला
भजन 5:3	दाउद			
दानियेल 6:10				
मरकूस				

उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार परमेश्वर के साथ समय बिताने के सम्बन्ध में आप अपने जीवन में क्या बातें लागू कर सकते हैं ?
————————————————————————————
————————————————————————————
————————————————————————————
————————————————————————————

आपके आत्मिक जीवन के लिए कुछ सुझाव व सहायक बिन्दु :–

1. बाईबलः वचनों को पढ़ना, लिखना और पढ़ने के द्वारा आपने क्या सीखा, उन वचनों पर मनन करना। याद रखिये कि जो बाईबल में लिखा है उसे आप बदल नहीं सकते। लेकिन आप यह समझ सकते हैं, कि ये कैसे आपके जीवन पर प्रभाव ड़ालती है, अतः इसका पालन करें।

2. कलम और अभ्यास पुस्तिकाः अपने प्रार्थना के समय में उन विचारों को लिखें जो आपको लगता है कि परमेश्वर आपसे कह रहा है ''और अपने पूरे रास्ते परमेश्वर को स्मरण करना कि वो तुझे कैसे चलाता रहा।'' (व्यवस्थाविवरण 8:2)।

3. स्थान : एक ऐसा स्थान चुनें जहाँ पर आप परमेश्वर से बिना किसी परेशानी के मिल सके।

4. समय : एक ऐसा उचित समय चुनना जिस वक्त आप लगातार प्रतिदिन परमेश्वर से मिल सकें।

5. योजना : बाईबल की एक पुस्तक को चुनें और उसको अपनी सहूलियत के अनुसार पढ़ें और उस पर मनन करें और उस वचन के लिए प्रार्थना करना।

तैयारी : मेरी आंखे खोल दें, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातों को देख सकूं। भजन 119 : 18

- अपने जरूरत की वस्तुओं को इकट्ठा करें और एक शांत स्थान खोजें।
- अपने दिलों को तैयार करें, परमेश्वर का इन्तजार करें।
- अपने पापों को अंगीकार करें।

परमेश्वर को खोजें:

- कुछ अयात या वचन का हिस्सा पढ़े।
- उस पर मनन करना कि वो कैसे आपके जीवन से सम्बन्ध रखता है।
- जो वचन आपने पढ़ा है उसके विषय में परमेश्वर से बात करें।
- जो भी बातें ऊपर लिखी है उन विषयों के लिए प्रार्थना करें।

अनवरत रहें

- जो भी बातें परमेश्वर प्रकट करता है उसे माने।
- जो भी आपने सीखा है उसे दूसरो को बांटना।

अपने प्रार्थना के समय में लगातार विश्वास योग्य बने रहे। इस समय को अपने प्रतिदिन के जीवन का हिस्सा बनाऐ।

1. यह आपका निर्णय है कि आप प्रतिदिन परमेश्वर से मिलें। यदि आप प्रतिदिन परमेश्वर से मिलने का समय रखते तो आप पाएंगे कि आप अपने आत्मिक जीवन में बढ़ रहे है।
2. जब यीशु पृथ्वी पर था तब उसने कहा ''पहले तुम परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो। (मत्ती 6:33) वह हर बात जिससे आपका इस संसार में सामना होता है उनमें ऐसा कुछ भी नहीं जिसे आप परमेश्वर के सम्मुख नहीं ले जा सकते।
3. बाईबल का एक उद्देश्य यह कि आप परमेश्वर के साथ संगति रखे। आपका उद्देश्य परमेश्वर आराधना और स्तुति होना चाहिए और उसके द्वारा परमेश्वर आपको आशिष देगा।

क्या आप अपना जीवन, प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए देने को तैयार है।

मेरा परमेश्वर के साथ प्रतिदिन संगति करने का प्रतिज्ञा–पत्र।

——————————
हस्ताक्षर

दिनांक : ————————————

समय : ————————————

स्थान : ————————————

योजना : ————————————

अध्याय : 4 कलीसिया

सच्चाई : प्रभु यीशु के चेले इकट्ठे होते है और वे कलीसिया कहलाते है
वचन : प्रेरित 2: 37–47
याद करे : इब्रानियो 10:24–25
भण्डारीपन : क्या आपने प्रभु से प्रतिदिन की उपासना की? क्या आप अपने प्रार्थना जीवन में नियमित है? क्या आप सतर्कता के साथ इन अवसरों की ताक में हैं कि यीशु मसीह की घटना उन लोगों को सुना सकें जो आपके प्रभाव में दायरे में हैं।

जब आप एक मसीही बनते हैं तो आप परमेश्वर के परिवार के एक सदस्य बन गये हैं। परमेश्वर आपका स्वर्गीय पिता है, और सभी मसीही उस परिवार में भाई–बहन के समान हैं बाईबल इस नये परिवार को ''कलिसिया'' कहती है। कलिसिया कोई आराधना करने की इमारत या जगह नहीं है परन्तु वह तो विश्वासियों की एक देह है यदि **हम मसीह** में है तो हम **कलिसिय**ा है।

बाईबल का यह गंद्याश जिसका हम अध्ययन करने जा रहे है उस समय का है जब यीशु मसीह मुर्दों से जी उठ चुका है और स्वर्ग जा चुका है। यह बताता है कि एक बडी संख्या में लोगों वचन को सुना और माना अब कैसे वो एक कलीसिया बन गये।

पढ़िये प्रेरितों के काम 2:37–47:–

1. जब पतरस ने भीड़ कों यीशु के विषय में संदेश सुनाया तब क्या हुआ? (वचन 37)
   _____
   _____

2. 38 वें वचन में पतरस ने उन्हें दो कार्य करने को कहे थे। वे क्या थे?
   (1) _____
   (2) _____

3. यदि वे कार्य करते हैं जो उसने करने को कहा तो क्या परिणाम होता ?
   _____
   _____

4. जिन लोगों ने पतरस के वचन को प्राप्त किया उन्होनें क्या किया (वचन 41)?
   _____
   _____

5. एक दिन में कितने लोगों ने विश्वास किया (वचन 41)?
   _____
   _____

6. क्या आप ऐसा सोचते हैं कि प्रभु यहाँ ऐसा करना चाहता है?
   _____
   _____

7. वो चार बातें क्या थीं जो विश्वासी निरन्तर करते थे (वचन42)?
   _____
   _____
   (अ) _____
   (ब) _____.
   (स) _____..
   (द) _____

निम्नलिखित चार बाते हमें कलिसिया के होने के चार कारण दर्शाती हैं

(अ) **शिक्षा** :– यह हमें परमेश्वर के विषय में सिखाती है और जो यीशु ने हमसे कहा व करना सिखाती है।
(ब) **संगति**:– यह हमें दूसरे विश्वासियों के साथ रहना और मसीह मे बढोतरी में एक दूसरे की मदद करना सिखानी है।
(स) **रोटी तोडना**:– केवल साथ में खाना ही नहीं बल्कि प्रभु भोज साथ लेने के विषय में बताती हैं। (देखें लूका 22:14–20) एक विशेष समय जब हम उसकी मृत्यु को याद करते हैं।
(द) **प्रार्थना** :– प्रार्थना में हम दूसरे अनुयायीयों के साथ मिलकर बातें करते हैं।

8. जब किसी को कोई जरूरत होती तो वे जो विश्वास करते हैं, क्या करते थे? (वचन45)
   _____
   _____

9. क्या लोग इस तरह इक्कठा होने में खुश थे या यह उनके लिए मुश्किल था?(वचन 46)
   _____
   _____

10. प्रायः कब–कब लोग विश्वास कर, उध्दार पाते थे? (वचन 47)
––

11. क्या आप विश्वास करते हैं आप के कस्बे में प्रतिदिन लोग बचाये जा सकते हैं?
––

इन वचनों के जरिये हम कलिसिया के विषय में बहुत कुछ सीखते हैं।

(1) जो लोग यीशु पर विश्वास करते हैं और उसके पीछे हो लेते हैं वो कलिसिया के हिस्से हैं।

(2) प्रभु यीशु के अनुयायी बपतिस्मा लेते थे।
क्या आपने बपतिस्मा लिया हैं? ....जी हाँ या .... जीनहीं यदि आपने बपतिस्मा नहीं लिया तो आप कब बप्तिस्मा लेंगे......................

(3) यीशु के अनुयायी
सदूसरे विश्वासियों के साथ नियमित बाईबल का अध्ययन करते हैं
सदूसरे विश्वासियों को प्रोत्साहित करने के लिए उनके साथ समय बिताते हैं।
सप्रभु भोज इकट्ठा लेते हैं।
ससाथ मिलकर प्रार्थना करते हैं।
सजब किसी की आवश्यकता हो तो एक दूसरे की मदद करते हैं।
सएक दूसरे को समय व धन देकर मदद करते हैं।

याद करें इब्रानियों:– 10:24–25
'' और प्रेम, और भले कामों के लिए एक दूसरे की चिन्ता किया करें और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोडे, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहे और ज्यों–ज्यों दिन को निकट आते देखों, त्यों–त्यों और भी अधिक यह किया करो।

मानें और करें:–
1. यदि आपने बपतिस्मा नहीं लिया है तो प्रभु कि आज्ञा माने और बपतिस्मा लें।
2. वायदा करें कि कलिसिया की तरह नियमित रूप से इकट्ठा होने रहेगें ताकि मसीह में अपने भाई–बहनों के साथ रहे
3. कलिसिया की तरह प्रभु भोज मिल बाँटकर लेते रहे।

गहराई से अध्ययन :– अध्याय 4 अ कलिसिया संगति

<u>बाईबल में मसीही और मसीह के बीच में क्या सम्बंध है?</u>

(1) (रोमियो 12:5) ––
––

(2) (इफिसियो 1:23) ––
––

<u>कलिसिया के पाँच प्रकार के कार्य है। (इफि.5:22–23)</u>

1. कलिसिया के कार्यआराधनाः– में उसकी स्तुति गाओ, ''भजन 149:1	आपकी आवश्यकता आराधना करना
2. संगति :– और प्रेम और भले कामों में उकसाने के लिए हम एक दूसरे की चिन्ता किया करें। इब्रानियों 10:24	बाँटना
3. शिक्षाः– ''और उन्हे सब बातें जो तुम्हे सिखाई है मानना सिखाओ'' मत्ती 28:20	सीखना
4. अनुशासन :– जिससे पवित्र लोग सिद्व हो जाए और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए ''इफिसियों'' 4:12 ''और जो बातें तूनें बहुत से गवाहों के समाने मुझ से सुनी है उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौपं दे जो औरो को भी सिखाने के योग्य हों।'' 2 तिमुमिसुम 2:2	सेवा कार्य
5. पवित्रात्मा की शक्तिः– ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे और यरूशलेम और सारे यहूदियों और समारिया में, और समारिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे'' ''प्रेरित'' 1:8	सुसमाचार

क्या आप समझने है कि अगर मसीही कलिसिया नहीं जाते, तो वे, सही है?
——————— जी हाँ ——————— जी नहीं ——————— निर्भर करता है
क्या आपको कलिसिया में जाने में कठिनाई है? ———————————————————— आपको कलिसिया में क्यों जाना चाहिए

(1) कलिसिया के उपरोक्त विभिन्न कार्यो को देखें।

(2) यह परमेश्वर की आज्ञा है।

''सावधान रहो, और उस कहने वाले से मुँह ना फेरो क्योंकि वे लोग जब पृथ्वी पर के चेतावनी देने वाले से मुंह मोड़कर न बच सके, तो हम स्वर्ग पर से चेतावनी करने वाले से मुंह मोडकर क्यों कर बच सकेंगे'' (इब्रानियों 12: 25)।

(3) बाईबल कि सच्चाई के रास्ते से भटकने से बचिए।

(4) कलिसिया में आपकी सहायता के लिए परिपक्व विश्वासी होते हैं।

सारे विश्वासी मिलकर मसीह की देह बनाते हैं हम में से कुछ हाथ हैं, कुछ पांव हैं, कुछ पेट या मस्तिष्क या जीभ हैं हम **शरीर** के रूप में परमेश्वर के कार्यो या इच्छा को संसार में करते हैं।

कलिसिया के लिए हमारे कुछ कर्त्तव्य और अधिकार

1. बपतिस्मा– वह धार्मिकता जिसे हमें पूरा करना है

(अ) यीशु ने बपतिस्मा को ''धार्मिकता'' कहा है (मत्ती 13:15)

(ब) 'बपतिस्मा' का अर्थ है जाहिर करना, गवाही देना और लोगो के सामने यह स्वीकार करना है कि हमने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया है। (रोमि 6: 3)

(स) बप्तिस्मा एक ''तस्वीर'' की तरह है यह दर्शाने के लिये कि हम उसके साथ मारे गये, गाड़े गये और साथ जी भी उठे। (रोमी 6: 4)

सो उस ..... का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ .....गये, ताकि जैसे मसीही पिता की महिमा के द्वारा .....वैसे ही हम भी ..... की सी चाल चले।

(द) बपतिस्मा का अर्थ हमारे विश्वास के निर्णय को पक्का करना है। हम पुराने मन मनुष्यत्व से छूट गये और मसीह के साथ पुनरूथान का एक नया जीवन जीतें है। (रोमि 6: 6–14)

(ई) बपतिस्मा यीशु मसीह में हमारे विश्वास की एक गवाही या प्रदर्शन है। इसमें पाप क्षमा करने की शक्ति नहीं है यह हमें बचा नहीं सकता उ(ार सिर्फ परमेश्वर के अनुग्रह से होता है। और विश्वास के द्वारा और परमेश्वर के उस अनन्त जीवन के मुफ्त दान पाने के द्वारा होता है।

2. हमें जिन बातों पर गौर करना है–प्रभु भोज

(क) यीशु ने खुद अपनी याद में, उसकी मृत्यु और हमारे पापों के लिए बहाए गए लहू के लिये यह स्थिर किया है। (मत्ती 26: 17–19, 26–30)

(ब) हम जब भी प्रभु भोज लेते है, तो यह हमें सोचने और उसके अनुग्रह के लिए प्रभु को धन्यावाद देने को स्मरण दिलाता है। वह हमारे अपराधो के कारण हमारी ही के लिए उस पर.....कि उसके खाने से हम लोग..... ..... हो जांए (यशायाह 53: 5)

(स) यह प्रभु की मृत्यु को उसके आने तक घोषित करता है प्रभु भोज स्मरण की एसी किया है जिसमें हम मसीह के जीवन और मृत्यु के विषय में मुडकर देखने और उसके दूसरे आगमन की और देखते है। (1 कुरि 11:26, युहन्ना 12:32)

(द) जब कभी हम प्रभु भोज लेते है तो यह हमारे विश्वास और हमारे कामों को जांचने में हमारी सहायता करता है। (1 कुरि 11: 23–29)

3. बलिदान जो हमें करना है– भेंट

(अ) भेंट का अर्थ है धन्यवाद जो परमेश्वर को लोग अर्पित करते हैं और इसका अर्थ परमेश्वर की अराधना करना भी हैं। इसे निम्न तरीके से विभाजित किया जा सकता है जैसेः–

मनुष्य का जीवित बलिदान, जीवन की भेंट, समय की भेंट उपहार की भेंट और धन की भेंट।

(ब) धन की भेंट विश्वासियों के लिए परमेश्वर की ओर से दिया गया एक परख या जरूरत है इसके तीन प्रकार हैं–

(1) दशमांश– यह परमेश्वर की मॉग है। जो परमेश्वर की ओर से है। वास्तव में यह दान नहीं है बल्कि हमें देना जरूरी है। (लैव्य 27:30, 31)

(मलाकी 3:8) क्या मनुष्य परमेश्वर को ————————————दे सकता है। पर देखो तुम मुझको धोखा देते हो, और तो भी पूछते हो, हमने किस बात में तुझे लूटा है? (मलाकी 3:10)————————————————————— यहोवा यों कहता है

यही है वो जो हमें देना है शत–प्रतिशत परमेश्वर का है। हमें दस में से नो भाग का प्रबंधक बनाया गया है पर दसवां हिस्सा सिर्फ परमेश्वर का है यह हमको उसे लौटाना है।

(2) उपहार की भेंट – यह एक चुना हुआ भेंट है भले दिल और दिमाग की इच्छानुसार। यह आपका व्यक्तिगत निर्णय होगा कि आप कितना भेंट देना चाहेंगे हम बिना भेंट दिए परमेश्वर की अराधना नहीं कर सकते। क्या आभारी जन परमेश्वर के सम्मुख हर समय खाली हाथ जायेंगे?

(3) प्रेम की भेंट – यह दान दूसरों को उनकी आवश्यकताओं और दूसरी उपयोग के हिसाब से दिया जाता है उपहार और प्रेम के भेंट दशमांश के स्थान पर नहीं दिया जा सकता है।

अध्याय : 5 परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता

सच्चाई : परमेश्वर अपने बच्चों की तरह उनका स्वागत करना है, जो उसके पास आते हैं।

वचन : लुका 15 : 11–24

याद करना : रोमियों 8 : 15

भण्डारीपन : क्या आपने अन्य विश्वासियों के साथ पिछले सप्ताह आराधना कि थी ? क्या आप बाईबल पढ़ने में और प्रार्थना करने में विश्वासयोग्य रहे ? इस सप्ताह क्या आपने अपनी गवाही या यीशू मसीह के सुसमाचार को औरों के साथ बांटा ?

जब हमने प्रार्थना के विषय में अध्ययन किया जब हमने सीखा वैसे यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया है – ''हे हमारे पिता तू स्वर्ग में है'' बाईबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर हमारा पिता है और वो उन सभी को अपने बच्चों के समान स्वागत करता है जो उसके पास आते हैं।

हमारी समझने में मदद के लिए यीशू ने एक कहानी बताई कि परमेश्वर हमसे कैसे प्रेम करते हैं।

पढिये लूका 15:11–24

1. छोटे पूत्र ने अपने पिता से क्या मांगा ? (वचन 12)
   _____
   _____
2. आप क्या सोचते हैं कि उसका उद्देश्य क्या था ? और उसके पिता को कैसा लगा?
   _____
   _____
3. जब उसके पिता ने अपनी सम्पति में से उसे अपना हिस्सा दे दिया तो पुत्र ने उससे क्या किया (वचन 13)
   _____
   _____
4. जब उसका पैसा खत्म हुआ तब क्या हुआ ? (वचन – 14–15)
   _____
   _____
5. वह सचमुन भूखा था और उसके पास खाना नहीं था तब उसने क्या सोचा कि वो क्या खाये ? (वचन 16)
   _____
   _____
6. 17वें वचन में पुत्र के साथ क्या हुआ। उसे क्या समझ में आया ?
   _____
   _____

7. उसने 18वें – 19वें वचन में क्या निर्णय किया (वचन 18–19)

————————————————————————————————————

————————————————————————————————————

8. जब वह दूर ही था और उसके पिता ने अपने पुत्र को देखा तो उस पिता ने अपने पुत्र के लिये क्या सोचा (वचन 20)

————————————————————————————————————

————————————————————————————————————

9. उसके पुत्र ने अपने पिता से क्या कहा और उसका व्यवहार कैसा था ? (वचन 21)

————————————————————————————————————

————————————————————————————————————

10. क्या उसके पिता ने अपने पुत्र को सुनकर वैसा ही किया जैसा उसने कहा ? ————––पिता ने क्या किया ?

————————————————————————————————————

————————————————————————————————————

11. पिता ने अपने पुत्र के लिए ऐसा कयों किया और वह 24वें वचन में इसका कारण क्या बताता है ?

————————————————————————————————————

————————————————————————————————————

12. मान लिजिये कि आप छोटे पुत्र है ंऔर आपने भी अपने पिता के साथ ऐसा किया है आप क्या सोचते है पिता आपका भी स्वागत उसी प्रकार करेंगे। आप क्या सोचते है कि आपके पिता क्या करेंगे?

————————————————————————————————————

————————————————————————————————————

13. आप क्यो सोचते हैं कि किस लिए, उसके पिता ने उसे जायदाद दी और जाने दिया ?

————————————————————————————————————

————————————————————————————————————

14. आप क्या सोचते हैं यह कहानी हमे परमेश्वर पिता के विषय में क्या सिखाती है ? इस घटना मे पुत्र ने सोचा की वह आजाद होगा जब वह अपने तरीके से जीवन व्यतीत करेगा और न की अपने पिता के शासन के अन्तर्गत। हम कभी कभार यह सोचते हैं कि हम आजाद रहेंगे जब हम अपने तरीके से जीवन व्यतीत करेंगे यद्यपि हमें सच्ची आजादी तभी मिल सकती है जब हम अपनी इच्छा से अपना जीवन पिता को देते है और हमारी अगुवाई करने देते हैं।

————————————————————————————————————

————————————————————————————————————

याद करें :– रोमियो 8 : 15–16

क्योंकि तुम्हें दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हैं अब्बा, हे पिता कहकर

पुकारते है, आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता हैं, कि हम परमेश्वर की सन्तान है।

मानें और करें :–

क्या आप पहले से ही परमेश्वर के पास आ चुके है, अपनी मर्जी से चलने के अपने आपको स्वीकार कर चुके है, और उसके सन्तान बन गये है ? यदि नहीं तो क्या आप अभी प्रार्थना करके अनन्त जीवन पाना चाहते है?

क्या आप ऐसा कुछ कर रहे है जिससे ये समझा जाए कि आप परमेश्वर के नहीं परन्तु अपने मर्जी पर चल रहे है ? इस बात को आप अंगीकार करें और हृदय में यह निर्णय ले कि आप परमेश्वर की आज्ञा मानना चाहते हे।

गहराई से सोचना :– अध्याय : 5 (अ) परमेश्वर स्वर्गीय पिता है।

यीशू ने अपने शिष्यों को सिखाया कि ''हमारा पिता जो स्वर्ग में है'' वह सर्वशक्तिमान, पवित्र, धर्मी, न्यायी, विश्वासयोग्य, दयालु, कृपालु, प्रेमी और अनन्त है। बाईबल भी हमें सिखाती है कि परमेश्वर हमारा पिता है, वह अपने बच्चों की रक्षा करता है, उनके लिए उपाय करता है और अपने बच्चों को अनुशासित करता है।

(1) स्वर्गीय पिता का प्रेम :

''प्रभु उन्हें दूर यह कहते हुए दिखाई दिये, मैने तुझसे सदा.......................... रखता आया हूँ। इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करूणा बनायें रखी है। (जिर्मयाह 31:3)

1. निम्न में से किस कारण से परमेश्वर ने आपको बचाया ?
   जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है वह इस से प्रकट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पायें। प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया पर इस में है, कि उसने हम से प्रेम किया, और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा ''परन्तु परमेश्वर जो दया का धनी है उसने उसे बड़े प्रेम के कारण जिससे उसने हम से प्रेम किया। (1 युहन्ना 9:10)
   (ब) हम अपराधों के कारण..................... हुए थे, तो हमें मसीह के साथ अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है (इफिसियों 2 : 4–5)।
2. परमेश्वर अपना प्रेम आप पर कैसे प्रगट करता है। कृपया उदाहरण सहित लिखिए :

(अ) ————————————————————————————

(ब) (1युहन्ना 3:1) ——————————————————————
————————————————————————————

1. लूका 15:11 – 24 में यीशू ने बताया कैसे पिता ने अपने पुत्र से प्रेम किया। क्या आप एक पिता और परमेश्वर में सम्बन्ध स्थापित कर सकते है ?
   ————————————————————————————
   ————————————————————————————
   ————————————————————————————
   ————————————————————————————
   ————————————————————————————
   ————————————————————————————

II. स्वर्गीय पिता की सुरक्षा

'' परन्तु प्रभु सच्चा है वह तुम्हें दृढ़ता../करेगा और उस दुष्ट से सुरक्षित रखेगा । (11 थिस्सलुनिकया 3 : 3)

1. भजन 34:7 में परमेशर क्या वायदा करता है ?
   ————————————————————————————
   ————————————————————————————

इस्राएली (2 राजा 6 : 15 – 18)

तीन मित्र (दानियल 3)

2. परमेश्वर आपको परीक्षा से कैसे बचाता है ?

_____

_____

(1 कुरिन्थियों 10:13)

III. परमेश्वर की उपलब्धताएं :–

'और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा (फिलिप्पियों 4:19)

1. परमेश्वर के बच्चों को क्यों चिन्ता नहीं करनी चाहिए ?(मत्ती 6: 31–32)

_____

_____

2. परमेश्वर ने ऐसा कौनसा उपहार अपने बच्चो को दिया है जो यह प्रदर्शित करता है कि वह हमारी जरूरत को पूरा करेगा? (रोमियो 8:32)

_____

_____

_____

_____

_____

IV. परमेश्वर का अनुशासन

''क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता हैं उसकी ..... भी करना है। जिसे पुत्र बना लेता हैं उसको कोडे भी लगाता है (इब्रानियों 12:6)

1. परमेश्वर अपने बच्चों से क्यों उम्मीद रखता है ? (इफिसियों 4:13)

_____

_____

2. परमेश्वर अपने बच्चों को कैसे अनुशासित करता है ?

_____

_____

अ. एक मित्र (नीति वचन 27:17) ?

_____

_____

ब. बाईबल (2 तिमुथियुस 3:16–17) ?

_____

_____

स. परीक्षायें (याकूब 1 : 2–4)

_____

_____

परमेश्वर का कौनसा रूप ज्यादा महत्वपूर्ण है ?

.....प्रेम और दया ..... आवश्यकताओं के लिए उपाय

..... अनुशासन .....सुरक्षा

अध्याय 6– अन्य लोगों में सुसमाचार बांटना

सच्चाई :– दूसरों को यीशु का अनुसरण करने के लिए अगुवाई करने में हम जिम्मेदार है।

वचन :– मत्ती 28:16 – 20 (महान आज्ञा)

याद करना:– मत्ती 28:19 – 20

भण्डारीपन :– क्या आपने बीते सप्ताह विश्वासियों के साथ मिलकर अराधना की? क्या आप प्रार्थना करने में और बाईबल पढ़ने में विश्वास योग्य रहे? क्या अपने अपनी गवाही या यीशु के समाचार को इस सप्ताह दूसरों को बांटा?

यह गद्यांश की घटना उस समय की है जब यीशु मृतकों में से जी उठा और जब वह स्वर्ग की ओर परमेश्वर के पास होने के लिए जा रहा था यह वचन उन अन्तिम वचनों में से है जो उसने अपने चेलों से कहा जब वह उनके साथ पृथ्वी पर था।

पढिएं मत्ती 28:16–20

(1) चेले कहाँ गये और क्यों? (वचन 16)

_____

_____

(2) जब उन्होनें यीशु को देखा तो उन्होनें क्या किया (वचन 17)

_____

_____

(3) आप क्या सोचते है कि कुछ लोगों ने उस पर सन्देह क्यों किया?

_____

_____

(4) यीशु ने अपने अधिकार के विषय में अपने अनुयायीयों से क्या कहा? (वचन 18)

_____

_____.

(5) यीशु ने अपने अनुयायीयों से क्या कहा कि वे कहां जाऐंगे और वे वहां पर क्या करेंगे? (वचन 19)

_____

_____

(6) उन्हें लोगों को क्या सिखाना था? (वचन 20)

_____

_____

(7) यीशु ने उससे कौनसा अन्तिम वायदा किया? (वचन 20)

_____

_____

(8) यहाँ पर जगत शब्द का इस्तेमाल भौगोलिक सीमाओं के लिए नहीं किया गया है बल्कि लोगों के समूहों के लिए किया गया है। ऐसी कौन–कौन सी जातियाँ आपके आस–पास हैं, जिन्हें परमेश्वर को जानने की आवश्यक है?

_____

_____

याद कीजिए :– मत्ती 28:19–20

''इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बाते जो मैने तुम्हें आज्ञा दी है मानना सिखाओ और देखों मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।''

मानों और करें:–

- अपनी गवाही लिखिए और उसको मिलकर अभ्यास कीजिए।
- उन लोगों का नाम लिखिए जिन्हें आप जानते है और जो विश्वासी नहीं है।
- 3–5 लोगों का झुण्ड बनाईये और अपनी गवाही उनके साथ बांटिये समर्पित कीजिए की आप उन्हें विश्वास में लाने के लिए सुसमाचार बांटेगे।

गहराई से अध्ययन :– अध्याय 6 अ– सुसमाचार फैलाना

अब आप एक मसीही हैं, परमेश्वर की सन्तान, और परमेश्वर के परिवार के एक सदस्य। अभी आपको आपके उद्धार की निश्चिन्तता हैं। अब आप स्वयं परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं और किसी भी समय संगति कर सकते हैं और उसकी उपासना में समय व्यतीत कर सकते हैं। अब आप उसकी कलिसिया धन्य लोगों, के एक सदस्य है। अब सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर ने आपको उसका सुसमाचार फैलाने में ओर अन्य लोगों को उसके मार्गों को मानने के लिए ताकि वे और अधिक लोगों को उद्धार का सुसमाचार सीखाने के लिए आगे बढ़ सकते हैं।

सुसमाचार प्रचार करने के लिए चार प्रकार की बुलाहट है।

1. **ऊपर से बुलाहट** :– ये यीशु की आज्ञा है (मरकुस 16:15)
   _____
   _____
2. **नीचे से या अधोलोक से बुलाहट** :– अमीर व्यक्ति का निवेदन, कि उसके परिवार को सुसमाचार सुनाया जाये (लूका 16:27–28)
   _____
   _____
3. **अन्दर से बुलाहट** :– पौलुस सुसमाचार प्रचार करने के लिए विवश था (1 कुरिन्थियों 9: 16–17)
   _____
   _____
4. **बाहर से बुलाहट** : पौलुस ने मकिदुनिया में बुलाहट को सुना कि आओ (प्रेरित 16:9)
   _____
   _____

आज हर एक मसीही को जीवन की बुलाहटों को सुनना चाहिए और तुरन्त प्रतिक्रिया दिखानी चाहिए हमें सिर्फ लोगों को मसीही बनने के लिए अगुवाई नहीं करनी बल्कि दूसरों के लिए एक सफल प्रशिक्षक बनाने के लिए अगुवाई करनी चाहिए। इस प्रकार से आप तेजी के साथ सुसमाचार फैला सकेंगे।

_____
_____

प्रत्येक मसीही का यह उद्देश्य है वह एक नया झुण्ड तैयार करें और वह अपने परिवार, दोस्तों, और पड़ौसियों से सुसमाचार बांट सके। परमेश्वर उसे बहुतायत से आशीष करेगा और उनके जीवन को इस्तेमाल करेगा। (प्रेरित 2:46–47)

_____
_____

आपको तुरन्त परमेश्वर की ओर प्रतिक्रया दिखानी चाहिए मसीह की देह के लिए प्रार्थना करनी और आपका जीवन एक आशीष बन जायेगा जब आप की :– (1) कई लोगों को यीशु पर विश्वास करने के लिए आगुवाई करने के द्वारा (2) एक नई कलिसिया (अपने घर या किसी और स्थान में) शुरू करने के द्वारा।

सी.पी.एम. - एक प्रशिक्षक का निर्माण करें

1. बाइबिल का आधार
2. प्रशिक्षक बनने की तैयारी
3. सी.पी.एम. को समझना
4. एक मसीही क्यों आनन्दित अथवा विशेष होने का अनुभव नहीं करता है?
5. उद्धार पाने की व्यक्तिगत गवाहियां
6. एक सूची बनाएं जिसमें अपने उन सभी सम्बन्धियों का नाम लिखें जिनका उद्धार नहीं हुआ है
7. सुसमाचार सुनाने में प्रयोग होने वाली सामग्री (आरम्भिक विश्वास के 6 मूल पाठ)
8. दर्शन के अन्त को निर्धारित करें (सुसमाचार प्रचार अगुवे तैयार करना)
9. अपना प्रेरितों के काम अध्याय 29 बनाना

सी.पी.एम. - एक प्रशिक्षक का निर्माण कैसे करें

एक बार हम सी.पी.एम. की शैली और तरीका समझ जाते हैं, हमें प्रशिक्षण का अपना काम तुरन्त आरम्भ कर देना चाहिए, जिसके फलस्वरूप हम जिससे भी मिलेंगे वह ''प्रशिक्षक'' में परिवर्तित हो जाएगा। हम अगुवे का प्रशिक्षण नहीं कर रहे हैं, न ही हम चेले बना रहे हैं, हम केवल दूसरों को ''प्रशिक्षक'' होने के लिये प्रशिक्षण दे रहे हैं। यह 2 तीमुथियुस 2:2 के समान है जहां पौलुस तीमुथियुस से कहता है, ''और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।''

सी.पी.एम. - एक प्रशिक्षक का निर्माण करें

(1) बाइबिल का आधार

(*) परमेश्वर ने हमें बुलाया है सुसमाचार सुनाने के लिये

- सुसमाचार सुनाने की चार विभिन्न बुलाहट
- संसार में हम कम से कम चार विभिन्न बुलाहट सुन सकते हैं जो हमें सुसमाचार सुनाने को कहती है -

(क) स्वर्ग से आयी बुलाहट- यह यीशु का निवेदन है ''और उसने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो''- मरकुस 16:15

''तब मैंने प्रभु का यह वचन सुना, मैं किसी को भेजूं, और हमारी ओर से कौन जाएगा?'' - यशायाह 6:8

प्रभु हमें केवल सुसमाचार सुनाने को ही नहीं कहते हैं, परन्तु यशायाह के अनुसार स्वर्ग की बुलाहट भी सुसमाचार सुनाने के लिये है।

(ख) नरक से आयी बुलाहट- नरक में दुख उठाने वाली आत्माओं की बुलाहट -

जब वह धनी व्यक्ति और लाजर मर गये तो धनी व्यक्ति नरक में चला गया और लाजर इब्राहीम की ओर चला गया उस धनी व्यक्ति ने इब्राहीम से कहा, ''हे पिता मैं तुझसे विनती करता हूं कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज, क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं'' - लूका

16:27-28

क्या हम दुख उठाने वालों की बुलाहट को सुन रहे हैं जो नरक से आ रही है?

(ग) अन्दर से आयी बुलाहट - यह बुलाहट प्रत्येक जन के अन्दर से आती है।

जब पौलुस मसीह पर विश्वास करने लगा, उसने अपने अन्दर एक बुलाहट सुनी जो उससे बल पूर्वक कह रही थी कि वह बाहर जाकर सुसमाचार फैलाए ।

उसने कहा ''और यदि मैं सुसमाचार सुनाऊं, तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं ; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है ; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाय । क्योंकि यदि अपनी इच्छा से करता हूं, तो मजदूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता, तौभी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है''। कुरिन्थियों 9:16-17

हम सबको पौलुस के समान होना चाहिए- जब हम मसीह को जान गये हैं तो हमें अन्दर की बुलाहट सुनना चाहिए कि औरों को सुसमाचार सुनाएं।

(घ) बाहर से आयी बुलाहट - मकिदुनिया से आयी बुलाहट

''और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ, उससे विनती कर के कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ ; और हमारी सहायता कर।'' प्रेरितों के काम । 6:9 एक बार पौलुस को बाहर से बुलाहट हुई, उस ने सुसमाचार एशिया से यूरोप लाया और हम देखते हैं कि सुसमाचार यूरोप से उत्तरी अमेरिका और फिर सारे संसार में फैल गया।

अतः हम सभी को योग्य होना चाहिये कि इन चार बुलाहटों सुन सकें कि सुसमाचार का फैलाव हो।

(*) स्वर्गीय पिता की इच्छा समझना

- परमेश्वर आप को और आप के द्वारा आप के परिवार को उद्धार देना चाहता है।

(क) परमेश्वर को नूह की चिन्ता थी और उसके द्वारा उसके सम्पूर्ण परिवार को बचाया (उत्पत्ति 7:1)- प्रभु चाहता था कि नूह एक जहाज बनाए और सबको चेतावनी दे कि बचने का एकमात्र तरीका उस जहाज पर चढ़जाने से है। हालांकि, 120 वर्षों की नूह की चेतावनी में उस पर एक व्यक्ति ने भी विश्वास नहीं किया। इन सबके बावजूद उसकी पत्नी, पुत्रों ने और उनकी पत्नियों ने उसके वचनों पर विश्वास किया और बचा लिये गये।

(ख) परमेश्वर को लूत की चिन्ता थी और उसके द्वारा उसके परिवार को बचाया (उत्पत्ति 19:12-23) - जब परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को नाश करने की सोची, उसने लूत और उसके परिवार को इब्राहीम के कारण बचाया। दुखद है कि उसकी बहुओं ने उसकी नहीं सुनी और वे बचाई नहीं गयीं (लूत की अच्छी गवाही नहीं होने के कारण ऐसे आकस्मिक समय में वह अपने परिवार को नहीं बचा सका)। अन्त में केवल लूत और उसकी दो बेटियां बचीं, परन्तु यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी क्योंकि परमेश्वर ने पूरे परिवार को बचाने की योजना बनाई थी।

(ग) परमेश्वर को रहाब की चिन्ता थी और उसके द्वारा उसके पूरे परिवार को बचाया (यहोशू 2:17-20) - रहाब ने एस्ताएल से आए दो भेदियों को सुरक्षा दी और उनसे निवेदन किया कि जब यारीहो इस्राल का आक्रमण हो तो वे उसके परिवार की रक्षा करें।

(घ) परमेश्वर को दुष्टात्मा-ग्रस्त गिरासेनी मनुष्य की चिन्ता थी और उसके द्वारा पूरे परिवार को बचाया (मरकुस 5:12-

20)। जब दुष्टात्माएं इस व्यक्ति को छोड़कर चली गयीं तो उसने यीशु से कहा कि उसके पीछे आने दे परन्तु यीशु चाहता था कि वह अपने पूरे परिवार को सुसमाचार के बारे में बताए। इस तरह सारा परिवार बचाया गया।

(ङ) परमेश्वर को कुरनेलियुस की चिन्ता थी और उसके द्वारा उसके सारे परिवार को बचाया (प्रेरितों के काम 10:23-25) - जब कुरनेलियुस ने पतरस को बुलाया था तो उसने अपने सभी सम्बंधियों तथा मित्रों को आमंत्रित किया था अतः जब पतरस आकर बोला तो उसका पूरा घराना उद्धार पाया।

(च) परमेश्वर को लुदिया की चिन्ता थी और उसके द्वारा उसके पूरे परिवार को बचाया (प्रेरितों के काम 16:14-15)। जब लुदिया का उद्धार हुआ, ठीक उसी के बाद मसीह के पास आने में अपने पूरे परिवार की अगुवाई की।

(छ) परमेश्वर को फिलिप्पी के जेल के दरोगा की चिन्ता थी और उसके द्वारा उसके पूरे परिवार को बचाया (प्रेरितों के काम 16:31) जब दारोगा ने परमेश्वर को जाना, वह तुरन्तु पौलुस और सीलास को उसी रात अपने घर ले गया ताकि उसका पूरा परिवार उद्धार पाए।

(ज) परमेश्वर को आपकी चिन्ता है और वह आप के द्वारा आपके पूरे परिवार को बचाना चाहता है।

(2) प्रशिक्षक बनने की तैयारी

* एक विश्वासयोग्य जीवन का निर्माण करें
* परमेश्वर को अपने जीवन को समर्पित करें
* परमेश्वर के सैनिक बनें
* पवित्र आत्मा की सुरक्षा और सामर्थ पाएं
* आपका जीवन स्तुति और आराधना से भरा हो
* प्रार्थना से भरा हुआ एक जीवन

(क) उनको सिखाएं कि जीवन प्रार्थना से भरा हो

प्रार्थना करना परमेश्वर की सेवा करने की मुख्य कुंजी है। साथ ही सेवा करने वाले के लिये यह सामर्थ का मुख्य स्त्रोत है

(ख) यीशु के लहु पर आश्रित रहना उन्हें सिखाएं

एक प्रशिक्षक को प्रति दिन यीशु के लहु की सुरक्षा ढूंढ़ना चाहिए। उसे प्रार्थना करना चाहिए कि यीशु का लहु उसके रास्ते और सिर को ढंके और उसके लिये चारों ओर सुरक्षा की दीवार बनाए

(ग) परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लेना उन्हें सिखाएं

परमेश्वर के योद्धाओं को प्रतिदिन अपने हथियार बान्धने चाहिए। यह हथियार केवल एक बार पहिनने के लिये नहीं है परन्तु इसे प्रतिदिन पहिनना चाहिए ताकि दुष्ट के प्रत्येक आक्रमण और योजना को पराजित किया जा सके।

(घ) पवित्र आत्मा के अभिषेक के तेल को खोजना उन्हें सिखाएं पवित्र आत्मा के सामर्थ को प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करें और उस पर निर्भर रहें ताकि आत्मा के वरदान जैसे शिक्षा देना, प्रचार करना, चंगाई, आनन्द, स्तुति और सुसमाचार प्रचार करने का वरदान प्राप्त हो।

(ङ) हर परिस्थिति में स्तुति से भरपूर जीवन होने की शिक्षा दें

प्रत्येक प्रशिक्षक को हर परिस्थिति में धन्यवाद देने के महत्व को समझना चाहिए। समस्याओं का सामना करने पर, अच्छा या बुरा अनुभव होने पर, सफल हों या नहीं - हर परिस्थिति में परमेश्वर की स्तुति करना चाहिए क्योंकि स्तुति करना परमेश्वर के अधिकार का आदर करना है।

(च) कृतज्ञ और आभारी होना उन्हें सिखाएं

प्रत्येक परिस्थिति को हर समय सकारात्मक ढंग से देखना चाहिए और प्रशिक्षुओं को प्रोत्साहन देना चाहिए क्योंकि एक सकारात्मक शब्द उनके विश्वास और साहस का आधार हो सकता है।

(3) सी.पी.एम. को समझना

* समय समाप्त हो रहा है क्योंकि यीशु का आगमन निकट है अतः हमें ससमाचार प्रचार करने के लिये प्रशिक्षकों को तैयार करने का सबसे प्रभावशाली और तेज रास्ता प्रयोग करना चाहिए।

* अक्सर कलीसिया 4 भिन्न प्रकार की होती है :

(क) रीति के अनुसार कलीसिया -

- प्रत्येक वर्ष कम से कम एक सुसमाचारीय सभा होती है

- वे आशा करते हैं कि प्रत्येक सदस्य कम से कम प्रति वर्ष एक व्यक्ति को मसीह के पास लाएगा ताकि कलीसिया एक वर्ष में दो गुनी हो जाय, परन्तु साल के अन्त में संख्या अधिक बदल नहीं पाती है।

- मसीहों के लिए दूसरों को कलीसिया में आमंत्रित करना कठिन होता है और यदि कुछ लोग आएं तो हो सकता है कि वे प्रभु पर विश्वास न करें।

- मसीही स्वयं बहुत कम सुसमाचार प्रचार करते हैं, वे अपने पासबान पर आश्रित रहते हैं।

(ख) छोटे समूह की कलीसिया -

- एक कलीसिया को छोटे समूहों में बांटा जाता है जिनमें 10 सदस्य होते हैं। प्रत्येक सप्ताह किसी कलीसिया सदस्य के घर संगति होगी जिनमें दूसरे सम्बन्धी या मित्रों को आमंत्रित किया जाता है।

- ऐसी आशा की जाती है कि 6 महीनों में उनका आकार बढ़जाएगा और वे दो समूहों में बंट जाएंगे। यदि ऐसा नहीं होता है तो इसका अर्थ है कि इस छोटे समूह में कोई समस्या है। इस परिस्थिति में इस समूह को खत्म कर अन्य लोगों को साथ मिलाकर दूसरे समूहों का गठन कर पुनः प्रक्रिया दुहराएं।

- आशा करें कि हर 6 महीनों में कलीसिया दोगुनी हो जाएगी।

- किसी मित्र या सम्बन्धी को घर आमंत्रित करना उन्हें कलीसिया में आमंत्रित करने से आसान होता है।

- कभी-कभी ऐसा होता है कि एक वर्ष बाद भी छोटे समूह बढ़ते नहीं हैं।

(ग) जी-12-कलीसिया -

- आशा करना कि प्रत्येक सदस्य 12 अन्य लोगों को मसीह के पास लाएगा।

- इन 12 लोगों को परिपक्व मसीही होने के लिये प्रशिक्षित करना चाहिए

- आशा करना कि प्रत्येक वर्ष कलीसिया 12 गुणा बढ़जाएगी।

- शिक्षा देने की पद्धती में भी अनेक समस्याएं होती हैं।

(घ) सी.पी.एम. कलीसिया -

- प्रत्येक सदस्य को प्रशिक्षक के रूप में प्रशिक्षित किया जाता है

- प्रत्येक सदस्य को हर सप्ताह 5 गैर मसीही मित्रों को लाने के लिये प्रशिक्षित किया जाता है, उन्हें अपने घर आमंत्रित करें और अपनी गवाही दें और उन्हें सुसमाचार दें।

- हम अपने सदस्यों को सिखाते हैं कि वे अपनी व्यक्तिगत गवाही लिखें और उसे 10 बार ऊंचे स्वर में पढ़ें और याद करें।

- गैर मसीही परिवारिक सदस्यों, सम्बन्धियों, मित्रों, पड़ोसियों, सहपाठियों और सहकर्मियों की एक सूची तैयार करें। अधिकतर समय अधिकतर लोगों के पास 100 लोगों की सूची होती है। फिर उन्हें 5 लोगों को सुसमाचार सुनाने के लिये चुनाव करना होता है और समूह क का नाम देना होता है। तब इसी तरह दूसरे 5 लोगों को चुनकर समूह ख बनाकर आगे बढ़ें।

- उन्हें आरम्भिक विश्वास के 6 मूल पाठों में से पहला सिखाएं और उसमें सम्मिलित पदों तथा उदाहरणों को लिखें

- उन्हें 3-3 के समूहों में एक दूसरे को सिखाने के उद्देश्य से बांट देंगे जब तक वे पाठ को अच्छी तरह न सीख लें। इस पाठ का प्रथम वाक्य होना चाहिए ''बधाई हो, आप प्रभु के परिवार में वापस आ गये हैं और पुनः परमेश्वर की सन्तान बन गये हैं - यह एक बहुत महत्वपूर्ण सकारात्मक वचन है क्योंकि हम सब एक समय में परमेश्वर की सन्तान थे परन्तु हम ने उसे छोड़ दिया और खो गये परन्तु हम पुनः वापस आ गये हैं।

- इस सप्ताह के बाद जब वे लौटेंगे वे समूह क के 5 लोगों से मिलकर गवाही देंगे और 6 मूल पाठों में से प्रथम की शिक्षा देंगे।

- प्रभु में विश्वास करने के लिये जब वे इन लोगों को गवाही दे चुके तो उन्हें भी यही काम करना है अर्थात गैर-मसीही लोगों की सूची बनाकर उन्हें 6 मूल पाठों में से प्रथम पाठ की शिक्षा दें।

- एक सप्ताह के बाद प्रथम समूह के लोग लौटकर दूसरा पाठ सीखेंगे और सीखने के बाद वे लौटकर अगली पीढ़ी को यही पाठ सिखाएंगे।

(4) एक मसीही क्यों आनन्दित अथवा विशेष होने का अनुभव नहीं करता है?

* वे किसी को सुसमाचार नहीं सुनाएं हैं और काम न करने के कारण आनन्द नहीं होता है और आनन्द का फल भी नहीं होता है।
* यदि सुसमाचार अगले व्यक्ति तक पहुंचाया जाएगा तो वह मसीही आनन्दित होगा
* यदि एक छोटा समूह आरम्भहो जाय तो संतुष्टी होगी
* यदि एक प्रशिक्षु प्रशिक्षक बन जाय तो वह प्रशिक्षक मसीही जीवन का आनन्द लेने लगेगा
** उदाहरण दिया जा सकता है कि माता पिता चाहेंगे कि उनके बच्चों का विवाह हो और वे भी बच्चे पैदा करें ताकि ये लोग दादा-दादी बनने के सुख का आनन्द ले सकें।

(5) उद्धार पाने की व्यक्तिगत गवाहियां

* वे सुसमाचार सुनाना नहीं जानते हैं

- उनकी मदद करें कि वे अपने उद्धार की गवाही लिख सकें और उनसे अनुरोध करें कि 5 से 10 बार उन्हें ऊंची आवाज में पढ़ें

- आरम्भिक विश्वास के 6 मूल पाठों में से पहले को उन्हें सिखाएं- उन्हें कहें कि उस पाठ के सभी पदों को लिख लें, उदाहरणों के साथ - उन्हें 3-3 लोगों के समूहों में बांटा जाएगा ताकि वे एक दूसरे का अभ्यास कराएं जब तक पाठ से अच्छी तरह परिचित न हो लें।

(6) एक सूची बनाएं जिसमें अपने उन सभी सम्बन्धियों का नाम लिखें जिनका उद्धार नहीं हुआ है।

* मसीही सुसमाचार प्रचार क्यों नहीं करते हैं?

- वे जानते नहीं हैं कि सुसमाचार किसे सुनाएं

- उनकी सहायता करें कि वे अपने परिवार के सभी सदस्यों, सम्बन्धियों, पड़ोसियों, सहकर्मियों और सहपाठियों की सूची तैयार करें जो मसीह को नहीं जानते हैं।

(7) सुसमाचार सुनाने में प्रयोग होने वाली सामग्री

(आरम्भिक विश्वास के छः मूल पाठ)

(8) दर्शन के अन्त को निर्धारित करें (सुसमाचार प्रचार अगुवे तैयार करना)

* हमारा लक्ष्य

- प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करना, प्रतिवर्ष एक लक्ष्य निर्धारित करना

- कलीसियाएं स्थापित करना और फिर स्थापित की जाने वाली कलीसियाओं की गिनती निर्धारित करना, इनमें एक बार आप स्थापित करें फिर आपके प्रशिक्षक स्थापित करें।

- गैर विश्वासी जिन्हें मसीह में लाना है, की गिनती निर्धारित करना

(बहुत महत्वपूर्ण है कि सभी नये विश्वासी प्रशिक्षक बनें। इनमें कई लोग वापस फिर जाएंगे और असफलता का सामना भी करना पड़ सकता है ; फिर भी यदि 20-30% नये विश्वासी प्रशिक्षक बन जायं तो प्रतिफल आश्चर्यजन हो सकता है)

(क) एक लक्ष्य क्या है?

- यह एक बहुत स्पष्ट गिनती या विचार है। दौड़ का उदाहरण लें। आप क्यूं दौड़ते हैं? क्या यह देखने के लिए कि आप कितने समय तक दौड़ सकते हैं या कितनी दूरी तक दौड़ सकते हैं? नहीं ! दौड़ने के पीछे अच्छा स्वास्थ्य रखना आपका मुख्य कारण है। इसे लक्ष्य के रूप में समझा जा सकता है।

दौड़ का आपका समय अथवा दौड़ की दूरी आप का लक्ष्य तक पहुंचने के चरण मात्र हैं।

(ख) लक्ष्य क्षेत्र कितना बड़ा है?

- आपको अपने काम का क्षेत्र पहले ढूंढना है और उस क्षेत्र में वह बिन्दु तलाशना है जहां से आप काम शुरू करेंगे

(ग) अपने दर्शन को सीमित न करें

- आपका दर्शन और विश्वास बड़ा होना चाहिए

(घ) आपको अनेक उप-लक्ष्य निर्धारित करना चाहिये

- उप-लक्ष्य आपके लक्ष्य के अन्दर ही होना चाहिये जिन्हें आसानी से किया जा सके। ये उप-लक्ष्य उस बड़े लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होना चाहिए।

(ङ) आपको देखना होगा कि प्रत्येक चरण सम्भव है

- प्रतेयक चरण प्रभावशाली और करने योग्य होना चाहिए आरम्भ करने के पहले चरण से लेकर।

(9) अपना प्रेरितों का काम अध्याय 29 बनाएं

* जब लक्ष्य निर्धारित हो गया है तो आपके पास दर्शन होना चाहिए। इस स्थान पर आपको प्रार्थना करना और सेवा के लिए मार्ग के बारे में आपको सोचना चाहिए। इसमें यह जानना जरूरी है कि आप कहां से शुरू करेंगे, सामने आने वाली कठिनाइयां, क्या आपका हाथ बटाने के लिये सहकर्मी होंगे, पवित्र आत्मा आपके लिए क्या मार्ग खोलेगा और सुसमाचार प्रसारित करने के लिये आप क्या तरीका अपनाएंगे।
* आपका विश्वास कैसा है, यह निर्धारित करेगा कि प्रतिफल कैसा होगा।
* परमेश्वर का काम आप जितने दिनों तक करेंगे उतने दिनों तक यीशु का अनुग्रह और पवित्र आत्मा की महान सामर्थ आपके साथ होगी।

याद रखें, यीशु का अनुग्रह और पवित्र आत्मा की सामर्थ आपके सम्पूर्ण जीवन के लिए पर्याप्त है।